 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमति ज्ञान

आश्विन-कार्तिक, संवत् नानकशाही ५४४
वर्ष ६ अंक २ अक्तूबर **2012**

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए, एम. एस. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

ते साधू हरि मेलहु सुआमी जिन जपिआ गति होइ हमारी ॥
तिन का दरसु देखि मनु बिगसै खिनु खिनु तिन कउ हउ बलिहारी ॥१॥
हरि हिरदै जपि नामु मुरारी ॥
क्रिपा क्रिपा करि जगत पित सुआमी हम दासनि दास कीजै पनिहारी ॥१॥रहाउ॥
तिन मति ऊतम तिन पति ऊतम जिन हिरदै वसिआ बनवारी ॥
तिन की सेवा लाइ हरि सुआमी तिन सिमरत गति होइ हमारी ॥२॥
जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते हरि दरगह काढे मारी ॥
ते नर निंदक सोभ न पावहि तिन नक काटे सिरजनहारी ॥३॥
हरि आपि बुलावै आपे बोलै हरि आपि निरंजनु निरंकारु निराहारी ॥
हरि जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलसी जन नानक किआ एहि जंत विचारी ॥४॥ (पन्ना ११३५)

भैरउ राग में उच्चारण किए उपरोक्त शबद में चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी प्रभु के आगे विनती करते हुए फरमान करते हैं कि हे प्रभु! मुझे उन गुरमुखों (साधु) की संगत दो जिनका संग करने से, जिन्हें याद करने से मेरी उच्च आत्मिक अवस्था बन जाए, मेरी गति हो जाए। ऐसे महान पुरुषों का दर्शन करके मेरा मन सदा खिला रहे और उन पर से मैं क्षण-क्षण बलिहार जाऊं, कुर्बान जाऊं। हे प्रभु! मेरे हृदय में अपना नाम बसा दो। मैं आपके नाम का हर समय सिमरन करता रहूं। आप मुझ पर कृपा करो; मुझे अपने दासों का दास बना लो; मुझे अपने दासों का पानी ढोने वाला बना लो।

'रहाउ' के बाद गुरु जी फरमान करते हैं कि उन महान मनुष्यों की मति श्रेष्ठ हो जाती है, उन्हें लोक-परलोक में सम्मान मिलता है अर्थात् जिनके हृदय में परमात्मा बस जाए, जिन्हें हृदय-घर में परमात्मा के बसे होने का आभास हो जाए। गुरु जी पुन: विनती रूप में फरमान करते हैं कि हे प्रभु! मुझे उन (गुरमुखों) की सेवा में लगाए रखो, जिन्हें याद करते हुए मुझे उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाए। जो मनुष्य ऐसा साधु (गुरमुख) नहीं प्राप्त कर पाए अर्थात् जिन्होंने पूर्ण गुरु को पाने के लिए यत्न नहीं किए, उनको प्रभु-दरगाह में से धक्के मार कर बाहर कर दिया जाता है। पूर्ण गुरु को न पा लेने वाले निंदक मनुष्य कहीं भी शोभा नहीं पाते। उस सृजनहार प्रभु ने उनका नाक काट दिया हुआ है अर्थात् उन्हें दुत्कार दिया है। जो परमात्मा माया के प्रभाव से निर्लिप्त है, जिस परमात्मा का कोई विशेष स्वरूप नहीं बताया जा सकता, जिस परमात्मा को किसी आहार की जरूरत नहीं, वो परमात्मा खुद ही सब जीवों को बोलने की प्रेरणा करता है, वो खुद ही सब जीवों में बोलता है। अंतिम पंक्ति में गुरु जी का फरमान है कि हे प्रभु! जिन जीवों को तुम अपने साथ मिलाते हो वही तुम्हें मिल सकते हैं, अन्यथा इन जीवों के वश की बात नहीं अर्थात् जिन पर आपकी कृपा होती है वही आपको पाने में सफल हो सकते हैं। 



गुरु-घर के अद्वितीय सिक्ख सेवक बाबा बुड्ढा जी

गुरु एवं सिक्ख का आपसी सम्बंध बहुत गहरा है। गुरु अकाल पुरख की ज्योति है। यह ज्योति इंसान में व्याप्त किंतु सोई अध्यात्म संवेदना को अपने दैवी स्पर्श से जगाकर इस संसार में विचरते हुए उस परमात्मा से मिलाप करवाती है। गुरु और शिष्य, मुरशिद एवं मुरीद आदि योग-धारणायें बेशक विश्व के विभिन्न मतों में भी मिलती हैं परंतु गुरु तथा सिक्ख का जो सच्चा-सुच्चा तथा गहरा परस्पर सम्बंध सिक्ख धर्म में है वह अपनी उदाहरण खुद है। इस सम्बंध को सिक्ख इतिहास में हुए कुछ सिक्खों ने गहरा एवं सर्वदा बनाने हेतु खास योगदान डाला है। ऐसे सिक्खों में बाबा बुड्ढा जी का नाम सिक्ख इतिहास के पन्नों पर सुनहरी अक्षरों से अंकित है।

बाबा बुड्ढा जी बाल्यावस्था से ही गुरु-घर की सेवा को ऐसे समर्पित हुए कि कुल आयु ही सेवा के लेखे लगा गये। आप जी श्री गुरु नानक साहिब के दर्शन-दीदार करते ही गुरु-घर के साथ इस प्रकार जुड़े कि फिर कभी जुदा न हुए। बाबा बुड्ढा जी सिक्ख इतिहास के कठिन समय में गुरु से बिछुड़ी सिक्ख संगत को गुरु से मिलाप कराने के लिए एक कड़ी का कार्य करते रहे। "बुड्ढिआ! तैथों ओहले न होसां" का गुरु-फरमान सदैव बरतता रहा। बाबा बुड्ढा जी ने गुरु साहिबान तथा सिक्ख संगत की सेवा में जो सेवायें हाज़िर कीं वे दुर्लभ तथा बेमिसाल हैं।

बाबा बुड्ढा जी का जीवन समूह सिक्ख संगत के लिए गुरु-घर की निष्काम सेवा से जुड़े रहने के लिए एक सदैवकालीन प्रेरणा-स्रोत है। बाबा जी ने एक सम्पन्न घराने में जन्म लेकर अपने आप को सदा ही एक अदना-सा सिक्ख सेवक समझा; कभी भी जमीन, जायदाद, धन-दौलत का रंचक-मात्र अहंकार अपने पास नहीं फटकने दिया। 'बूड़ा' नामक बालक गुरु नानक पातशाह के दर्शन-दीदार करने के समय, गुरु जी से भेंट-वार्ता के समय जो बातें करता है, गुरु जी उन बातों को सुनकर प्रसन्न होकर उस बाल को 'बुड्ढा' का सम्मानजनक रुतबा बख़्श देते हैं। गुरु नानक पातशाह द्वारा कृपा के घर में आकर बख़्शा यह रुतबा उसी रोज़ से आपको हासिल है। यह रुतबा युगो-युग अटल है।

बाबा जी की यह इच्छा थी कि सारी ज़िंदगी इस रूप में गुरु-घर की सेवा को समर्पित हो सकती थी कि गृहस्थ धर्म न अपनाया जाये, लेकिन गुरु-हुक्म अथवा गुरमति जीवन-युक्ति का सत्कार करते हुए, उसको सर-आंखों पर लेते हुए आप गृहस्थ धर्म के धारक बने। आप

जी का समूचा परिवार ही गुरु-घर को समर्पित हुआ। पारिवारिक फर्ज़ों और गुरु-घर की सेवा के आदर्श संतुलन की बाबा बुड्‌ढा जी द्वारा प्रस्तुत उदाहरण गुरु-घर की सेवा को निभाने के लिए एक प्रकाश-स्तंभ है।

बाबा बुड्‌ढा जी को अमृत सर (सरोवर), श्री हरिमंदर साहिब, श्री अकाल तख़्त साहिब के निर्माण की सेवा खुद अपने हाथों से करने तथा सिक्ख संगत से करवाने का गौरव हासिल है। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की परिक्रमा में स्थित बेर बाबा बुड्‌ढा जी परम पावन पवित्र केंद्रीय गुरुधाम की करवाई गई तथा की गई सेवा की निशानी के तौर पर आज भी मौजूद है। श्री हरिमंदर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम प्रकाश के शुभ अवसर पर बाबा बुड्‌ढा जी के शीश पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन आदि स्वरूप को सुशोभित किया गया जिस पर पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने कर-कमलों से चंवर किया। बाबा बुड्‌ढा जी को पावन स्वरूप का पवित्र पाठ संगत को श्रवण करवाने की महान सेवा श्री हरिमंदर साहिब के सर्वप्रथम ग्रंथी साहिब के रूप में हासिल हुई।

बाबा बुड्‌ढा जी ऐसे सौभाग्यशाली गुरसिक्ख हैं जिनको छः गुरु साहिबान ने अपनी आंखों से प्रत्यक्ष दर्शन-दीदार करने, निजी सेवक के रूप में अंग-संग विचरने तथा वचन-बिलास श्रवण करने तथा गुरु-हुक्मों को कमाने का सौभाग्य हासिल हुआ। बाबा जी को श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को गुरगद्दी पर विराजमान करने की रस्म को निभाने का गौरव भी प्राप्त हुआ। गुरु-इतिहास या सिक्ख इतिहास में से यह दुर्लभ गौरव मात्र बाबा बुड्‌ढा जी को ही प्राप्त है। बाबा जी ने प्रिथी चंद द्वारा गुरु-घर को पहुंचाई जा रही क्षति को एक मज़बूत किले की तरह डटकर रोका तथा सिक्ख संगत को गुरु और गुरबाणी की मूल धारा से जोड़े रखा। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की समूची सिखलाई की सेवा आप जी को ही मिली। बाबा जी ने अपनी अंतिम सांस भी गुरु-गोद में ली।

बाबा बुड्‌ढा जी के जीवन से प्रेरणा लेते हुए हमें उनके द्वारा बताये गए पथ पर चलने एवं निष्काम सेवा करने का प्रण लेना चाहिए।



श्री गुरु रामदास जी का जीवन तथा उपदेश

*-डॉ परमजीत कौर**

विनम्रता के पुंज, सेवा की मिसाल, सांझीवालता के प्रेरक, *"जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा"* के आदर्श को दृढ़ करवाने वाले श्री गुरु रामदास जी का जीवन तथा बाणी अज्ञानता के अंधकारपूर्ण मार्ग पर अग्रसर हुई मानवता के लिए प्रकाश-स्तंभ है।

श्री गुरु रामदास जी का आगमन चूना मंडी, लाहौर में २५ आश्विन, संवत् १५९१ (२४ सितंबर, १५३४ ई) को हुआ। आपके पिता का नाम श्री हरिदास जी तथा माता का नाम श्रीमती दया कौर था। आपके आगमन के समय पहले तीन गुरु साहिबान शारीरिक रूप में विद्यमान थे, परंतु मिलाप अभी श्री गुरु नानक देव जी तथा भाई लहिणा जी (श्री गुरु अंगद देव जी) का ही हुआ था। भाई लहिणा जी को श्री गुरु नानक देव जी की सेवा में गये दो वर्ष हो चुके थे।

ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण श्री (गुरु) रामदास जी को 'जेठा' कहा जाने लगा। बहुत छोटी आयु में ही आपकी माता जी का ममतामयी हाथ आपके सिर पर न रहा। सात वर्ष के हुए तो पिता जी का भी परलोक गमन हो गया। आपकी नानी आपको गांव बासरके ले आई। निर्धनता के कारण आप जी ने छोटी आयु में ही 'घुंघनियां' (उबले चने) बेचने शुरू कर दिये। पांच वर्ष बासरके में ही रोजगार करते रहे। जब श्री गुरु अंगद देव जी की आज्ञा से श्री (गुरु) अमरदास जी ने गोइंदवाल साहिब बसाया तो आप अपनी नानी सहित गोइंदवाल साहिब आ गए। उस समय आपकी आयु १२ वर्ष थी। आप जी गोइंदवाल साहिब की गलियों, बाज़ारों में घुंघनियां बेचते तथा संगत में जाकर सेवा भी करते। श्री गुरु अंगद देव जी के परम ज्योति में विलीन हो जाने के बाद श्री गुरु अमरदास जी गोइंदवाल साहिब में ही बस गये। श्री गुरु अमरदास जी भाई जेठा जी से बहुत प्रभावित हो चुके थे, इसलिए जब गुरु-महिल माता राम कौर जी ने श्री गुरु अमरदास जी से कहा कि बीबी भानी जी के लिए वर इस नौजवान जैसा होना चाहिए तो गुरु जी ने कहा कि इस नौजवान जैसा तो यही है अर्थात् इसके जैसा कोई अन्य नहीं। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-पद पर सुशोभित होने के एक वर्ष बाद अपनी सपुत्री बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी के साथ कर दिया। उस समय आपकी आयु १९ वर्ष के लगभग थी। आप जी तन-मन से गुरु-घर तथा साधसंगत की सेवा में जुट गये।

आप जी अपनी सूझबूझ, तीव्र बुद्धि, विनम्र स्वभाव तथा मधुर बाणी से सबको प्रभावित कर लेते थे। श्री गुरु अमरदास जी द्वारा स्थापित लंगर-प्रथा की शोभा से परेशान तथा जाति का अभिमान करने वालों द्वारा भड़काये गये लोगों ने श्री गुरु अमरदास जी के विरुद्ध अकबर बादशाह से शिकायत की तथा गुरु जी पर कई दोष भी लगाये। बादशाह अकबर ने सफाई पेश करने के लिए सतिगुरु जी को बुलाया। श्री गुरु

**६२०, गली नं १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा), फोन: ०१७३२-२२४९८८*

अमरदास जी ने गुरु-घर की वकालत करने के लिये अपने स्थान पर भाई जेठा जी को भेजा। आप जी ने गुरु-घर के आदर्शों को इस तरह स्पष्ट किया कि अकबर भी प्रभावित हुए बिना न रह सका। आप जी ने विनम्रता सहित बादशाह को प्रेरित किया कि तीर्थों पर दर्शनार्थ जाने वाले यात्रियों से अधिक कर न लिया जाए।

बाउली साहिब की सेवा प्रारंभ होने पर आप जी बढ़-चढ़ कर सेवा में भाग लेते रहे। एक दिन लाहौर से आये आपकी बिरादरी वालों ने आपको सिर पर मिट्टी की टोकरी उठाकर आते हुए देखा। वे क्रोधित होकर श्री गुरु अमरदास जी के पास गए तथा सारा आदर-सत्कार भूलकर कठोर वचन बोलने लगे। अपने गुरु पातशाह का निरादर होता देखकर भाई जेठा जी जवानी के जोश में नहीं आये; समुद्र जैसे गंभीर, शांत व्यक्तित्व को प्रकट करते हुए सतिगुरु जी के चरणों में गिरकर क्षमा मांगने लगे तथा दुर्वचन बोलने वाले शरीक भाइयों के लिए कृपा की याचना करने लगे।

श्री गुरु अमरदास जी की आज्ञा से बार-बार बिना किसी सवाल-जवाब के 'थड़े' को गिराकर तथा बनाकर आप जी ने गुरु के प्रति श्रद्धा-प्यार बनाए रखने तथा आज्ञा मानने का ढंग सिखाया। जब आप गुरु-पद पर विराजमान किए गए तो वैराग्य में आकर बोले कि पातशाह! मैं तो एक कीट के बराबर था। आपने कृपा तथा स्नेह से मुझ यतीम को बड़ा सहारा दिया :

जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥ (पन्ना १६७)

गुरु-पद पर आसीन होने के पश्चात आप श्री गुरु रामदास जी के नाम से विख्यात हुए। आप जी ने श्री गुरु अमरदास जी की आज्ञा अनुसार संतोखसर (सरोवर) बनवाया। इस सरोवर की कुछ दूरी पर 'गुरु का चक्क' नामक नगर बसाया। बाद में इसका नाम 'रामदासपुर' पड़ गया। गुरु का चक्क के निकट ही आप जी ने एक सरोवर बनवाया जिसका नाम 'अमृत सर' प्रसिद्ध हुआ। इसी सरोवर के नाम पर 'गुरु का चक्क' नगर का नाम 'अमृतसर' प्रचलित हुआ। इस सरोवर के मध्य धर्म-स्थान 'श्री हरिमंदर साहिब' बनाने का विचार श्री गुरु अरजन देव जी के समय सम्पूर्ण हुआ।

श्री गुरु रामदास जी ने श्री अमृतसर को सर्वसांझीवालता का प्रतीक बनाया। यहां बसाये गये लोगों में हर वर्ग-व्यवसाय से सम्बंधित लोग थे। श्री अमृतसर नगर में बनाया गया 'सरोवर' भी सबका सांझा था। यहां प्रत्येक धर्म के लोगों को स्नान करने का अधिकार था, जबकि उस समय हिंदू धर्म-स्थानों तथा तीर्थों पर तथाकथित निम्न जाति के लोगों को जाने की आज्ञा नहीं थी। सांझीवालता का इससे बढ़कर उदाहरण और क्या हो सकता है? धार्मिक कार्यों के लिए धन एकत्र करने तथा सिक्ख आदर्शों के प्रचार का कार्य सुनियोजित ढंग से करने के लिए आपने 'मसंद-प्रथा' की स्थापना की।

स्त्री के तिरस्कार तथा निरादर की जड़ सामाजिक कुरीति 'दहेज-प्रथा' का विरोध करते हुए आप जी ने कहा कि सांसारिक धन तथा सामान आदि का दहेज लेकर प्रदर्शन करने वाले अभिमानी मनुष्य मनमुख कहलाते हैं। प्रभु के नाम से सजी-संवरी स्त्री गुरमति में स्वीकृत है। परमात्मा के नाम रूपी दहेज की अन्य कोई दहेज बराबरी नहीं कर सकता :

होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ॥

हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥
(पन्ना ७९)

श्री गुरु रामदास जी ने तीस रागों में बाणी रचकर गुरसिक्खों को जीवन जीने का ढंग सिखाया। आप जी ने समझाया कि कोई भी कार्य करने से पूर्व परमात्मा के समक्ष अरदास करनी प्रत्येक गुरसिक्ख का कर्त्तव्य है :

कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ॥
कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥
(पन्ना ९१)

इस तरह करने से प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है। माया-मोह से भरे संसार में लोभ के अधीन हुए जीव के लिए जीवन का रास्ता बहुत कठिन तथा दुखपूर्ण हो जाता है। इस कलयुग में यदि विकारों के जाल से निकलना चाहे तो वह मुक्ति कैसे प्राप्त कर सकता है? दिनोदिन बढ़ रही मानसिक अशांति को कैसे दूर किया जा सकता है? इन ज्वलंत समस्याओं का समाधान करते हुए श्री गुरु रामदास जी समझाते हैं कि परमात्मा के नाम का जाप नौका है जिसके सहारे जीव दुखों से निवृत्त होकर संसार-समुद्र को पार कर सकता है :

कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई किव छूटह हम छुटकाकी ॥
हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा हरि जपिओ तरै तराकी ॥ (पन्ना ६६८)

आज हम कई प्रकार के गलत रास्तों पर चल पड़े हैं; प्रभु के नाम-सिमरन से अधिक नाना प्रकार के फोकट कर्मकांडों को महत्त्व दे रहे हैं। गुरु जी के मतानुसार नाम-सिमरन के बिना सारे तीर्थ-स्नान, व्रत, यज्ञ, पुण्य-दान आदि व्यर्थ हैं :

सभि तीरथ वरत जग पुंन तुलाहा ॥
हरि हरि नाम न पुजहि पुजाहा ॥ (पन्ना ६९९)

जिनके अंदर प्रभु का नाम बस जाता है वे किसी के मोहताज नहीं होते। परमात्मा की कृपा से उनके सारे कार्य पूर्ण हो जाते हैं :

जिना अंदरि नामु निधानु हरि तिन के काज दयि आदे रासि ॥
तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि प्रभु अंगु करि बैठा पासि ॥ (पन्ना ३०५)

इसलिए जिस सिमरन की बरकत से परमात्मा के साथ प्रीति बनी रहती है, वह सिमरन ही जप-तप, व्रत तथा पूजा है :

सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ॥ (पन्ना ७२०)

गुरसिक्ख की दिनचर्या के बारे में समझाते हुए गुरु जी कहते हैं कि गुरु का सिक्ख अमृत वेले उठकर हरि-नाम का सिमरन करता है; स्नान करके सतिगुरु के उपदेश द्वारा अमृतमय प्रभु के नाम का जाप करता है। इस तरह उसका मन शांत रहता है, विकारों की तरफ नहीं दौड़ता। दिन चढ़ने पर सतिगुरु की बाणी का कीर्तन करता है तथा सारा दिन काम-धंधा करते हुए भी प्रभु को याद रखता है :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ॥
उपदेसि गुरु हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥ (पन्ना ३०५)

जो गुरु के हुक्म को समझकर उस पर चलते हैं, परमात्मा उन्हीं जीवों का ही गुरबाणी गायन करना तथा सुनना कबूल करता है :

सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥
गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥
(पन्ना ६६९)

गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने वालों को श्री गुरु रामदास जी ने सूही राग में रचित बाणी 'लावां' द्वारा उपदेश दिया कि गृहस्थ में रहते हुए प्रभु को सदैव याद रखना है; परमात्मा के भय तथा प्रेम में रहकर जीवन गुजारना है। यही नहीं, विवाह के समय चार 'लावां' पढ़ने का आदेश श्री गुरु रामदास जी ने प्रत्येक गुरु के सिक्ख को देकर विवाह के समय की पुरानी रीति बदल दी।

वडहंस राग में 'घोड़ीआं' के अलंकार को लेकर दो 'शबदों' की रचना की, जिनमें परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग को बताया। विवाह के समय पारमार्थिक उपदेश वाली घोड़ीआं गायन करने का निर्देश दिया ताकि शुभ कार्य करते हुए भी परमात्मा की निकटता बनी रहे।

धन-जायदाद के लिए पिता से झगड़ा करने वालो पुत्रों के लिए उपदेश दिया :

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥
जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥
(पन्ना १२००)

आप जी ने सारा जीवन कठोर तप की तरह बिताया। आप जी की बाणी वैराग्य तथा प्रेम से भरपूर है। भट्ट बल जी के अनुसार जिस गुरु का सिमरन करने से हृदय में परमात्मा का नाम दिनोदिन प्रफुल्लित होता है, मन शांत हो जाता है, ऋद्धियां-सिद्धियां तथा नौ निद्धियां प्राप्त हो जाती हैं, जिस गुरु की शरण में जाने से प्रभु-मिलाप होता है, उस गुरु (श्री गुरु रामदास जी) का सिमरन करो तथा संगत के साथ मिलकर धन्य-धन्य कहो :

जिह सतिगुर सिमरंत नयन के तिमर मिटहि खिनु ॥
जिह सतिगुर सिमरंथि रिदै हरि नामु दिनो दिनु ॥
जिह सतिगुर सिमरंथि जीअ की तपति मिटावै ॥
जिह सतिगुर सिमरंथि रिधि सिधि नव निधि पावै ॥
सोई रामदासु गुरु बल्य भणि मिलि संगति धंनि धंनि करहु ॥
जिह सतिगुर लगि प्रभु पाईऐ सो सतिगुरु सिमरहु नरहु ॥
(पन्ना १४०५)

कविता

जीवन-प्रश्न

जीवन!
क्या हम इसकी गहराई में उतरे हैं
या सिर्फ इसके विस्तार में उलझे हैं?
जीवन!
क्या खट्टे-मीठे अनुभवों का महज़ एक सफ़र है
या किसी निश्चित लक्ष्य तक पहुंचने की डगर है?
जीवन!
क्या दिशाहीन होकर चलते ही जाना है
या खुदी को खुद के पास लाना है?
जीवन!
क्या सपनों का अंतहीन सिलसिला है
या हकीकत में भी कुछ मिला है?
जीवन!
इसे हम सज़ा मानें या पुरस्कार?
फैसला करेगा जीवन के प्रति, हमारा विचार और व्यवहार।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो : ०९४११६०७६७२

श्री गुरु रामदास जी की बाणी में प्रेम-तत्त्व

*-डॉ. जगजीत कौर**

दिव्य आध्यात्म शक्ति, प्रभु-प्रेम, गुरु-भक्ति, लोक-सेवा, समाज-कल्याण और पंथक विकास को समर्पित सिक्ख पंथ की चतुर्थ ज्योति साहिब श्री गुरु रामदास जी का जीवन, जहां समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए अद्‌भुत प्रेरणा-स्रोत है, वहीं उनकी दिव्य गुणों से परिपूर्ण काव्यमय बाणी-रचना, निराशा, दुख और संताप के गहन गर्त में डूबे प्राणी को अदम्य उत्साह, असीम आनंद और दिव्य शांति के लोक में ला खड़ा करती है। गुरु-भक्ति, प्रभु-प्रेम से विगलत गुरु-हृदय की गहन तल गहराइयों और प्रेमानुभूति की निश्छल भाव तरंगों से अभिभूत गुरुदेव जी की रहस्यमयी विस्मादित रंगत में रंगी बाणी जिज्ञासु को प्रेम के रंग में सराबोर करने की क्षमता रखती है। इसीलिए क्या देशीय और क्या विदेशी इतिहासकारों और काव्यकारों सभी ने इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। प्रसिद्ध इतिहासकार ग्रीनलीज़ गुरु जी को 'प्रेम का अग्रदूत' (**Apostle of Love**) बताता है, वहीं प्रो. पूरन सिंघ जी गुरुदेव की बाणी में दिव्य प्रेम की तरंगें स्वत: सिद्ध प्रस्फुटित होती हुई देखते हैं।(**The Poetry of Ramdas flow like a stream of love, it has sponteneous over flow of love**) इसीलिए तो भट्ट कवि साहिबान ने गुरु-चरणों पर नत्मस्तक हो, गुरु-प्रशस्ति में जिन १२३ सवैयों की रचना की और जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पृष्ठ १३८९-१४०९ पर सकंलित हैं, उनमें बड़ा भाग-- ६० सवैये श्री गुरु रामदास जी की प्रशस्ति में रचे गए हैं। अंत में भट्ट कीरत जी ने हमें संदेश दिया है कि मानवता का कल्याण इसी में है कि प्रेम और भक्ति के दिव्य स्वरूप गुरु-चरणों पर समर्पित हो जायें :

हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही
अंम्रित छाडि बिखै बिखु खाई ॥
माया मोह भरम पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई ॥
इकु उतम पंथु सुनिओ गुर संगति तिह मिलंत जम त्रास मिटाई ॥
इक अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई ॥ (पन्ना १४०६)

गुरु साहिब का अपना जीवन कितनी दिव्य शक्तियों से पूर्ण है! सात साल के अनाथ (बाल) नानी की अंगुली पकड़ बासरके गांव आते हैं, सिर पर घुंघनियों का थाल रख कर गली-गली घूमते हैं, साथ में सच्चे गुरु की खोज भी समाहित है और फिर जब सच्चे गुरु की प्राप्ति हो गई, श्री गुरु अमरदास जी का वरद हस्त सिर पर रखा गया, गुरु जी के दामाद भी बन गए, बीबी भानी जी से संयोग भी हो गया, तब भी अपने मूल को भूले नहीं। बाउली की सेवा, लंगर-पंगत-संगत की सेवा, सिर पर टोकरी रखी रही। सेवा-कारजों में व्यस्त चित्त गुरु-चरणों पर ही समर्पित रहा। विश्व को संदेश दिया कि गुरु की शरण व प्रभु-चरणों का ध्यान ही परमोच्च पद-प्राप्ति में सहायक होता है :

**1801-C, Mission Compound, Near St. Mary's Academy, Saharanpur (U.P.)-247001, Mob. : 94124-80266*

जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥ (पन्ना १६७)

श्री गुरु रामदास जी सितंबर, १५७४ से सितंबर, १५८१ ई तक गुरगद्दी पर आसीन रहे। आपका प्रकाश लाहौर, चूनामंडी में पिता भाई हरिदास जी और माता दया कौर जी की कोख से सन् १५३४ में हुआ। गुरगद्दी पर आप केवल सात साल ही विराजमान रहे, परंतु आपने पंथक विकास के लिए अद्भुत कार्य किए। अमृत सरोवर की खुदाई आरंभ करवाई, 'गुरु का चक्क' नामक नगर बसाया, जो बाद में 'गुरु रामदास पुर' और अमृत सरोवर पूर्ण होने पर 'अमृतसर' कहलाया। गुरु जी ने इसके विकास में पूरा योगदान दिया। गुरु जी अकबर बादशाह से भी मिलने गये और पंथ-हितैषी कार्यों का ही पक्ष-समर्थन करते रहे। इतने कम समय में जो दिव्य बाणी की देन मानवता को दी, उस अनमोल बाणी-भंडार के लिए गुरु जी के उपकार-कार्य का मूल्यांकन असंभव है।

गुरु साहिब के ३० रागों में रचे २४६ पदे, १३८ सलोक, ३२ छंत, ३१ असटपदियां और आठ रागों में रचित वारें हैं। सारी बाणी में विचारधारा गुरु नानक पातशाह जी द्वारा निर्दिष्ट मूल विचार ही है। इनमें ब्रह्म, परमात्मा, जीवात्मा, आवागमन, बंधन, मुक्ति, गुरु, गुरु-प्रदत्त ज्ञान, नाम-सिमरन, मन, कर्म-सिद्धांत, सतसंगति, कर्मकांडों का निषेध, सदाचारक मूल्यों की महत्ता आदि विषयों पर सुंदर अभिव्यक्ति की गई है। इन सबके मध्य से जो स्वर मुखरित होकर उभरता है वो है प्रभु-बिछोह से उत्पन्न विरह, वियोग, तीव्र वेदना और मिलन की उत्कंठा। यद्यपि अनेक काव्य रूपों में बाणी-सृजना की गई है, जैसे पहरे, वणजारा, करहले, घोड़ीआं, वार और छंत, हालांकि इन काव्य-रूपों में सत्य-स्वरूप परमात्मा की यश-कीर्ति, सदाचारयुक्त जीवन-दिशा और सामाजिक विषयों को भी लिया गया है, परंतु मुख्य स्वर वही प्रभु-बिछोह और उससे उत्पन्न वेदना का ही है। प्रभु-प्रेम में भाव विह्वलता और भावातिरेकता चरम सीमा तक जा पहुंचती है :

हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ॥
कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ॥
हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥ (पन्ना ९४)

अंतरवेदना की अभिव्यक्ति इतनी तीव्र भावुकता से हुई है कि यह जिज्ञासु को भावविभोर कर जाती है :

हरि अंम्रित भिंने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे ॥
मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ॥
गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिंना ॥
जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ॥१॥
हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥
जिसु लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ ॥
(पन्ना ४४८)

"हरि अंम्रित भिंने लोइणा", "मै नीरु वहे वहि चलै जीउ", "जिसु लागी पीर पिरंम की" जैसी वेदनाजनित अनुभूतियां बाणी प्रेमियों को सहज ही प्रेम-बाणों से बेंध जाती हैं। अकाल पुरख प्रभु परमात्मा से मिलने की उत्कंठा गुरु-चरणों में विनय-विनती के उस स्तर पर ला खड़ा करती है जहां वह बिलखने लगती है :

गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने राम राजे ॥

मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिंने ॥ *(पन्ना ४४९)*

जीवात्मा प्रभु परमात्मा से मिलने को उत्कंठित हो उठती है :

हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै जिउ त्रिखावंतु बिनु नीर ॥१॥
मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर ॥
हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर ॥ *(पन्ना ८६१)*

अपने इष्टदेव के दर्शन प्राप्त करके ही उसे सुख की प्राप्ति होती है :

मेरे साहा मै हरि दरसन सुखु होइ ॥
हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ॥ *(पन्ना ६७०)*

अपने इष्टदेव प्रभु के दर्शन प्राप्त कर वह उसी प्रकार खिल उठती है जैसे कमल पुष्प सूर्य को देख कर, कमलिनी चंद्र के दर्शन कर और मोर घनघोर बादलों को देख प्रसन्न हो उठता है :

--प्रीतम प्रीति लगी प्रभ केरी जिव सूरजु कमलु निहारे ॥
मेर सुमेर मोरु बहु नाचै जब उनवै घन घनहारे ॥ *(पन्ना ९८३)*
--हरि के संत मनि प्रीति लगाई जिउ देखै ससि कमले ॥
उनवै घनु घन घनिहरु गरजै मनि बिगसै मोर मुरले ॥ *(पन्ना ९७५)*

अपने उस एक मात्र इष्टदेव से जीवात्मा मिले तो कैसे? निश्चय ही सतिगुरु की शरण में आकर उस मार्ग का पता चलता है जिस साधना-मार्ग पर चलकर इष्टदेव से मिलन संभव है, इसलिए ऐसे महान गुरुदेव के चरणों पर जीवात्मा अपना सर्वस्व कुर्बान करने को प्रस्तुत है, जो उसे प्रभु से मिलाता है :

सेज एक एको प्रभु ठाकुरु ॥
गुरमुखि हरि रावे सुख सागरु ॥१॥
मै प्रभ मिलण प्रेम मनि आसा ॥
गुरु पूरा मेलावै मेरा प्रीतमु हउ वारि वारि आपणे गुरू कउ जासा ॥१॥रहाउ॥
मै अवगण भरपूरि सरीरे ॥
हउ किउ करि मिला अपणे प्रीतम पूरे ॥२॥
जिनि गुणवंती मेरा प्रीतमु पाइआ ॥
से मै गुण नाही हउ किउ मिला मेरी माइआ ॥३॥
हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे ॥
नानक गरीब राखहु हरि मेरे ॥ *(पन्ना ५६०)*

जीवात्मा प्रभु-प्राप्ति के लिए अपने जीवन का दान करने को प्रस्तुत है :

तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥४॥
पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥५॥
नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥ *(पन्ना ७५७)*

गुरु-चरणों पर की गई अरदास-जोदड़ी अंत में सार्थक होती है। गुरु कृपावान होता है, मार्ग बताता है। उस मार्ग पर चलकर हरि, प्रिय, प्रभु की तलाश की जाती है। भाग्योदय होता है। जीव बधाई का पात्र बनता है। साजन प्रियतम तड़पती, बिलखती जीवात्मा को गुरु-कृपा से प्राप्त होता है :

गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥
कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥
हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥
धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥
(पन्ना ४४९)

सतिगुरु महान है, दयावान है। वो ही कृपा कर जीव को मार्ग सुझाता है। गुरु अमृत-कुंड है। गुरु की देही अमृत-रस से सिक्त है।

जिज्ञासु को उसी नाम-अमृत-कुंड से अमृत के छींटे प्राप्त होते हैं। गुरु के मधुर बोल, गुरु की अमृत बाणी, अमृत उपदेश को जो जिज्ञासु प्रेम-श्रद्धा सहित ग्रहण करता है वह परम संतोष की अवस्था पर पहुंच जाता है, भर-भर अंजुलि प्रेम-रस नाम-अमृत का पान करता है, छक जाता है, पूर्ण तुष्ठि की अवस्था पर पहुंच जाता है। गुरु की बख्शिश, गुरु की अपार कृपा से हरि-प्रभु से मिलन संभव होता है, इधर-उधर का भटकना समाप्त होता है। जीव हरि प्रभु से संयोग की उस स्थिति पर पहुंचता है, जहां उसका अपना अस्तित्व हरि प्रभु के अस्तित्व में समाहित हो जाता है :

गुर अंम्रित भिंनी देहुरी अंम्रितु बुरके राम राजे ॥
जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंम्रिति छकि छके ॥
गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ॥
हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥
(पन्ना ४४९)

ऐसे गुरुदेव, जो लोहे जैसे मनुष्य को सोना बना देते हैं, पारस हैं। गुरुदेव की महानता अकथनीय है। सतिगुरु की महानता का वर्णन गुरुदेव जी लगभग अपनी संपूर्ण बाणी में ही करते हैं, परंतु गउड़ी राग की वार में तो वे गुरु की प्रशस्ति करते भावविभोर हो जाते हैं :

गुरसिखा कै मनि भावदी गुर सतिगुर की वडिआई ॥
हरि राखहु पैज सतिगुरू की नित चड़ै सवाई ॥
गुर सतिगुर कै मनि पारब्रहमु है पारब्रहमु छडाई ॥ (पन्ना ३१०)

सतिगुरु की महिमा दिनोदिन सवाई होती रहती है, अन्य कोई उस स्तर तक पहुंच ही नहीं सकता :

गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ि को न सकोई ॥ (पन्ना ३०९)

सतिगुरु के प्रति अनन्य भक्ति-भावना, प्रेम, विश्वास, श्रद्धा में श्री गुरु रामदास पातशाह जी की निजी अनुभूतियां समाहित हैं। अनाथ बाल के सिर पर वयोवृद्ध श्री गुरु अमरदास जी ने जब अपना वरद हस्त रखा तो बाल को पितातुल्य गुरु का रूहानी प्रेम प्राप्त हुआ और इसीलिए उस पिता-गुरु में उन्हें परमेश्वर पारब्रह्म की ज्योति प्रतिभासित होती प्रतीत हुई; अपनी तुच्छता, अपनी अल्पज्ञता का आभास हुआ; गुरु का दृढ़ सहारा आत्मबल का संबल बनता प्रतीत हुआ :

हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ॥
सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ॥
जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥
मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे ॥
(पन्ना १३२१)

सतिगुरु अंतर की वेदना को समझने वाला है। वही केवल समर्थ शक्ति है, जो कुल दुख, संताप, वेदना को दूर करने की क्षमता रखता है : *"हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ॥"* इसलिए आपकी शरण में आए हैं :

हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥
मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥
(पन्ना १०)

हम चेरी तू अगम गुसाई किआ हम करह तेरै वसि पईआ ॥
दइआ दीन करहु रखि लेवहु नानक हरि गुर सरणि समईआ ॥ (पन्ना ८३६)

स्थिति यह हो गई है कि सतिगुरु के वचन परमेश्वर के वचन के तुल्य अटल सत्य हैं : *"जो बोले पूरा सतिगुरू सो परमेसरि सुणिआ ॥"* गुरु के बोले रुष्ट शब्द भी प्रिय लगते हैं :

जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई ॥ *(पन्ना ७५८)*

प्रतिपल गुरु के बोल सुनने की लालसा लगी रहती है :

अंतरि पिआस उठी प्रभ केरी सुणि गुर बचन मनि तीर लगईआ ॥ *(पन्ना ८३५)*

गुरु के मधुर बोल विस्मादित कर देते हैं :

गुरु सुंदरु मोहनु पाइ करे हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ ॥
मेरै हिरदै सुधि बुधि विसरि गई मन आसा चिंत विसारिआ ॥
मै अंतरि वेदन प्रेम की गुर देखत मनु साधारिआ ॥ *(पन्ना ७७६)*

इस निरंकार स्वरूप सतिगुरु और गुणों के सागर सतिगुरु के प्रतिपल निकट बने रहने की लालसा होती है, क्षण मात्र के लिए अलगाव मानो मृत्यु तुल्य प्रतीत होता है :

सतिगुरु सागरु गुण नाम का मै तिसु देखण का चाउ ॥
हउ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरि जाउ ॥ *(पन्ना ७५९)*

सतिगुरु के प्रति श्री गुरु रामदास पातशाह जी की अनन्य भक्ति, दृढ़ आस्था और विश्वास स्पष्ट तौर से संदेश देता है कि मानव जीवन का स्पष्ट उद्देश्य उस एक मात्र परम शक्ति प्रभु परमात्मा से मिलाप हासिल करना है। उस मिलाप में सहायक एकमात्र गुरु ही है। जीवन का अंतिम लक्ष्य दिव्य ज्ञान-दाता पारस तुल्य गुरु के चरणों से जुड़े रहना है। गुरु के चरणों से जुड़कर गुरु की मीठी-मधुर याद में चित्त को संजोये रखना है। गुरु-चरणों से प्रेम ही जीवन को सार्थकता तक पहुंचाता है। श्री गुरु रामदास जी की प्रेम विगलित बाणी का एक-एक छंद, एक-एक अमृत सिंचित मधुर बोल निश्चय ही मनुष्य को प्रेम-पथ का राही बना परमोच्च अवस्था तक पहुंचाने की समर्थता रखता है। गुरु जी की प्रेम बाणी इतनी प्रभावशाली है कि भट्ट नल जी के शबद, जो उन्होंने गुरुदेव जी के व्यक्तित्व के सम्बंध में कहे, वे निश्चय ही उनकी बाणी पर भी सार्थक होते हैं। गुरु-शब्द श्रवण कर तुच्छ कांच कंचन बन जाता है। सतिगुरु द्वारा नाम का मुख से उच्चारण कर विष तुल्य प्राणी अमृत तुल्य आत्मिक जीवन को प्राप्त कर लेता है, लोहा लाल बन जाता है, पत्थर मोती, काठ चंदन, पशु-प्रेत वृत्ति के मानव श्रेष्ठ पुरुष, देववृत्ति के मानव बन जाते हैं :

कचहु कंचनु भइअउ सबदु गुर स्रवणहि सुणिओ ॥
बिखु ते अंम्रितु हुयउ नामु सतिगुर मुखि भणिअउ ॥
लोहउ होयउ लालु नदरि सतिगुरु जदि धारै ॥
पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै ॥
काठहु स्रीखंड सतिगुरि कीअउ दुख दरिद्र तिन के गइअ ॥
सतिगुरु [illegible] जिन्ह परसिआ से पसु परेत सुरि [illegible] *(पन्ना १३९९)*



राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास

-प्रो. जोगिंदर सिंघ

श्री गुरु रामदास जी श्री गुरु नानक-परंपरा एवं सिक्ख धर्म की चौथी गुरु शख़्सियत हैं। सिक्ख जगत में उनको कभी श्री अमृतसर शहर का प्रवर्त्तक कहकर, कभी सोढी सुलतान कहकर, कभी सच्चे पातशाह कहकर स्मृति का अंग बनाया जाता है। उनका जन्म पिता श्री हरिदास जी के गृह में २५ आश्विन, संवत् १५९१ (२४ सितंबर, १५३४ ई) को लाहौर की चूना मंडी में हुआ था। आप जी का एक छोटा भाई 'हरिदआल' तथा एक बहन 'रमदासी' भी थी। पिता श्री हरिदास जी का परिवार साधारण तथा श्रमिक परिवार था। परिवार न तो आर्थिक वक्ष से अमीर था और न ही सामाजिक पक्ष से ज्यादा मान्यता थी। श्री हरिदास जी की वंश-परंपरा में सिक्खी-श्रद्धा, सेवा-भावना, श्रम एवं श्रमकार, नम्रता एवं मिठास तथा प्रभु-भक्ति के रंग-रस का अथाह पासार था। श्री गुरु रामदास जी, जिनको घर-परिवार में पहला बच्चा होने के कारण 'जेठा' नाम से बुलाया जाता था, अभी ७ वर्ष के ही थे कि पहले माता जी तथा बाद में पिता जी बारी-बारी प्रभु-हुक्म में अकाल चलाना कर गये। भाई जेठा जी की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति इस उम्र में एक यतीम जैसी ही थी। छोटे भाई हरिदआल तथा बहन रमदासी के पालन-पोषण की जिम्मेदारी का बोझ भी उनके सिर पर था। श्री गुरु रामदास जी (भाई जेठा जी) जब अपनी बाणी में *"हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता"* का संकेत करते हैं तो इसमें उनकी जीवन की उस यतीम तथा लावारिस स्थिति का सत्य ही उजागर हुआ है। कमाल की शख़्सियत थी भाई जेठा जी की, जिन्होंने न तो सामाजिक रुतबे की परवाह की और न ही किसी ज़हर-कहर की। उम्र ७ वर्ष की है किंतु घुंघनियां (उबले चने) बेचने का श्रम करके परिवार की पालना भी कर रहे हैं तथा सच्चे सौदे की तरह सेवा-अर्थ भी घुंघनियां दे रहे हैं। जब ननिहाल-परिवार को भाई जेठा जी के कार्य-व्यवहार का पता चला तो वे पालन-पोषण के लिए भाई जेठा जी, हरिदआल एवं रमदासी को गांव बासरके ले आए। गांव बासरके बाबा अमरदास जी की जन्म-भूमि थी। वे अभी गुरु-सिंहासन पर विराजमान नहीं हुए थे, परंतु सारे गांव में *'परबतु मेराणु'* शख़्सियत के गुण-सांझ, नम्रता एवं प्यार का प्रभाव था। यहां बासरके गांव में ही सिक्ख-सिक्ख के तौर पर तथा सेवा-भावना के रूप में बाबा अमरदास जी की एवं भाई जेठा जी की पहली मुलाकात हुई। अंतरात्मिक तौर पर यह मुलाकात ऐसी थी कि भाई जेठा जी सदा के लिए बाबा अमरदास जी के लिए समर्पित हो गए।

बाबा अमरदास जी का सेवा-समर्पित सिद्धांत जगत प्रसिद्ध है। तन, मन तथा धन श्री गुरु अंगद देव जी को सौंपकर जिस प्रकार उन्होंने १२ वर्ष (गुरु-हुक्म) माना, उसका फल ही था कि बाबा अमरदास जी बासरके गांव छोड़कर पूरे परिवार सहित ('गोइंदवाल' की सृजना के लिए) गोइंदवाल साहिब आ बसे। भाई जेठा जी भी गुरु-मोह, संगती-सांझ तथा सेवा-भावना का सदका बासरके गांव छोड़कर गोइंदवाल साहिब आ गये। गोइंदवाल साहिब आकर भी भाई जेठा जी ने घुंघनियां बेचने का श्रम जारी रखा तथा गुरु-

दरबार की सेवा-संभाल की हाज़िरी भी निरंतर जारी रखी। २९ मार्च, १५५२ ई को श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी 'गुरु-ज्योति' बाबा अमरदास जी के हृदय में टिकाकर उन्हें तीसरे गुरु के रूप में छत्र-सिंहासन पर बिठा दिया।

श्री गुरु अमरदास जी तथा भाई जेठा जी के मध्य द्वैत-दुविधा तो पहले ही खत्म हो गई थी, दोनों भाव-भक्ति में सिक्खी-सेवा तथा गोइंदवाल साहिब की सृजना के लिए समर्पित थे। श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी छोटी सपुत्री बीबी भानी जी के लिए भाई जेठा जी को वर के रूप में स्वीकार कर लिया। हुक्म-मानने की वृत्ति के अनुसार भाई जेठा जी ने निरंतर २२ वर्ष गुरु-दरबार की सेवा-संभाल तथा गोइंदवाल साहिब की सृजना के लिए खुद को अर्पित किए रखा। सितंबर, १५७४ ई को श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खों-पुत्रों को जांच कर, अपनी गुरु-ज्योति का अधिकारी भाई जेठा जी को बनाया। भाई जेठा जी, श्री गुरु रामदास जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्ख संगत को श्री गुरु रामदास के चरणों के साथ लगाकर, फिर खुद माथा टेककर 'गुरु' घोषित किया। समकालीन भाई गुरदास जी, भट्टों तथा रबाबियों ने बड़े खूबसूरत अनुभव प्रकटाये। भाई गुरदास जी ने फरमाया :

बैठा सोढी पातिसाहु रामदासु सतिगुरू कहावै।
(वार १:४७)

भट्ट नल जी ने कहा :

राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥
(पन्ना १३९९)

रामकली की वार में भाई बलवंड जी- भाई सत्ता जी ने तो यहां तक कह दिया है कि :

नानकु तू लहणा तूहै गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥
(पन्ना ९६८)

श्री गुरु रामदास जी को अपना हार्दिक अभिनंदन भेंट करते हुए भाई बलवंड जी-भाई सत्ता जी ने जहां ***"धंनु धंनु रामदास गुरु"*** कहा, वहीं ***"जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ"*** कहकर और स्पष्ट कर दिया कि श्री गुरु रामदास जी की जीवन-सृजना श्री गुरु अमरदास जी ने खुद ही की है तथा उनकी शख़्सियत को भी गुरु रूप में खुद संवारा है। निश्चय ही अपने आप को दास, मूर्ख, अपराधी, पापी, कीरे, अंधले, सेवक, ढाढी कहकर नम्रता-मंडल में जीने वाले भाई जेठा जी का श्री गुरु रामदास जी के रूप में ***"राजु जोगु तखतु"*** पर बैठ जाना एक ऐतिहासिक घटना है।

श्री गुरु रामदास जी ने १५८१ ई तक (७ वर्ष) गुरु-सिंहासन पर बैठकर जहां सिक्ख लहर की वागडोर संभाली, श्री अमृतसर शहर का निर्माण किया, मसंद एवं दसवंध की परंपरा चलाई, वहीं उन्होंने ७ वर्ष के अल्प समय में मानव-शांति के लिए, धार्मिक सिद्धांतों तथा सिक्खी की सार्थकता उजागर करने के लिए, आकार में भी, रूप तथा रस के पक्ष से भी 'बाणी' का महान भंडार प्रदान किया है। श्री गुरु रामदास जी की समस्त बाणी गुरु नानक-परंपरा के अनुसार रागों में ही प्रकाशमान हुई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सारी बाणी ३१ रागों में दर्ज है। श्री गुरु रामदास जी की सांगीतिक सूझ की मान्यता तथा विलक्षणता यह है कि केवल उनकी ही गुरु-प्रतिभा है जिन्होंने 'जैजावंती' राग को छोड़कर अन्य सभी ३० रागों में बाणी रची है। रागों के पवित्र सम्बंधों को जिस कोमलता, रसिकता तथा सूझ से श्री गुरु रामदास जी ने जोड़ा है, उससे सहज ही स्पष्ट होता है कि श्री गुरु रामदास जी की बाणी आध्यात्मिक साहित्य की एक बड़ी प्राप्ति है।

श्री गुरु रामदास जी ने अपनी बाणी का ज्यादातर हिस्सा लोक-रूपों द्वारा मूर्तिमान किया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जितने भी काव्य-रूप

प्रयोग किए गए हैं श्री गुरु रामदास जी ने लगभग उन सभी काव्य-रूपों में बाणी रची है। आप जी ने २४६ पदे रचे, जिनमें दुपदे, चौपदे, पंचपदे विशेष हैं। आप जी ने ३१ असटपदियों की रचना की। लोक-काव्य रूप में आपने पहरे, वणजारे, करहले तथा घोड़ीआं के काव्य रूप अपनाये हैं। छंत भी एक लोक काव्य-रूप है। श्री गुरु रामदास जी ने ३२ छंत लिखे। सलोक भी बड़ा पुराना भारतीय काव्य-रूप है। इसमें भी आप जी ने १३८ सलोक रचे हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का एक प्रसिद्ध काव्य रूप 'वार' है। श्री गुरु रामदास जी ने ८ वारें भी लिखी हैं, जिनमें १८३ पउड़ियां हैं।

श्री गुरु रामदास जी की बाणी का व्यापक विषय चाहे प्रभु के लिए वैराग्य तथा तड़प ही है, किंतु प्रभु-मिलाप में सहायक धार्मिक, सामाजिक तथा सदाचारक साधनों के संकल्पों, स्वरूपों एवं आदर्शों को अलग करने पर बहुत बल दिया है। गुरु-ध्यान, नाम-सिमरन, साधसंग, संत-सेवा, कीर्ति तथा कीर्तन, पाठ-विचार, पुण्य-दान, अमृत वेले का जागना, शौच-स्नान, सदाचारक कर्म तथा व्यवहार, ये सब प्रभु-मिलाप में सहायक साधन हैं। प्रभु के लिए वैराग्य तथा तड़प का एक रंग देखें, कितना खूबसूरत है :

हरि अंम्रित भिंने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे ॥
मन रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ॥
(पन्ना ४४८)

प्रभु-अभिनंदन की एक मिसाल देखें, गुरु पातशाह कहते हैं :

जिस नो साहिबु वडा करे सोई वड जाणी ॥ . . .जे को ओस दी रीस करे सो मूड़ अजाणी ॥
(पन्ना ३०२)

सतिगुरु के यशोगान का एक प्रमाण देखें, विश्वास देखें, कितना दृढ़ है :

जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भंभल भूसे खाही ॥ (पन्ना ३०८)

गुरु जी सतिसंगत को दृढ़ता का स्रोत कहते हैं :

सतसंगति मिलै त दिड़ता आवै हरि राम नामि निसतारे ॥ (पन्ना ९८१)

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, भ्रम, पाखंड, पाप, गुरु-निंदा, साधु-विरोध, रिद्धियों की उपासना तथा जीवन में चतुराई को निरर्थक बताने में भी श्री गुरु रामदास जी ने किसी तरह का लिहाज़ नहीं किया, बड़ी खरी-खोटी सुनाई हैं :

-कोई निंदा करे पूरे सतिगुरू की तिस नो फिटु फिटु कहै सभु संसारु ॥ (पन्ना ३०२)
-सो डरै जि पाप कमावदा धरमी विगसेतु ॥
(पन्ना ८४)
-जैकारु कीओ धरमीआ का पापी कउ डंडु दीओइ ॥ (पन्ना ८९)
-जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु झूठा कूड़ु बोले किसै न भावै ॥ (पन्ना ६५३)



श्री गुरु रामदास जी की बाणी में निजी-तजुर्बा, भावों की तीव्रता, सुहजवादी शक्ति तथा अलंकारों का भरपूर पासार है। जैसे रुलते-फिरते जीवन को उन्होंने गुरु-सिंहासन की प्राप्ति तक आध्यात्मिक बनाया इसी तरह उनकी समूची बाणी भी मनुष्य को 'हरि का प्यारा' सृजित करने में प्रवृत्ति से लेकर प्रभु-प्राप्ति तक का मार्ग दर्शाती है। श्री गुरु रामदास जी का बड़ा दृढ़ तथा स्पष्ट निर्णय है :

जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ (पन्ना ५५५)

अर्थात् 'हरि का प्यारा' बनकर ही मानस जाति के साथ प्यार किया जा सकता है तथा मानस जाति से प्यार करके समूची मानवता से प्यार लिया जा सकता है।

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)

गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे

*-पांधी ननकाणवी**

जब सात वर्षीय यतीम बाल भाई जेठा जी अपना चूना मंडी लाहौर वाला घर छोड़कर अपनी नानी के साथ 'बासरके' गांव (जिला श्री अमृतसर) पहुंचे तो गांव के समूह लोग उनकी नानी के घर आए। भाई जेठा जी को देखकर लोग काफी मायूस हुए; स्त्रियां आंसू बहाकर रोईं-- "बेचारा 'जेठा', मां-विहीन और अब पिता का साया भी सिर से उठ गया। बेचारी बूढ़ी नानी को इस आयु में नाती की संभाल करनी पड़ रही है।" एक दिन गांव बासरके के ही निवासी बाबा अमरदास जी भाई जेठा जी की नानी के घर पधारे। उन्होंने भाई जेठा जी के सिर पर हाथ फेरा और परमात्मा के पास उनकी सुरक्षा के लिए अरदास की। बाबा अमरदास जी ने उनकी नानी को ढांढस बंधाया और फिर वे अपने घर वापिस चले गए। नानी भी अति निर्धनता में जी रही थी। उसने भाई जेठा जी को घुंघनियां (उबले चने) बेचने के काम में लगा दिया।

फिर एक समय आया। बाबा अमरदास जी, तीसरी पातशाही के रूप में गोइंदवाल साहिब में गुरु नानक साहिब की गद्दी (जो उन्हें द्वितीय पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी से मिली थी) पर विराजमान होकर विचरने लगे। आपने भाई जेठा जी को वहीं भुलाया और उनको उनकी नानी सहित गोइंदवाल साहिब में बुला लिया। यहां आकर जहां भाई जेठा जी नौजवानी की मंजिलें तय करते हुए अपनी रोजी-रोटी कमाते रहे, वहीं वे गुरु-घर की सेवा करने में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगे। श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी छोटी सपुत्री बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी के साथ कर दिया।

उन दिनों गोइंदवाल साहिब बसने का निर्माण-कार्य श्री गुरु अमरदास जी की देखरेख में बड़ी तेजी से जारी था। संगत के लिए पानी की सुविधा हेतु बाउली की खुदाई हो रही थी। गुरु-घर के अनेक सिक्खों के साथ भाई जेठा जी भी बाउली की कार सेवा में रुचित हो रहे थे। वे अपने मन में यह विचार कभी नहीं लेकर आते थे कि वे गुरु जी के दामाद लगते हैं और उनको गुरु-घर के अन्य गुरसिक्खों/सेवकों की भांति सिर पर मिट्टी-गारे की टोकरी नहीं उठानी चाहिए। कहते हैं कि एक बार उनके कुछ नज़दीकी रिश्तेदार गोइंदवाल साहिब आए। जब उन्होंने भाई जेठा जी को अपने सिर पर मिट्टी-गारे की टोकरी उठाए देखा तो उन्हें पैरों तले जमीन खिसकती नज़र आई। वे क्रोध में आ गए। जाति एवं रिश्तेदारी के अभिमान ने उनको होश भुला दी और वे श्री गुरु अमरदास जी को बिना शीश निवाए गुरु पातशाह के हजूर वचन-कुवचन बोलने लगे कि गुरु जी ने अपने दामाद को सेवकों की भांति काम पर लगा रखा है। सब कुछ सुनकर भी गुरु जी ज्यों के त्यों शांतचित्त बैठे रहे। जब भाई जेठा जी को अपने कथित रिश्तेदारों के कुवचनों के बारे में पता चला तो आप जी ने जा गुरु जी के चरण

*जे-८/१२२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-११००२७

पकड़े और नम आंखों से यूं विनती की : "पातशाह जी! ये अहंकार में ग्रसित लोग हैं। इन्होंने आप जी का घोर अपमान किया है। इनके अवगुणों को न देखना। गरीब निवाज जी! आप बेसहारों को सहारा प्रदान करने वाले हो। मैं तो पातशाह जी, अपने धन्य भाग्य समझता हूं जो आपने अपने दास को इस योग्य समझा है। इन लोगों की समझ कम है। इनको क्षमा कर दो। पातशाह जी! गुरु नानक पातशाह का दर-घर बड़े दिल वाला है।"

और इस प्रकार वे रिश्तेदार मानभंग अपने पल्ले बांध अपनी राह पर चल पड़े। श्री गुरु अमरदास जी ने भाई जेठा जी को (गुरु के चक्क वाली जगह पर) एक नगर बसाने तथा एक सरोवर खुदवाने की जिम्मेदारी सौंपी। बादशाह अकबर के दरबार में गुरु-घर के दोखियों की शिकायत का उत्तर देने के लिए भाई जेठा जी को भेजा, जिसमें वे पूरी तरह से सफल हुए। आप जी ने श्री गुरु नानक देव जी के चरणों में अरदास करके गुरु-घर के ईर्ष्यालुओं की एक-एक बात का ऐसे योग्य ढंग से दलील सहित उत्तर दिया कि बादशाह प्रसन्न हो उठा और गुरु-घर के ईर्ष्यालु अपमानित होकर दरबार से बाहर निकले।

श्री गुरु अमरदास जी ने भाई जेठा जी को हर तरह से जांचा और फिर उन्होंने हुक्मी-पुरुष तथा गुरगद्दी की जिम्मेदारी निभाने में हर तरह से निपुण जानकर चौथे गुरु के रूप में स्थापित करने के लिए हुक्म किया। गुरु पातशाह जी के हुक्मानुसार सिक्ख संगत अपने-अपने कामकाज़ छोड़कर भी गोइंदवाल साहिब पहुंची। संगत ने श्री गुरु नानक देव जी के अति ऊंचे दरबार में हाजरी भरी; श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन करके निहाल हुई और फिर विशेष दीवान सज गया। सबने संगत रूप में बैठकर 'आसा की वार' का कीर्तन श्रवण किया। कीर्तन के बाद संगत ने बड़ी उत्सुकता से देखा कि श्री गुरु अमरदास जी ने संगत में विराजमान, कीर्तन व हरि-यश का आनंद ले रहे भाई जेठा जी को बांह से पकड़ा और फिर अपने विराजमान होने वाले 'थड़े' (आसन) पर बिठा दिया। यह आश्चर्यजनक कौतुक देखकर भाई जेठा जी खुद तथा एकत्रित अन्य संगत हैरान रह गई। श्री गुरु अमरदास जी के दोनों सपुत्रों-- बाबा मोहन जी तथा बाबा मोहरी जी ने भी सब कुछ आश्चर्यता से देखा। गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी को भाई जेठा जी को गुरगद्दी सौंपने सम्बंधी सारी रस्में पूरी करने का हुक्म किया। तत्पश्चात श्री गुरु अमरदास जी ने प्रसन्नचित्त होकर बड़े धैर्य से सारी संगत को फरमान किया कि आज से भाई जेठा जी 'गुरु रामदास जी' के नाम से गुरु नानक पातशाह की गद्दी के उत्तराधिकारी, चौथी पातशाही के रूप में प्रकट हुए हैं। गुरु जी ने सारी संगत को प्रेरित किया कि समूह सिक्ख संगत श्री गुरु रामदास जी को 'चौथे पातशाह' करके जाने। गुरु जी ने फरमान किया :

पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ ॥
गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु न होइ ॥ (पन्ना १२४९)

गुरु-दरबार में जुड़े कई गुरसिक्ख यह सोचे जा रहे थे कि श्री गुरु नानक देव जी का दरबार कितना ऊंचा है कि इस दरबार के साथ जुड़कर बेसहारा तथा यतीम जाने जाते भाई जेठा जी 'चौथे पातशाह' के रूप में 'श्री गुरु रामदास जी' कहलवा रहे हैं। यही तो साक्षात महानता है गुरु-घर की। माथा टेकने के बाद संगत यूं ही शांत एवं प्रसन्नचित्त बैठी

रही और यूं ही श्री गुरु रामदास जी भी नयन मूंदे बैठे रहे। गुरु-प्यार में भीगे तथा नेत्रों से नीर बहाते हुए वे शुक्राना करते प्रतीत हो रहे थे। सारी संगत श्री गुरु रामदास जी के नूरानी चेहरे को निहारे जा रही थी। जब गुरु जी ने काफी समय तक नेत्र न खोले तो श्री गुरु अमरदास जी ने प्यार में मुग्ध होकर श्री गुरु रामदास जी को संगत को दर्शन देने तथा वचन आदि करने को कहा, परंतु श्री गुरु रामदास जी तो इस समय गुरु-चरणों का ध्यान धर कर उनका कोटि-कोटि धन्यवाद किए जा रहे थे। अंत श्री गुरु अमरदास जी का हुक्म सुनकर श्री गुरु रामदास जी ने अपने नेत्र खोले और सजल नेत्रों एवं रूंधे हुए गले से आप जी ने इस प्रकार संबोधन किया :

जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥
धंनु धंनु गुरू नानक जन केरा जितु मिलिऐ चूके सभि सोग संतापे ॥ (पन्ना १६७)

कविता

लासानी धर्म-ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब

-श्री असगर हुसैन नगलिया*

गुरु ग्रंथ साहिब सा ग्रंथ नहीं, पावन और पुनीत।
आओ उतरें पार भवजल के, गुरबाणी से कर प्रीत।
अहंकार मिट जाये सब, रहे न मन का मान।
गुरबाणी जो पढ़े-सुने, निमख न रहे अभिमान।
इससे लेकर दिशा प्राणी, पाता है कल्याण।
पाप-कर्म की ओर कभी न, जाये उसका ध्यान ।
कीर्तन सुने, गायन करे, गुरबाणी संगीत।
गुरु ग्रंथ साहिब सा ग्रंथ नहीं, पावन और पुनीत।
'धुर की बाणी' है यह, गुरुओं-भक्तों का संदेश।
जीवन सफल बनाने को, है इसमें हर उपदेश।
मन तन शीतल हो जाये, मिट जायें सभी कलेश।
आपस में हो भाईचारा, प्यारा लगे धर्म व देश।
रहे न कोई वैर-भाव, होय सभी से प्रीत।
गुरु ग्रंथ साहिब सा ग्रंथ नहीं, पावन और पुनीत।
बाणी इसकी अनमोल है, फायदा देती थोक।
जो पढ़े-सुने और मनन करे, उसके संवरें तीनों लोक।
भक्त नामदेव-रविदास ने, शबद रचे अनमोल।
स्वयं-विश्वास से लरजते हैं, भक्त धंना के बोल।
राग-रागिनी में कीर्तन का, मधुर लगे संगीत।
गुरु ग्रंथ साहिब सा ग्रंथ नहीं, पावन और पुनीत।
भक्त सधना, रामानंद और भक्त परमानंद।
सूरदास के शबद का है, इसमें पूर्ण आनंद।
ज्ञान का भव्य भंडार है, सभी मिटाए द्वंद्व।
टूटों को जोड़े यह, छोड़े प्यार-सुगंध।
चहुं ओर फैले प्रकाश, हो अंधकार अतीत।
गुरु ग्रंथ साहिब सा ग्रंथ नहीं, पावन और पुनीत।
प्रभु के सब नाम हैं, ईश्वर, राम, रहीम।
ओअंकार, परमात्मा, पारब्रहम, करीम।
अकाल पुरख, हरि, गोसाईं, बीठल, बख्शनहार।
रब, ख़ालिक, मालिक, खुदा, अल्लाह, परवरदिगार।
जैसा चाहो पुकारो उसे, राखो अपने चीत।
गुरु ग्रंथ साहिब सा ग्रंथ नहीं, पावन और पुनीत।
मन की सब दुविधा मिटे, मिटे भूख और प्यास।
गुरमुख पाए सदैव ही, प्रभु-चरणों में वास।
चेहरे उनके खिल जाएं, रहते जो निराश।
बनी दूरी मिटने लगे, प्रभु लगने लगे पास।
सब के सब बंधन कटें, सुन मेरे मन-मीत।
गुरु ग्रंथ साहिब सा ग्रंथ नहीं, पावन और पुनीत।

*किसान आदर्श इण्डरमीडिएट कालिज, खादगूजर, जनपद-ज्योतिबाफूलेनगर-२४४२३१ (उ.प्र), मो ०९७५८९६१४६०

श्री गुरु रामदास जी की बाणी में गुरु और शिष्य का पारस्परिक संबंध

*-डॉ. अमृत कौर**

श्री गुरु अमरदास जी ने घुंघनियां बेच कर किरत करने वाले, उच्च गुणों से युक्त, आत्मिक ज्योति से जगमगाते चेहरे वाले युवक भाई जेठा जी की अति गरीबी की पारिवारिक पृष्ठभूमि की अवहेलना करते हुए उनके संयम, धैर्य, सत्य, संतोष, मृदुभाषी, धार्मिक वृत्ति और सेवा-भाव आदि गुणों का सम्मान करते हुए उन्हें अपनी बेटी बीबी भानी जी के लिए जीवन-साथी बनाकर, बाद में निश्चित कसौटी पर कस कर उन्हें गुरगद्दी का वारिस बनाकर श्री गुरु रामदास जी के रूप में चौथे गुरु साहिब स्थापित कर सही चुनाव का परिचय दिया। श्री गुरु रामदास जी ने अपने तन, मन और आत्मा की गहराइयों से उनकी अथाह श्रद्धा, भक्ति और सम्पूर्ण आत्मसमर्पण के साथ सेवा की। वे उन्हें अपना माता, पिता, गुरु, सखा मानते हुए उनके प्रति अपना हार्दिक आभार इन शब्दों में प्रकट करते हैं :

तूं गुरु पिता तूंहै गुरु माता तूं गुरु बंधपु मेरा सखा सखाइ ॥ . . .
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥ (पन्ना १६७)

भारतीय शैक्षणिक प्रणाली में गुरु-शिष्य का रिश्ता बड़ा पवित्र माना गया है। गुरमति के अनुसार गुरु अपनी दिव्य ज्योति द्वारा शिष्य के अज्ञान के अंधेरे को दूर कर उसकी आत्मिक ज्योति को जागृत करता है और एक समय आता है जब ज्योति, ज्योति में समा जाती है। गुरु अपनी आत्मिक शक्ति अपने शिष्य में समाहित कर, उसके आगे मस्तिष्क नवा, उसे अपनी गुरगद्दी का वारिस बना देता है।

श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी के पारस्परिक, सुखद, श्रद्धापूर्ण संबंध गुरु-शिष्य के पारस्परिक सुखद संबंधों का ज्वलंत उदाहरण हैं। गुरु के दिशा-निर्देशन के बिना शिष्य के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास संभव नहीं। गुरु 'मां' की तरह शिष्य का जीवन संवारता है :

जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि ॥
अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि ॥
तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि ॥
(पन्ना १६८)

जिस प्रकार मां अपने बच्चे को प्यार करती है, गऊ अपने बछड़े को प्यार करती है, सारंग वर्षा से प्यार करता है, इसी प्रकार गुरु अपने शिष्य से प्यार करता है :

माता प्रीति करे पुतु खाइ ॥
मीने प्रीति भई जलि नाइ ॥
सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइ ॥१॥ . . .
जिउ मिलि बछरे गऊ प्रीति लगावै ॥
कामनि प्रीति जा पिरु घरि आवै ॥
हरि जन प्रीति जा हरि जसु गावै ॥
सारिंग प्रीति बसै जल धारा ॥ . . .
गुरसिख प्रीति गुरु मिलै गलाटे ॥ (पन्ना १६४)

गुरु शिष्य के अज्ञान के अंधेरे को शिक्षा

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०४ (पंजाब), मो :९८१५१-०९९५७*

के दीपक से दूर करता है :

अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ ॥ (पन्ना ७८)

गुरु 'नाम' की अमूल्य बख्शिश के द्वारा शिष्य के जीवन को प्रकाशित करता है :

नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतिगुर पासि ॥
सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि ॥ (पन्ना ४०)

गुरु आध्यात्मिक शिक्षा के प्रकाश द्वारा शिष्य को विवेक बुद्धि प्रदान करता है, जिसके द्वारा लोभ, अहंकार, क्रोध आदि विकारों और अवगुणों का नाश कर शिष्य अपने जीवन में सद्गुणों का विकास करता है। शिष्य गुरु रूपी ज्ञान सरोवर में स्नान कर अपने अवगुणों का परिहार करता है :

गुर साधू अंम्रित गिआन सरि नाइणु ॥
सभि किलविख पाप गए गवाइणु ॥ (पन्ना ११३४)

गुरु के ज्ञान से आत्म-ज्योति प्रफुल्लित होती है और पुरख निरंजन (प्रभु) सम्मुख दिखाई देता है :

आतम जोति भई परफूलित पुरखु निरंजनु देखिआ हजूरि ॥ (पन्ना ११९८)

और ऐसे दयालु, प्रेम करने वाले गुरु पर शिष्य न्यौछावर होता है, दिन-रात उसकी सेवा करता है। अपने प्रिय गुरु के लिए उसके मन में इतना आदर, सम्मान और प्यार होता है कि वह उस पर प्राण न्यौछावर करने के लिए तैयार हो जाता है। वह उसका माता, पिता, मित्र, बालसखा सब कुछ बन जाता है :

सतिगुरु मित्रु मेरा बाल सखाई ॥
हउ रहि न सका बिनु देखे मेरी माई ॥ (पन्ना ९४)

शिष्य को गुरु और परमात्मा में कोई अंतर दिखाई नहीं देता। उसकी गुरु के प्रति श्रद्धा चरम सीमा पर पहुंच जाती है और उसे गुरु परमात्मा का साकार रूप दिखाई देने लगता है :

गुर गोविंदु गोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई ॥ (पन्ना ४४२)

गुरु और शिष्य एक दूसरे के लिए प्यार और सत्कार की भावना द्वारा उस धरातल पर पहुंच जाते हैं जहां गुरु और शिष्य में कोई अंतर नहीं रहता :

गुरू सिखु सिखु गुरू है एको गुर उपदेसु चलाए ॥ (पन्ना ४४४)

गुरु शिष्य के सम्मुख शीश झुकाता है। ऐसे आदर्श शिष्य के जीवन-निर्माण के लिए श्री गुरु रामदास जी दैनिक जीवन की एक दिनचर्या नियुक्त करते हैं जिसके अनुसार प्रत्येक गुरसिख प्रातः काल उठकर, स्नान-पानी से निवृत्त हो, गुरुद्वारे में, साधसंगत में प्रभु-गुण-गायन करने के लिए जाता है। सतिसंगत के बाद वह परिश्रम से आजीविका-अर्जन के लिए काम पर चला जाता है। उसके हाथ काम में और मन प्रभु में संलग्न रहता है। ऐसा शिष्य गुरु को अच्छा लगता है। गुरु ऐसे गुरसिक्ख की चरण-धूल मांगता है, जो स्वयं भी प्रभु का नाम जपता है तथा औरों को भी जपाता है :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ॥
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो

(शेष पृष्ठ २६ पर)

अठारहवीं सदी के सिक्ख जरनैल नवाब कपूर सिंघ

-डॉ. कुलदीप सिंघ हउरा

नवाब कपूर सिंघ ने १७३३ ई से लेकर १७५३ ई. तक पूरे बीस वर्ष पंथ को अगुआई दी तथा अपना समूचा जीवन सेवा में गुज़ारा। उन्होंने अपने जीवन-काल में ही दल खालसा की कमान स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को सौंप दी थी, जो १७८३ ई. तक स्वतंत्रता संग्राम की अगुआई करते रहे।

स. कपूर सिंघ का जन्म स. साधू सिंघ के घर गांव फैज़लपुर में १६९७ ई. में हुआ। सिक्खी-सिदक तथा गुरु-घर की सेवा स. कपूर सिंघ को विरासत में मिली।

बाबा बंदा सिंघ बहादर के समय स. कपूर सिंघ सेवा तो करते थे परंतु अभी ज्यादा उभर कर सामने नहीं आए थे। बाबा बंदा सिंघ बहादर तथा अन्य अनेकों सिंघों को शहीद करके मुगल सरकार यह समझ बैठी थी कि सिक्ख लहर हमेशा के लिए खत्म कर दी गई है, किंतु बात असल में यह नहीं थी, क्योंकि बाबा बंदा सिंघ बहादर के बाद सिक्खों ने अपने आंदोलन को जिस सरगर्मी से चलाया, वह इतिहास का एक शानदार एवं लासानी कांड है। यह संग्राम करते हुए सिंघों ने घर से बेघर होकर दुख, भूख मुश्किलें एवं मुसीबतें ही नहीं झेलीं बल्कि शहीदियां भी प्राप्त कीं। उन्होंने खोपरियां उतरवाईं, चरखड़ियों पर चढ़े, बंद-बंद कटवाये, परंतु अपना सिक्खी-सिदक कायम रखा।

इतिहासकार मैलकम के कहे अनुसार-- "इस भयानक समय में सिंघों ने जितनी भी चोटें खाईं, उतना ही वे ज्यादा ऊपर उठे। पंजाब की खेल-भूमि में बहादुर सिंघों की कौम उस गेंद की तरह थी, जिसको सभी ओर से मार पड़ रही हो, किंतु वो हमेशा आसमान की ओर उछलती रही हो।"

१७२६ ई में जकरिया ख़ान लाहौर का सूबेदार बना। उसने सिक्खों पर बहुत सारी सख़्तियां करनी शुरू कर दीं। डॉ. नारंग ने लिखा है कि उस वक्त सिंघ बनना मृत्यु को गले लगाने के तुल्य होता था। जिस मां के चार पुत्रों में से एक सिंघ सज गया होता, वह कहती, "बहन! मेरे अब तीन पुत्र हैं। एक तो सिंघ सज गया है।" जिसका भाव होता था कि जो सिंघ सज गया है, वो आज भी शहीद हुआ, कल भी हुआ।

इस मुश्किल के समय स. दरबारा सिंघ, स. बुड्ढा सिंघ, स. कपूर सिंघ, स. जस्सा सिंघ तथा स. गरजा सिंघ आदि मुखी सिंघ सारे सिंघों को जत्थेबंद करके रखते थे। वे सिंघों का उत्साहबर्धन किए रखते थे। जब सख़्तियां कर-करके समय की सरकार ने देख लिया कि सिंघ सख़्ती से दबाये नहीं जा सकते तो उन्होंने दिल्ली की सरकार की हिदायत पर सिंघों के साथ संधि करने की पेशकश की तथा सद्भावना के तौर पर सिंघों को नवाबी एवं जागीर भेजी।

स. सुबेग सिंघ लाहौर में सरकारी ठेकेदार थे। उनका सरकारे-दरबारे अच्छा असर-रसूख़ था। उनके द्वारा १७३३ ई. में नवाबी का खिताब तथा जागीर का पटा सिंघों को भेजा गया। जब स. सुबेग सिंघ नवाबी का खिताब तथा जागीर का पटा लेकर श्री अमृतसर आए तो सिंघों के अगुआ दीवान दरबारा सिंघ ने शाही सौगातें लेने से साफ इंकार कर दिया। 'प्राचीन पंथ प्रकाश' के कर्ता भाई रतन सिंघ

(भंगू) लिखते हैं :
हम को सतिगुर बचन पतिशाही।
हम को जापत ढिग सोऊ आही ॥३६॥ . . .
पतिशाही छड किम लहैं निबाबी।
पराधीन जिह मांहि खराबी ॥३८॥ (पन्ना २८५)

अर्थात् खालसे को सतिगुरु ने पातशाही बख़्शी है। वह पातशाही छोड़कर नवाबी क्यों ले, जिससे पातशाह के अधीन रहना पड़ेगा?

स. सुबेग सिंघ ने बहुत विनतियां कीं कि खालसे को यह जागीर लौटानी नहीं चाहिए। अगर, किसी व्यक्ति के लिए नहीं तो गुरु के लंगर के लिए ही प्रवान कर लो। आखिर फैसला यह हुआ कि नवाबी किसी सेवादार को दे दी जाये। स. कपूर सिंघ उस समय संगत में पंखे की सेवा कर रहे थे। आप जी को जब नवाबी कबूल करने के लिए मज़बूर किया गया तो आपने नवाबी का खिताब पहले पांच सिंघों के चरणों को स्पर्श किया, फिर उसको संगत का हुक्म मानकर प्रवान किया :
पंज भुजंगीअन चरनी छुहाइ।
धरो सीस मोहि पवित्र कराइ। . . .४७॥
(प्राचीन पंथ प्रकाश, पृष्ठ २८६)

झबाल, दीपालपुर तथा कंगणपुर गांवों की एक लाख की जागीर तो गुरु के लंगर के नाम लगा दी गई तथा ये वस्तुएं नवाब कपूर सिंघ को सौंप दी गईं-- "रेशमी दसतार, हीरों से जड़ी हुई कलगी, सुनहरी कड़े, एक हार, एक मोतियों की माला एवं एक कृपाण।"

नवाब बन जाने पर भी स. कपूर सिंघ की नम्रता उसी तरह ही रही तथा उसने सिंघ को विनती की कि उसको लंगर में सेवा करने से न रोका जाए और वे सेवा करते रहे।

सरकार का विचार था कि इस लालच में आकर सिंघ हमारे अधीन रहेंगे, किंतु सरकार को यह भी मालूम था कि दुनियावी लोभ, लालच या हकूमत का डर इस कौम को अपने निशाने से नहीं गिरा सकता। सिंघों ने इस शांति के समय का लाभ उठाते हुए अपनी जत्थेबंदी को तकड़ा करना शुरू कर दिया। उन्होंने अपना ध्यान धर्म-प्रचार की ओर भी लगाया। सरकार की कुटिल नीति के कारण भाई मनी सिंघ जी को बंद-बंद कटवाकर शहीदी-जाम पीना पड़ा। सरकार ने श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के गिर्द फौजी चौकियां बिठा दीं। इलाके के चौधरियों को ताड़ना की गई कि जिसके इलाके में सिक्ख जिंदा मिल गए, उस चौधरी का बुरा हाल किया जायेगा, अगर उसने इस बात की सूचना हाकिम तक न भेजी।

समय की स्थिति को मुख्य रखकर दल खालसा के के दो भाग कर दिए गए। एक का नाम 'बुड्ढा दल' और दूसरे का नाम 'तरुणा (तरना) दल' रखा गया। चालीस वर्षों से ज्यादा उम्र के सिंघ बुड्ढा दल में शामिल किए गए तथा अन्य नौजवान तरुणा दल में। बुड्ढा दल का मुखी नवाब कपूर सिंघ को नियुक्त किया गया। उसके साथ स. बाघ सिंघ हलोवालिया तथा स. हरी सिंघ थे। तरुणा दल के पांच जत्थे बनाए गए। उनके जत्थेदार बाबा दीप सिंघ जी, भाई करम सिंघ जी, भाई कान्ह सिंघ जी, भाई मीर सिंघ जी तथा भाई दसौंधा सिंघ जी नियुक्त किए गए।

१७३४ ई में दीवान दरबारा सिंघ अकाल चलाना कर गए तो बुड्ढा दल की सारी जिम्मेदारी नवाब कपूर सिंघ के कंधों पर आ गई। तरुणा दल के श्री अमृतसर के पांच मुख्य केंद्र (रामसर, बिबेकसर, लछमणसर, कौलसर तथा संतोखसर) थे। बुड्ढा दल का मुख्य कार्य धर्म-प्रचार तथा गुरु-स्थानों की सेवा-संभाल थी, परंतु जब पंथ पर कोई संकट आता एवं जालिम जुल्म करने पर आ जाते तो दोनों दल मिलकर शत्रु का मुकाबला करते थे। प्रत्येक जत्थे के पास अपना झंडा एवं नगाड़ा होता था। सरकार

द्वारा भेजी नवाबी प्रवान कर लेने के बाद भी सिंघों ने शस्त्र-विद्या के कौतुक निशानेबाज़ी, मल-अखाड़े आदि कायम रखे तथा जिस तरह सरकार का विचार था, सिंघ अपने निशाने से लापरवाह न हुए। फलस्वरूप, हकूमत ने १७३५ ई. में जागीर ज़ब्त कर ली। सरकार ने सिंघों पर अत्याचार उसी तरह जारी रखे। सख़्तियों का दौर शुरू हो गया। बुड्ढा दल नवाब कपूर सिंघ की जत्थेदारी तले मालवा की तरफ चला गया तथा वहां उन्होंने धर्म-प्रचार करना शुरू कर दिया। बाबा आला सिंघ ने बरनाले में नवाब कपूर सिंघ के जत्थे के हाथों अमृत छका। बहुत सारा इलाका जीतकर बाबा आला सिंघ को दिया गया।

यह वो समय था जब हिंदोस्तान के तख़्त पर मुहम्मद शाह रंगीले था। वह ऐशप्रस्त था। उसके राज्य के समय सिक्ख एवं मरहटे (मराठा) कौमी आज़ादी के लिए और भी जोश से काम कर रहे थे।

हिंदोस्तान के बादशाह की कमज़ोरी देखकर जनवरी, १७३९ ई. में नादिर शाह ने हिंदोस्तान पर हमला कर दिया। पंजाब के सूबेदार जकरिया ख़ान ने उसकी ईन मान ली। हिंदोस्तान की मुगल फौज ने करनाल के पास नादिर शाह की फौज का मुकाबला किया किंतु वो हार गई। नादिर शाह मारो-मार करता हुआ दिल्ली जा पहुंचा, कत्लेआम एवं लूटमार की। एक अनुमान के अनुसार ३० हज़ार बंदे उस कत्लेआम में मारे गए। सर जादू नाथ सरकार ने लिखा है-- "नादिर शाह ने १५ करोड़ रुपया नकद, ५० करोड़ रुपये का माल-सामान, तख़्त-ताऊस आदि दिल्ली से लूटा तथा ५० हज़ार हिंदू लड़के-लड़कियां गुलाम बनाकर ५ मई, १७३९ ई. को अपने देश लौट गया।"

कहा जाता है कि लगभग बीस हज़ार हाथी, घोड़े, ऊंट तथा खच्चरों आदि पर लूट का माल लादा हुआ था और कैदियों को जकड़कर बैलगाड़ियों पर लादा हुआ था।

इस मुश्किल के समय का सिंघों ने काफी लाभ उठाया तथा रियाड़की इलाके में गांव डल्लेवाली में एक छोटा-सा किला बना लिया। लूटमार का माल लेकर नादिर शाह सियालकोट की तरफ जा रहा था। उस इलाके में सिंघ भी रसद (खाद्य-सामग्री) के लिए निकले हुए थे। उस समय सिंघों की कमान नवाब कपूर सिंघ, स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया, स. बघेल सिंघ आदि जत्थेदार कर रहे थे। जब उनको पता चला कि नादिर शाह हिंदोस्तान की दौलत लूटकर यहां नौजवानों और युवतियों को गुलाम बनाकर अपने देश को ले जा रहा है, उनके कौमी गौरव ने उनको ललकारा और उन्होंने कई तरफ से छापे मारकर नादिर शाह की लूटमार का भार हल्का कर दिया तथा कैदी लड़के-लड़कियों को छुड़ाकर उनके घर पहुंचाया। यह देखकर नादिर शाह चकित रह गया तथा उसने जकरिया ख़ान से पूछा, "ये कौन हैं, जिन्होंने मुझे ललकारा है?"

जकरिया ख़ान ने उत्तर दिया : "ये लोग हिंदू-मुसलमानों से अलग किस्म के हैं। जंगल तथा पहाड़ इनका वतन है। घोड़ों की काठियां इनके घर हैं। हम इनको मार-मारकर थक चुके हैं, किंतु ये खत्म नहीं होते। हमने इनको देश-निकाला भी देकर देख लिया, किंतु ये हटते नहीं।"

नादिर शाह सुनकर हैरान हुआ और कहने लगा-- "वह समय दूर नहीं जब ये लोग अपनी चढ़दी कला सदका देश के हाकिम होंगे।"

यह बात सुनकर जकरिया ख़ान भयभीत हो गया तथा सिक्खों पर और भी सख़्ती करने लगा। वह सिंघों का नामो-निशान मिटा देना चाहता था।

मस्से रंघड़ ने श्री हरिमंदर साहिब का

अपमान किया। भाई महिताब सिंघ मीरांकोटिए एवं भाई सुक्खा सिंघ माड़ीकंबो ने उसको रसातल में पहुंचा दिया। इसी तरह भाई तारू सिंघ, भाई बोता सिंघ, भाई गरजा सिंघ आदि सिंघ लाहौर सरकार को ललकारकर शहीद हो गए। उस समय जो बोले सिंघों ने अपनी जरूरतों को मुख्य रखकर बनाए वे उनकी चढ़दी कला के प्रतीक थे, जैसा-- अकेले को सवा लाख, अंधे को सूरमा, रोटी को परशादा, लंगर खत्म हो जाने को लंगर मसताना हो गया आदि।

१४ अक्तूबर, १७४५ ई को सिंघ दीपावली के पर्व पर श्री अमृतसर इकट्ठे हुए तो जत्थेबंदी को तकड़ा करने के लिए विचारें हुईं। पच्चीस जत्थे बनाए गए। प्रत्येक जत्थे में सौ-सौ सिंघ होते थे। प्रत्येक सिंघ के लिए कृपाण एवं बंदूक रखनी जरूरी कर दी गई। नवाब कपूर सिंघ, स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया, स. नौध सिंघ शुकरचक्किया, स. हरी सिंघ भंगी तथा बाबा दीप सिंघ आदि पच्चीस जत्थेदार स्थापित किए गए।

'छोटा घल्लूघारा', जो १७४६ ई. में घटित हुआ, जिसमें ज़ालिम सरकार ने सिंघों का शिकार जंगली जानवरों की भांति किया, में सिंघों ने बड़ी मुश्किलें झेलीं। लगभग आठ हज़ार सिंघ इस घल्लूघारे में शहीदियां प्राप्त कर गए किंतु फिर भी इनके हौसले उसी प्रकार थे।

दीवान कौड़ा मल्ल जब लखपत राय का दीवान बना तो सिंघों के लिए कुछ शांति का समय आया, क्योंकि दीवान कौड़ा मल्ल भीतर से सिंघों का हितैषी था, इसीलिए सिक्ख इतिहासकारों ने इसको दीवान मिट्ठा मल्ल के नाम से याद किया है।

नादिर शाह के बाद अफ़गानिस्तान का हाकिम अहमद शाह अब्दाली बना। वह जनवरी, १७४८ ई में लाहौर आया तो शाह निवाज़ ख़ान जान बचाकर दौड़ गया। २९ मार्च, १७४८ ई. को 'सरबत्त खालसा' श्री अमृतसर में श्री अकाल तख़्त साहिब पर इकट्ठा हुआ। नवाब कपूर सिंघ ने जत्थेदारों को जत्थेबंद होने की प्रेरणा की। विचार-विमर्श के उपरांत समूची फौजी जत्थेबंदी का नाम 'दल खालसा' रखा गया तथा उसका सेनापति स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को स्थापित किया गया। नवाब कपूर सिंघ की नज़र इस नौजवान पर काफी देर से थी और वे चाहते थे कि अपने जीते-जी 'दल खालसा' की कमान सरदार आहलूवालिया को सौंप दें।

बाल्य अवस्था से ही दिल्ली में रहने के कारण स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया उर्दू रंग की पंजाबी बोला करते थे और सिंघ उनको मजाक से 'हमकी-तुमकी' कहा करते थे। स. जस्सा सिंघ जब इस मज़ाक से कुछ घबराये तो नवाब कपूर सिंघ ने बड़े प्यार से कहा, "बेटा! मैंने इस पंथ की सेवा करके ही नवाबी हासिल की है, अगर तू सेवा करता रहे तो क्या पता यह पंथ तुझे बादशाह बना दे।" नवाब साहिब की भविष्यवाणी शत-प्रतिशत सत्य साबित हुई। पंथ ने स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को 'सुलतान-उल-कौम' की पदवी बख़्शी। 'दल खालसा' का सदस्य अमृतधारी एवं शस्त्रधारी ही हो सकता था।

अप्रैल, १७४८ ई. में मीर मन्नू को पंजाब का सूबेदार बना दिया गया। इसके साथ सिंघों पर फिर एक सख़्ती का दौर शुरू हो गया। जलंधर के फौजदार अदीना बेग ने स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को मुलाकात के लिए बुलाया। उसकी नीयत में खोट देखकर आहलूवालिया ने मिलने से इंकार करते हुए कहा-- "मुलाकात तो हमारी-तुम्हारी लड़ाई में ही होगी। अब हमने शमशीर उठाई है तो तुम संधि चाहते हो, और आगे उठाएंगे तो मुलखगीरी होगी।"

श्री अमृतसर में राम राउणी किले में पांच

सौ सिंघ थे। उनको घेरा डाल लिया गया। दोनों तरफ से जमकर लड़ाई हुई, जो अक्तूबर, १७४८ से फरवरी, १७४९ ई तक जारी रही तथा इसमें दो सौ सिंघ शहीद हो गए। दीवान कौड़ा मल्ल की समझदारी से मुगलों ने राम राउणी का घेरा उठा लिया। कुछ महीनों के लिए शांति हो गई। दीवान कौड़ा मल्ल की कोशिशों का सदका परगना पट्टी के १२ गांवों तथा चूणीआं इलाके की जागीर पुन: सिंघों को मिल गई। नवाब कपूर सिंघ ने इस जागीर से खुला लंगर लगवा दिया।

यह सब कुछ होने के बावजूद गुप्त रूप से मीर मन्नू सिंघों को मार मुकाने की गुप्त तैयारियां करवा रहा था। खास तौर पर नौ सौ छोटी तोपें बनवाई गईं तथा सिंघों पर फिर सख़्ती का समय आ गया। इसी सख़्ती के कारण सिंघों में आम कहावत प्रचलित थी :

मंनू असाडी दातरी, असीं मंनू दे सोए।
जिउं जिउं मंनू वढ्दा, असीं दूण सवाये होए।

३ नवंबर, १७५३ ई को मीर मन्नू मर गया। उसकी मृत्यु की ख़बर सुनते ही सिंघ लाहौर पर टूट पड़े तथा बहुत-से बंदी बच्चों एवं सिंघणियों को छुड़ाकर ले आए। ये बच्चे एवं सिंघणियां जेलों में बंद थे और रोज़ाना बच्चों के टुकड़े करके माताओं की झोली में डाले जाते थे, ऊपर फेंककर नीचे बरछियों में पिरोए जाते थे। लक्ष्य, सिंघों का नामो-निशान मिटाना था। इतनी यातनायें झेलने के बावजूद भी सिंघणियां सिदक से न डोलीं। उन्होंने अपना जत-सत कायम रखा तथा सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाई।

नवंबर, १७५३ ई से अक्तूबर, १७५६ ई तक तीन वर्षों के समय में लाहौर में नौ हाकिम तबदील हुए। इसी राज्यगर्दी के समय सिंघों ने अपनी शक्ति काफी बढ़ा ली।

७ अक्तूबर, १७५३ ई को दल खालसा के महान अगुआ नवाब कपूर सिंघ श्री अमृतसर में अकाल चलाना कर गये। उनका अंतिम संस्कार गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब के पास किया गया।

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)

श्री गुरु रामदास जी की बाणी में . . .

(पृष्ठ २१ का शेष)

गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥
जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥ (पन्ना ३०५)

गुरु-शिष्य संबंधी श्री गुरु रामदास जी का यह शबद एक ऐतिहासिक महत्त्व रखता है जिसने नियमित दिनचर्या, अनुशासनबद्ध जीवन द्वारा गुरु-शिष्य का एक आदर्श स्थापित किया; उसकी दैनिक दिनचर्या का स्वरूप तैयार कर उसके नैतिक निर्माण में महान योगदान दिया।

श्री गुरु रामदास जी द्वारा दर्शाया यह गुरु-शिष्य का सुखद संबंध आज के भौतिकवादी युग में भी हमारा पथ-प्रदर्शन करता है। आज अध्यापक (गुरु) का काम उसका मिशन न रहकर अधिक से अधिक धन कमाने का साधन बन गया है। इसी प्रकार विद्यार्थी (शिष्य) के मन में भी वह सत्कार और श्रद्धा की भावना नहीं रही जो ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक शिष्य में होनी चाहिए। शिष्य भी आरामपसंद और आदर्शहीन बनता जा रहा है। आवश्यकता है इस प्राचीन आदर्श गुरु-शिष्य परंपरा को दुहराने की।

('सिक्ख गुरुओं की शैक्षणिक देन' से आभार सहित)

सुलतान-उल-कौम स. जस्सा सिंह आहलूवालिया

-डॉ. जीत सिंह 'सीतल'

जन्म एवं परवरिश : भाई कान्ह सिंह नाभा (कृत गुरशबद रतनाकर महान कोश) के अनुसार स. जस्सा सिंह आहलूवालिया स. बदर सिंह के घर गांव आहलू (ज़िला लाहौर) में १७१८ ई. में पैदा हुआ। इस घराने का प्रवर्त्तक स. साधू सिंह (सद्दा सिंह) था, जिसने गांव आहलू बसाया। इसका परपौत्र स. बदर सिंह नवाब कपूर सिंह फैज़लपुर का शिष्य था, जिसका देहांत १७२३ ई. में हो गया। उस समय स. जस्सा सिंह मात्र पांच वर्ष का था। माता सुंदरी जी ने इसको आशीर्वाद देकर एक गुर्ज़ की बख़्शिश की थी। पंथ में स. जस्सा सिंह का मान-सत्कार बहुत बढ़ गया। पटियाला-पति राजा अमर सिंह ने स. जस्सा सिंह से ही अमृत छका था। स. जस्सा सिंह ने १७४७ ई. में श्री अमृतसर के हाकिम सलाबत ख़ान को पार बुलाकर उसका बहुत सारा इलाका अपने अधीन कर लिया। स. जस्सा सिंह ने १७४९ ई. में शाहनवाज़ को मुलतान से खारिज करने के लिए दीवान कौड़ा मल्ल को भारी सहायता दी थी। १७५३ ई. में स. जस्सा सिंह ने जलंधर के हाकिम अदीना बेग को जीतकर फतेहबाद परगने पर कब्जा कर लिया।

जब अहमद शाह अब्दाली मरहट्टों को सोधकर, बहुत सारा लूटमार का माल-असबाब लेकर, हज़ारों हिंदू मर्द-स्त्रियों को बंदी बनाकर, लाहौर से गुजरकर वापिस काबुल जाने लगा तो स. जस्सा सिंह ने दूसरे सिंह-सरदारों को लेकर उससे बहुत सारा माल तथा सभी बंदियों को उनके घर पहुंचा दिया।

स. जस्सा सिंह ने बड़े घल्लूघारे में वीरता दिखाई। उसे बाईस जख़्म लगे फिर भी वो लड़ता एवं जूझता रहा। स. जस्सा सिंह महान धर्मवीर योद्धा, दानी, सच्चा हितैषी तथा बड़ा सदाचारी था। स. जस्सा सिंह का देहांत १७८३ ई. में श्री अमृतसर में हुआ। उसकी समाधि बाबा अटल राय जी के गुरुद्वारा साहिब के पास है।

स. कपूर सिंह ने अपने देहांत के समय अपने शूरवीर पालक स. जस्सा सिंह को कलगीधर पातशाह की वो कृपाण सौंपी थी, जो उनको माता सुंदरी जी से प्राप्त हुई थी। यह अमूल्य वस्तु रियासत के तोशेखाने में मौजूद रही। स. जस्सा सिंह को 'आहलूवालिया मिसल' की सरदारी (जत्थेदारी) मिली। उसने इस पदवी पर रहकर पंथ की भारी सेवा की।

अब स. जस्सा सिंह जी साखी शहीद भाई रतन सिंह (भंगू) की रचना 'पंथ प्रकाश' के हवाले से सुनें कि कैसे पंथ की शरण में आकर एक भिखारी बादशाह (पातशाह) बन गया :

दोहरा

साखी जस्सा सिंघ की, अब मैं दिउं सुनाइ।
मंगत खात खालसै रलयो, भयो पंथ पतिशाहि ॥१॥

स. आहलूवालिया कौम का एक गरीब कलाल आहलू गांव, निकट लाहौर का निवासी तथा गुरु का लाल दयाल सिंह (स. बदर सिंह) था। वह सब प्रकार के काम करता था। उसके देहांत के बाद उसकी पत्नी और एक पुत्र रह गए। मां-पुत्र का बहुत प्यार था। यह नारी सिंह घर की बेटी थी, जिसको उसके पिता ने गुरमुखी अक्षर पढ़ा दिए थे तथा गुरबाणी कंठ

करवा दी थी।

वह ससुराल एवं मायके दोनों तरफ से सिक्खणी थी। वह पोथी हमेशा अपने गातरे में डाल रखती तथा जहां कहीं सिंघों की संगत होती वहां पहुंचकर शबद-कीर्तन की चौंकी भरती। संध्या के समय प्रतिदिन 'सोदरि' का पाठ करती। वह दोतारा पकड़कर कीर्तन करती। उसका बाल-पुत्र तथा दासी बड़े प्रेम से उस कीर्तन में शामिल होते। दोनों वक्त वह शबद-कीर्तन करती। जहां कहीं भी सिक्ख संगत उसको कीर्तन करने के लिए बुलाती वह अवश्य पहुंचती।

उसने सुना कि दल खालसा श्री अमृतसर आया है। वह खालसा जी के दर्शन को श्री अमृतसर पहुंच गयी तथा वहां प्रेम सहित शबद-कीर्तन किया। पंथ ने सुना। सभी और शांति हो गयी। पंथ उस पर अति प्रसन्न हुआ। वह अच्छे वक्त वहां आई थी। नवाब कपूर सिंघ की नज़र उसके बालक पर पड़ी। उसने बालक को बुलाकर, उसको अमृत छकाकर सिंघ सज़ा दिया। उस बालक की माता को इस पर बहुत खुशी हुई। उसने अपने बालक का हाथ नवाब कपूर सिंघ के हाथ में पकड़ा दिया।

यह गुरु-घर की सच्ची श्रद्धालु तथा नित्य कीर्तन करने वाली उस बालक की माता थी, जिसका नाम स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया प्रसिद्ध हुआ :

अति प्रसंन पंथ तिस पर भयो,
भए वखत कित वहु थो आयो।
कपूर सिंघ लयो बाल बुलाइ,
कीयो सिंघ निज अंम्रत छकाइ ॥१०॥

यही बालक स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया था, जिसका हाथ उसकी माता ने नवाब कपूर सिंघ को पकड़ाया था :

दोहरा

माता भी उस हुइ खुशी, दीनी बांहि फड़ाइ।
भले भाग उस के भए, रहयो निबाबै पाहि ॥११॥

नवाब कपूर सिंघ ने उस बालक को अपने डेरे में ही रख लिया तथा घोड़ों को दाना डालने के काम में लगा दिया। दूसरे लोगों ने उस बालक को बहुत तंग किया और वह रोने लगा। रोते-रोते ही वह नवाब कपूर सिंघ के पास आया तथा कहा :

मैथों दाणा वरते नाहीं,
धौल धपो मुहि बहुत कराहीं ॥१३॥

इस पर नवाब कपूर सिंघ ने उसको प्यार (आशीर्वाद) दिया, सिर पर हाथ रखा और कहा-- "तूने घोड़ों को दाना देना है। अगर पंथ मुझे नवाबी बख़्श सकता है तो तेरे ताबिआ (अधीन) पातशाही (पादशाही, बादशाही) भी कर सकता है।"

बस, स. जस्सा सिंघ मानो निहाल हो गया। एक सच्चे सिंघ का कहा बेकार नहीं जाता। वह बालक जस्सा सिंघ 'पातिशाह जस्सा सिंघ आहलूवालिया' बना। ज़माने ने देखा, नवाब साहिब की बात सच साबित हुई :

कही बात मुख दयो पिआर,
तुध दाणों देणै बग्ग हज़ार ॥१४॥
हम तौ कीनो पंथ नवाबै,
तेरै करियुगु पतिशाही ताबै।
उसी वकत ते भयो निहाल,
शाहि कहायो जस्सा सिंघ कलाल ॥१५॥

निःसंदेह स. जस्सा सिंघ कलाल बादशाह बना, जिसने सिक्का चलाया तथा खालसा राज्य स्थापित किया। अहमद शाह अब्दाली का काबिज किया मुल्क अपने अधीन किया तथा इस तरह शाहों का शाह कहलाया।

'शमशेर खालसा' कृत ज्ञानी गिआन सिंघ (पन्ना १९६-९७) में दर्ज है कि जब अहमद शाह अब्दाली मरहट्टों पर विजय पाकर लाहौर वापिस लौटा तो लाहौर आकर वह तख़्त पर

बैठा तथा सभी चौधरियों, सरदारों, अमीरों आदि को हाजिर होने के लिए हुक्म किया। कसूर के मीर मुहम्मद ख़ान को इसलिए कैद कर लिया कि उसने सिंघों को रुपया दिया था। उस समय वह बीस-बाईस हज़ार हिंदू-मर्द, औरतें, बालक, बुजुर्ग, लड़कियां, लड़के रोते-कुरलाते पकड़कर बैलगाड़ियों पर बांधकर ले जा रहा था तो स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने सभी सिक्ख सरदारों को साथ लेकर उसको गोइंदवाल के पास ब्यास दरिया पार करते समय जा दबाया तथा कैदियों के बंधन काट दिये। सबको उनके घर पहुंचा दिया। यह अति परोपकारी, नेकनामी स. जस्सा सिंघ को आई। बादशाह लहू के घूंट भरता हुआ चला गया।"

'शमशेर खालसा' में बड़े घल्लूघारे के बारे में भी संकेत मिलता है कि "सभी सरदार तलवारें खींचकर, घोड़े दौड़ाकर दुर्रानियों में जा घुसे और बहुत भारी मार-काट की।"

"स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया तथा स. चढ़त सिंघ ने चार हज़ार शूरवीर लेकर तीन बार अहमद शाह अब्दाली से जूझने के लिए दुर्रानियों की सेना के चक्कर काटे। दो बार वह अब्दाली तक न पहुंच सका, परंतु तीसरी बार अब्दाली के नज़दीक जाकर स. जस्सा सिंघ ने गर्जकर कहा, "ऐ अहमद शाह! अगर तू मर्द है तो जिस तरह भी लड़ना चाहे आकर लड़। मेरा और तेरा दोनों का जंग हो और सारी खलकत देखे।" सिंघों ने बहुत ललकारा, परंतु अब्दाली का हौसला न हुआ और वह टल गया। (पृष्ठ २९८)

'चहारि बागि-पंजाब' कृत गणेश दास वडहिरा में स. जस्सा सिंघ कलाल आहलूवालिया के बारे में लिखा है :

ऊ तरफ़े-कपूरथला वगैरा अलम-अफ़-राज़ि
सलतनत शुद कि लशकरे-ऊ योधा दल गुफ्तंदे।

अर्थात् "स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया सरदार ने कपूरथला आदि की तरफ सलतनत का झंडा झुला दिया (पातशाह बन गया)। उसके लश्कर को 'योद्धा दल' कहते थे।"

इससे अभिप्राय यह है कि उस समय स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया योद्धा खालसा दल का मुखिया था।

राज खालसा के पहले चलाये सिक्के के बारे में गणेश दास (पृष्ठ १३०) पर लिखता है कि "स. जस्सा सिंघ, स. गंडा सिंघ, स. झंडा सिंघ आदि भंगी सरदारों ने १८२१ बिक्रमी अर्थात् १७६४ ई में चांदी के रुपये का सिक्का श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर टकसाल में चलाया तथा यह बैंत फ़तहि का सूचक उस पर लिखवाया :

देगो तेगो फतहि-ओ-नुसरत बेदरंग।
याफ़त अज़ नानक गुरू गोबिंद सिंघ।

नकोदर सराय, श्री अमृतसर, शहर लाहौर, सियालकोट, गुजरात आदि तथा पंजाब के सारे इलाकों में यह सिक्का प्रचलित हो गया और मुहम्मद शाही सिक्का चलना बंद हो गया।

इस सम्बंध में पंजाब के कट्टरवादी आलम कुछेक सिक्खों पर अन्य बैंत खुद उकराकर अहमद शाह के पास काबुल में ले गये (उसको भड़काने के लिए) तथा वह सिक्का वही था जिस पर खालसा सलतनत के जत्थेदार स. जस्सा सिंघ का नाम मुद्रित था (यह पहला सिक्का खालसा राज का था) और वह था :

सिक्का जद दर जहां ब-फ़ज़लि-अकाल,
तख़ति अहिमद गरिफ़्त जस्सा कलाल।

विद्वान मुसनिफ्फ (कर्ता पुस्तक) ने 'मुलकि-अहिमद गरिफ़्त' की जगह 'तख़ति-अहिमद गरिफ्त' लिखा है। अर्थ दोनों का एक ही है कि स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया का सदका, जो उस समय खालसा जी का प्रमुख जत्थेदार तथा सरदार था, सिंघ आज अहमद शाह अब्दाली के मारे मुल्क पंजाब के तख़्त-ताज के मालिक बन गये हैं। यह श्रेय माता सुंदरी जी की कृपा-दृष्टि तथा नवाब

कपूर सिंघ के चहेते स. जस्सा सिंघ कलाल को जाता है। बेशक स. आहलूवालिया खालसा राज्य की स्थापित का तेजस्वी जरनैल था, जो प्रचंड सूर्य की तरह पंजाब के धुंधले आकाश पर सिक्खों के जाहो-जलाल के प्रतीकवत चमक पड़ा तथा जिसने खालसा पातिशाही का सफेद दिन चढ़ा दिया। अफ़सोस, यह दोपहर जल्दी ही पंथ द्रोहियों की हीन चालों के कारण संध्या में ढल गई।

सरदार खुशवंत सिंघ 'हिसटरी ऑफ दा सिक्खस' (पृष्ठ १२३) में स. रतन सिंघ (भंगू) कृत 'श्री गुर पंथ प्रकाश' तथा अन्य इतिहासकारों की प्रौढ़ता करता हुआ लिखता है कि "स. जस्सा सिंघ कलाल, गांव आहलू (इसी कारण ही आहलूवालिया) में १७१८ ई. में जन्मा। पांच वर्ष की आयु में ही पिता स. बदर सिंघ का साया सिर से उठ गया। पहले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के महिल माता सुंदरी जी ने इसका पालण-पोषण किया तथा बाद में नवाब कपूर सिंघ ने उसकी देखभाल की।"

"उसने राय इब्राहिम भट्टी से कपूरथला छीन लिया तथा इस नगर को अपनी राजधानी बना लिया। स. जस्सा सिंघ की मृत्यु १७८३ ई. में श्री अमृतसर में हुई। उसकी कोई औलाद न होने के कारण स. भाग सिंघ उसका गद्दीनशीन बना, जो १८०१ ई. में कालवश हो गया तथा उसका लड़का स. फतहि सिंघ कपूरथला रियासत का वारिस बना, जो महाराजा रणजीत सिंघ का पक्का मित्र तथा शक्तिशाली समर्थक रहा।"

आगे चलकर स. खुशवंत सिंघ लिखता है कि "१७४५ ई. की दीवाली के समय सरबत्त खालसा ने गुरमता किया कि सारे जत्थों को २५ रेजिमेंटों में बांटकर नवाब कपूर सिंघ को परम जत्थेदार (कमांडर-इन-चीफ़) नियुक्त किया जाये। स. हरी सिंघ भंगी, भाई नौध सिंघ शुकरचक्कीआ, स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया तथा भाई जै सिंघ कन्हईया इन रेजिमेंटों में से प्रसिद्ध जरनैल थे, जिन्होंने पंजाब को मुगलों तथा विदेशी हमलावरों से मुक्त कराने में फैसलाकुन भूमिका अदा दी।

बेशक स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया एक सुप्रसिद्ध, महान तथा मुखी जत्थेदार (सरदार) था, जिसको पंजाब के सिरमौर तथा उच्च कोटि के योद्धाओं एवं शूरवीरों में सहज ही शुमार किया जा सकता है। नमस्कार है इस सच्चे-सुच्चे सिंघ को, जिसके शीश पर नवाब कपूर सिंघ का हाथ था तथा जिसको माता सुंदरी जी का चरण-स्पर्श प्राप्त था तथा उनकी कृपा-दृष्टि का पात्र था।

उस भयानक काल में सिक्ख बड़े सौभाग्यशाली थे, जिनको स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया, स. हरी सिंघ भंगी, स. चढ़त सिंघ शुकरचक्कीआ जैसे महान नेता तथा सरदार नसीब हुए। इन महान शूरवीरों ने विदेशी जाबिरों तथा हमलावरों से लोहा लिया और खालसा सलतनत के निर्माण में योगदान डाला। उसकी नीवों में अपना रक्त डाल कर उसको मज़बूत किया तथा साथ ही मुगलों व हमलावरों के लश्करों का यह तलिस्सम भी तोड़कर चकनाचूर कर दिया कि वे (मुगल फौज) अजेय तथा अजित हैं। इन सरदारों ने विदेशी जालिम शासकों का भ्रम भी देशवासियों के दिलों में से निकाल दिया। ये सरदार देश की स्वतंत्रता के प्रमुख तथा महान नेता थे, देश के मुक्ति-दाता थे।

नवाब कपूर सिंघ की सरदारी तथा बहादुरी का असल उत्तराधिकारी स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया ही था। उसकी बहादुरी का सिक्का जम चुका था, धांक जम चुकी थी और वही सरबत्त खालसा या दल खालसा का बेताज बादशाह प्रवान हो चुका था। नवाब कपूर सिंघ का १७५३ ई. में देहांत हुआ, किंतु १७४८ ई. की वैसाखी को श्री अमृतसर में जब सरबत्त

खालसा का भारी इकट्ठ हुआ तो स. जस्सा सिंघ उससे पहले मध्य पंजाब का मुख्य नेता तथा अजेय विजेता स्थापित हो चुका था।

अदीना बेग खां को होशियारपुर में करारी हार देकर उसके इलाके का शासक बनकर वह १७४८ ई की वैसाखी के समय श्री अमृतसर सरबत्त खालसा की बैठक में पहुंच गया। उसी जोड़ मेले पर सरबत्त खालसा ने गुरमता करके दल खालसा को ग्यारह मिसलों में बांटा था, तथा स. जस्सा सिंघ जहां आहलूवालिया मिसल का सरदार था, वहीं साथ ही वह सारी मिसलों का प्रमुख सरदार तथा सुप्रीम कमांडर भी स्थापित किया गया। *(स. खुशवंत सिंघ रचित 'ए हिसटरी ऑफ दी सिक्खस, पृष्ठ १३२)*

स. जस्सा सिंघ कलाल सचमुच ही लाहौर को विजय करने से खालसा पंथ का बादशाह बन चुका था। लोगों ने उसका भारी स्वागत किया। लोग अब स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को 'सुलतान-उल-कौम' कहकर बुलाने लग गए थे।

बाबा दीप सिंघ द्वारा आरंभ किए गए काम को सिरे चढ़ाने वाला भी स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया था। बाबा दीप सिंघ जी की शहादत के बाद जाबिर शासकों व मुगल पठानों को कभी न भूलने वाला सबक सिखाने के लिए स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने ही समूह मिसलदारों को यह बदला लेने के लिए ललकारा था तथा जलंधर तक मुगल पठानी फौज धकेलता हुआ १७५८ ई में उनको वापिस काबुल भाग जाने के लिए मज़बूर कर दिया। तैमूर (अब्दाली का पुत्र) तथा उसका चीफ़ कमांडर जहान ख़ान बड़ी मुश्किल से जान बचाकर भाग निकले। वज़ीराबाद के पास चिनाब दरिया से गुज़रते समय उनका सारा माल-असबाब भी लूट लिया गया तथा पठान लश्करियों को बांधकर श्री अमृतसर लाया गया और उनसे श्री हरिमंदर साहिब का सरोवर साफ-शुद्ध करवाया गया। अब्दाली ने जो अपमान श्री दरबार साहिब का किया था, उसका पूरा-पूरा बदला लिया। अब सिक्ख एक तरह से पंजाब के वाहिद हाकिम थे।

जिस तरह स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया खालसा राज्य स्थापित करने में भी सबसे आगे था तथा जिस आदर-सत्कार का पात्र था, उसके वह योग्य भी था तथा अहल भी। वह सरबत्त खालसा के साथ हर जगह खड़ा रहा। खालसा पंथ की शूरवीरता स्थापित करने में, वैरी व जाबिर को ललकारने में, बादशाही का झंडा गाढ़ने में, तख़्तो-ताज हासिल करने में, खालसा पंथ के सिर पर शाही छत्र झुलाने में, आज़ाद किए पंजाब पर, मुक्त किए देश की धरती पर खालसाई निशान साहिब गाढ़ने तथा उसको सबसे ऊंचा रखने में हर हाल में मदद की। आखिर तक मुसीबतों के समय भी घल्लूघारों में से बेशुमार जख़्म खा-खाकर, सैकड़ों साथियों को शत्रुओं के वार से बचाकर सुरक्षित जगह पर ले जाने में स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया सदैव खड़ा नज़र आया। खालसा राज्य का यह ऐसा महान रक्षक माता सुंदरी जी की आशीष तथा नवाब कपूर सिंघ की गुरु-भक्ति सदका ही खालसा पंथ को नसीब हुआ।

ऐसा महान नेता, परम गुरसिक्ख, शूरवीर सेनापति तथा सूझवान निर्माण-कर्ता था स. जस्सा सिंघ कलाल, गुरु का लाल, बादशाह सरदार, खालसा दलों का मुखिया, सुलतान-उल-कौम, फ़ख़र-उल-कौम, जिस पर गुरु-माता, पंथ-मुखिया तथा सिक्ख-संगत की कृपा की दृष्टि थी तथा उनका पूर्ण विश्वास प्राप्त था। महान वाक्य है :

जननी जणै ता भगत जन कै दाता कै सूर।

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब : सामान्य परिचय

*-डॉ. हरिसिमरन कौर**

विश्व में जितने भी मुख्य धर्म हैं उनके अपने-अपने धर्म-ग्रंथ हैं, जिनके अनुसार धर्म के सिद्धांत एवं नियम निर्धारित होते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिक्ख धर्म का मूल ग्रंथ है। इस पवित्र ग्रंथ का संपादन-कार्य सिक्ख धर्म के पांचवें गुरु साहिब श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा सन् १६०४ ई में सम्पूर्ण हुआ। इसमें ६ सिक्ख गुरु साहिबान, १५ भक्तों, ११ भट्टों के अलावा गुरु-घर के निकटवर्ती गुरसिक्खों की बाणी संकलित है। यह सारी बाणी ३१ रागों में लिखी गयी है। इस महान ग्रंथ के प्रथम स्वरूप को 'पोथी साहिब' तथा 'श्री आदि ग्रंथ साहिब' कहा जाता था, जिसका लिखित स्वरूप सिक्ख धर्म के विद्वान भाई गुरदास जी ने तैयार किया था। सिक्ख धर्म के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १०२ वर्ष बाद श्री आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ को दोबारा तैयार करवाया जिसे भाई मनी सिंघ जी ने लिखित रूप दिया। गुरु साहिब ने इस ग्रंथ के मूल प्रबंध और बाणी में कोई परिवर्तन नहीं किया। उन्होंने अपने पिता-गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी को अन्य पांच गुरु साहिबान की बाणी के साथ रागों के अनुसार दर्ज़ किया। यह नया स्वरूप ३० अगस्त, १७०६ ई में सम्पूर्ण हुआ।

सिक्ख धर्म में गुरु-परंपरा प्रथम गुरु श्री गुरु नानक साहिब से आरंभ होकर दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक चली। दसवें गुरु साहिब ने अपनी सांसारिक यात्रा पूरी करने से पहले शारीरिक रूप में गुरगद्दी की परंपरा को समाप्त करके सन् १७०८ ई में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को 'गुरु' स्थापित किया और सिक्खों को यह आदेश दिया कि वे 'शबद गुरु' को अपना 'गुरु' स्वीकार करें। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा चलायी यह प्रथा आज तक चली आ रही है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विलक्षणताएं अद्भुत हैं। गुरु साहिबान ने धार्मिक समन्वय की दृष्टि से सभी धर्मों के प्रति सम्मान प्रकट किया और सिक्ख मत को एक स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान करने का प्रयास किया। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक साहिब के पवित्र वचन हैं :

राह दोवै खसमु एको जाणु ॥
गुर कै सबदि हुकमु पछाणु ॥८॥
सगल रूप वरन मन माही ॥
कहु नानक एको सालाही ॥ *(पन्ना २२३)*

इस महान ग्रंथ में सम्पूर्ण मानवता के लिए उपदेश हैं। इसमें एक ईश्वर की शक्ति में विश्वास और सभी धर्मों में समानता एवं एकता का संदेश दिया गया है। गुरबाणी में जात-पात, वर्ग-भेद तथा ऊंच-नीच का खंडन करके मनुष्य-मनुष्य के बीच प्रेम तथा भाईचारे को महत्व दिया गया है :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ *(पन्ना १३४९)*

गुरु साहिबान ने मनुष्य को सहज मध्यम मार्ग अपनाने का संदेश दिया, जिसके लिए गृहस्थ जीवन को आवश्यक माना है। साधारण जीवन जीते हुए मन की पवित्रता को बनाए

**प्रोफेसर, हिंदी विभाग, दूरस्थ शिक्षा विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला-१४७००२, मो ९८७२३-१४१४१*

रखना जरूरी है :

विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै विचि पाणी हे ॥ (पन्ना १०७०)

गुरबाणी का उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना है। मनुष्य के लिए जरूरी नहीं कि वह ईश्वर की भक्ति के लिए घर-परिवार का त्याग करके जंगलों में भटकता रहे। वह गृहस्थ में रहकर अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए भक्ति कर सकता है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ (पन्ना ५२२)

गुरबाणी में मानवीय अधिकारों को विशेष महत्त्व दिया गया है। ये अधिकार चार प्रकार के माने गए हैं-- जीवन, स्वाभिमान, स्वतंत्रता एवं समानता सम्बंधी। गुरु साहिबान ने सभी मनुष्यों को एक समान मानते हुए सभी के द्वारा इन अधिकारों की प्राप्ति को उचित माना :

जीवतु मरै ता सभु किछु सूझै अंतरि जाणै सरब दइआ ॥
नानक ता कउ मिलै वडाई आपु पछाणै सरब जीआ ॥ (पन्ना ९४०)

सभी जीव एक ही परमपिता परमात्मा की संतान हैं। गुरमति दर्शन के अनुसार नारी और पुरुष में कोई भेद नहीं है। विश्व भर के साहित्य पर दृष्टि डाली जाए तो विदित होता है कि स्त्री-पुरुष सम्बंधों पर बहुत कुछ लिखा जाता रहा है। कई धर्मों में तो स्त्री को पुरुष से हीन समझा जाता है। गुरबाणी में दोनों को एक ही रूप माना गया है और यह इसकी अनुपम विलक्षणता है :

पुरख महि नारि नारि महि पुरखा बूझहु ब्रहम गिआनी ॥
धुनि महि धिआनु धिआन महि जानिआ गुरमुखि अकथ कहानी ॥ (पन्ना ८७९)

गुरु साहिबान ने स्त्री-रूप में बाणी की रचना करके स्त्री के स्वरूप को सम्मान दिया। श्री गुरु नानक साहिब ने स्पष्ट रूप में कहा कि उस स्त्री को बुरा क्यों कहा जाए जो बड़े-बड़े राजाओं को जन्म देती है? गुरबाणी में कन्या-वध, दहेज-प्रथा तथा सती-प्रथा आदि कुरीतियों की निंदा की गई है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सर्वगुण-सम्पन्न, आलौकिक एवं सम्पूर्ण ग्रंथ है। यह महान ग्रंथ मनुष्य के जीवन का केंद्रीय आधार माना जा सकता है, जिसमें आध्यात्मिक एवं सामाजिक आधार पर विश्व-बंधुत्व, अमन-शांति, सद्भावना एवं सहनशीलता का उपदेश दिया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी दिव्य एवं सत्य है जो मनुष्य को सद्गुणों का उपदेश देती हुई सदाचारी जीवन जीने का मार्ग दिखाती है। इसकी अमृत बाणी मानव-कल्याण के योग्य है और प्रशंसनीय है :

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥
अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥ (पन्ना १४२९)

गुरबाणी के उपदेशों को ग्रहण करके मनुष्य शांतिपूर्ण जीवन जी सकता है। नारी के आदर्श रूप का जो चित्रण गुरबाणी में हुआ है उसे अपनाकर प्रत्येक स्त्री अपने घर-परिवार को और अधिक सुखी बना सकती है।

हिंदी प्रदेशों के पाठकों के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब सम्बंधी आवश्यक जानकारी में यह बताना भी जरूरी प्रतीत होता है कि सिक्ख धर्म में दस गुरुओं का आगमन हुआ। प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में 'नानक' शबद का प्रयोग हुआ है। इनके बाद श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु तेग बहादर जी ने भी बाणी का उच्चारण किया। इन गुरु साहिबान ने भी अपनी बाणी में

'नानक' शबद का ही प्रयोग किया है। सिक्ख धर्म की यह पवित्र मान्यता है कि प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी की दिव्य ज्योति अन्य गुरुओं के महान अस्तित्व के रूप में अवतरित होती रही। सभी गुरुओं में एक ही दिव्य ज्योति विद्यमान रही जो अंततः शबद-रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में समाहित हो गयी। तभी तो इस पवित्र ग्रंथ को 'गुरु' का दर्जा प्राप्त है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सिक्खों के लिए फरमान कुछ यूं है :

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ।
सब सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ।
गुरू ग्रंथ को मानीओ प्रगट गुरां की देह।
जो प्रभु को मिलबो चहे खोज सबद मैं लेह।
(पंथ प्रकाश, कृत ज्ञानी गिआन सिंघ)

वैश्वीकरण के इस युग में जब मनुष्य अकेला रह गया है और निरंतर तनावपूर्ण जीवन जीने के लिए अभिशप्त है, ऐसे समय में पवित्र गुरबाणी विश्व के उद्धार के लिए और सारे संकटों-कलेशों से मुक्ति देने के लिए एक सार्थक एवं सम्पूर्ण साधन है। मनुष्य इस दिव्य ग्रंथ से शिक्षा ग्रहण करके *"गुरबाणी इसु जग महि चानणु"* के अनुसार अपने जीवन को रोशन कर सकता है और सुख प्राप्त कर सकता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र बाणी तीन भागों में संकलित है। प्रथम भाग में जपु जी साहिब तथा रहरासि साहिब की बाणी है (पन्ना १ से १३ तक), दूसरे भाग में गुरु साहिबान तथा अन्य बाणीकारों की बाणी को ३१ रागों में दर्ज़ किया गया है (पन्ना १४ से १३५२ तक), तीसरे भाग में शेष विविध बाणी एवं भट्टों के सवैये आदि शामिल हैं (पन्ना १३५३ से १४३०)।

इस पवित्र ग्रंथ में संकलित आलौकिक बाणी को 'प्रभु की बाणी', 'गोबिंद की बाणी', 'खसम की बाणी' और 'धुर की बाणी' कहा गया है। यह गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित वो पवित्र बाणी है जो 'धुर' अर्थात् ईश्वर के घर से सीधी आई है :

धुर की बाणी आई ॥
तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ (पन्ना ६२८)

गुरबाणी में 'शबद-गुरु' के सिद्धांत को चिंतन का आधार बनाया गया है। इसमें आत्मा और परमात्मा के मिलन का संदेश है जिसमें आत्मा 'स्त्री' का और परमात्मा 'पुरुष' का प्रतीक है। गुरबाणी के उपदेशों एवं संदेशों को अपनाकर मनुष्य ईश्वर की कृपा को प्राप्त कर सकता है। यह बाणी इतनी महान है कि संसार का कोई भी ज्ञान या विद्या इसकी तुलना नहीं कर सकती। यह सबसे महान है :

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (पन्ना ५१५)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं रहस्यवादी चिंतन तथा जीवन का दर्पण है। सिक्ख गुरु साहिबान ने जात-पात के भेदभाव एवं वर्गगत बंधनों से ऊपर उठकर धर्म-निरपेक्षता एवं बंधुत्व का समर्थन किया। गुरु-काल से लेकर वर्तमान समय तक श्री गुरु ग्रंथ साहिब को प्रमाणिक, पवित्र, गुरु-रूप तथा पूजनीय स्रोत के रूप में जो सम्मान प्राप्त हुआ है उसका कोई अन्य उदाहरण प्राप्त नहीं हो सकता। गुरु साहिबान ने इस पवित्र ग्रंथ को 'शबद-गुरु' के रूप में 'अकाल पुरख' (ईश्वर) का दूसरा रूप माना है। सिक्ख धर्म का सबसे बड़ा सिद्धांत है-- 'सरबत का भला' अर्थात् सबकी भलाई तथा कल्याण का भाव रखना। वर्तमान समय में मानसिक शांति एवं सुखी जीवन जीने के लिए इस महान ग्रंथ के उपदेशों को अपनाकर, सद्मार्ग पर चलते हुए मनुष्य अपने जीवन को सफल बना सकता है।

('श्री गुरु ग्रंथ साहिब में चित्रित स्त्री-पुरुष सम्बंधों का लौकिक महत्त्व' पुस्तक से धन्यवाद सहित)



खोज सबद मैं लेह

-स. कुलदीप सिंघ*

अध्यात्म के क्षेत्र में बाणी के चार रूप माने जाते हैं--परा, पश्यंती, मध्यमा तथा बैखरी। 'बैखरी' बाणी का वह रूप है जिससे हम संवाद करते हैं। 'पश्यंती' बाणी का वह रूप है जिसका ज्ञानी-विद्वान दृष्टा के रूप में दर्शन करते हैं। 'मध्यमा', 'पश्यंती' और 'बैखरी' के बीच का माध्यम है जो 'पश्यंती' को शब्दों एवं कल्पना के माध्यम से 'बैखरी' के रूप में बदलता है। बाणी के इन तीनों रूपों का मूल स्रोत 'परा' है जिसको 'धुर' भी कहते हैं। 'धुर की बाणी' रहस्यमयी है। इसकी ओर श्री गुरु अरजन देव जी संकेत करते हैं :

धुर की बाणी आई ॥
तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ (पन्ना ६२८)

यह 'धुर की बाणी' एक 'शबद' के रूप में होती है जो बिना किसी चोट के उत्पन्न होती है, इसी लिए इसे 'अनाहद नाद' भी कहते हैं। बाणी का यह स्वरूप जड़ को चेतन रूप में बदल देता है तथा जड़ या सृष्टि तत्व से पहले भी विद्यमान रहता है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने 'शबद' के लिए सुखमनी साहिब बाणी में 'नाम' का प्रयोग किया है:

नाम के धारे सगले जंत ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥
नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान ॥
नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥
नाम के धारे आगास पाताल ॥
नाम के धारे सगल आकार ॥
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥
नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥
करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥
नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥
(पन्ना २८४)

श्री गुरु अमरदास जी ने गुरबाणी को इस सृष्टि के लिए शीतल प्रकाश माना है जो प्रभु की कृपा से अंत:करण में निवास करती है:

गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आइ ॥ (पन्ना ६७)

गुरबाणी के अनुसार एक ही ज्योति से गुरु नानक साहिब ने काया पलट-पलट कर दस शरीर धारण किये :

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ (पन्ना ९६६)

जन्म-मरण से दूर इन परोपकारी जनों ने 'शबद' के माध्यम से सभी को हरि से मिलाने का प्रयत्न किया :

भागठड़े हरि संत तुम्हारे जिन्ह घरि धनु हरि नामा ॥
परवाणु गणी सेई इह आए सफल तिना के कामा ॥ . . .
जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥ (पन्ना ७४९)

वे धन्य हैं जिनके पास हरि-नाम की पूंजी है। प्रभु के दरबार में प्रतिष्ठित उनका इस लोक में आना सफल है। जन्म-मरण से दूर ये परोपकारी जन 'शबद' (नाम) के माध्यम से

*सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६, फोन : ०५३२-२६५७९६९

सभी को जीवन-दात देते हैं और भक्ति द्वारा हरि से मिला देते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी ने 'शबद' के साक्षात्कार का अपना अनुभव राग माझ की अंतिम पउड़ी में अंकित किया है--"मैं एक वीर गाथा गायक जनसामान्य था। मुझे प्रभु ने सत्कार्य में लगाया। कई बार प्रभु ने अपने स्वरूप से प्रेरणा दी। मुझे प्रभु ने अपने महल में बुलाया और स्तुति रूपी वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया। तब मुझे सत्य 'नाम' का अमृत भोजन मिला। मैंने प्रभु की मति के अनुसार खाकर सुख प्राप्त किया। उस प्रसाद को मैंने रागमय 'शबद' के रूप में व्यक्त किया और उस सच्चे की प्रशंसा करके पूर्ण परमेश्वर को प्राप्त किया।"

हउ ढाढी वेकारु कारै लाइआ ॥
राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइआ ॥
ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइआ ॥
सची सिफति सालाह कपड़ा पाइआ ॥
सचा अंम्रित नामु भोजनु आइआ ॥
गुरमती खाधा रजि तिनि सुखु पाइआ ॥
ढाढी करे पसाउ सबदु वजाइआ ॥
नानक सचु सालाहि पूरा पाइआ ॥ (पन्ना १५०)

इस प्रकार बाणी के मूल स्वरूप 'शबद' के दो रूप हैं--'अनहद नाद' और 'प्रकाश'। इन दोनों का वर्णन भक्त नामदेव जी ने राग सोरठि में किया है :

अणमड़िआ मंदलु बाजै ॥
बिनु सावण घनहरु गाजै ॥
बादल बिनु बरखा होई ॥
जउ ततु बिचारै कोई ॥१॥
मो कउ मिलिओ रामु सनेही ॥
जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥ (पन्ना ६५७)

मुझे मेरा प्रिय नाम मिल गया है जिसके मिलने से यह मानव-जन्म सार्थक हो गया है। अगर तत्व का विचार किया जाये तो मस्तक के ऊपरी भाग में अनहद नाद हो रहा है और बिना सावन के बादल-गर्जन हो रहा है तथा अमृत-रस झर रहा है।

'शबद' के ज्योति रूप का वर्णन भक्त नामदेव जी ने दूसरे शबद में किया है :

जब देखा तब गावा ॥
तउ जन धीरजु पावा ॥१॥
नादि समाइलो रे सतिगुरु भेटले देवा ॥१॥रहाउ॥
जह झिलि मिलि कारु दिसंता ॥
तह अनहद सबद बजंता ॥
जोती जोति समानी ॥
मै गुर परसादी जानी ॥२॥
रतन कमल कोठरी ॥
चमकार बीजुल तही ॥
नेरै नाही दूरि ॥
निज आतमै रहिआ भरपूरि ॥३॥
जह अनहत सूर उज्यारा ॥
तह दीपक जलै छंछारा ॥
गुर परसादी जानिआ ॥
जनु नामा सहज समानिआ ॥४॥
(पन्ना ६५६-५७)

सतिगुरु ने मुझे प्रभु से मिला दिया है; मुझ में अनहद नाद समाया हुआ है। जब मैं प्रभु को देखता हूं तब उसका गुणगान करके धीरज प्राप्त होता है। जहां ज्योति स्वरूप प्रभु का दर्शन होता है वहां अनहद नाद बजता है। आत्मा की ज्योति का परमात्मा से मिलन होता है। मैंने गुरु-कृपा से इसे जान लिया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु साहिबान ने अपने आध्यात्मिक अनुभव को बाणी रूप दिया है। इन शब्दों के अर्थ प्रभु से हमारा मिलन कराते हैं। गुरबाणी की इस निष्ठा को 'पंथ प्रकाश' के रचयिता ज्ञानी गिआन सिंघ ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के मुखारबिंद से व्यक्त किया

जब उन्होंने परलोक गमन से पूर्व पंथ के मार्गदर्शन की प्रार्थना की :

गुरू ग्रंथ को मानीओ प्रगट गुरां की देह।
जो प्रभ को मिलबो चहे खोज सबद मैं लेह।

दशमेश गुरु जी के इस आदेश की पुष्टि सभी सिक्ख स्रोतों से हो जाती है, जिनमें रहितनामे, पंथ प्रकाश और गुर बिलास शामिल हैं।

सामान्य अक्षरों से दृश्यमान जगत का वर्णन होता है। भाषा के ये अक्षर दृश्यमान अक्षरों की तरह नाशवान हैं, अत: न क्षरण होने वाला परमात्मा बाणी का विषय नहीं है :

बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि ॥
ए अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि ॥ *(पन्ना ३४०)*

भक्त कबीर जी उक्त विचार को स्पष्ट करते हैं कि प्रभु के कथन में अक्षर का प्रयोग होता है, तब हमारा मन कथ्य पर नहीं रहता। जहां अकथ्य है वहां शबद नहीं है। प्रभु कथ्य और अकथ्य के बीच है। वो जैसा है वैसा कोई नहीं देखता :

जहा बोल तह अछर आवा ॥
जह अबोल तह मनु न रहावा ॥
बोल अबोल मधि है सोई ॥
जस ओहु है तस लखै न कोई ॥ (पन्ना ३४०)

श्री अरजन देव जी ने सुखमनी साहिब में प्रभु के इस अक्षर को अमृत अक्षर कहा है, जिसका एक कण भी हमारा उद्धार कर सकता है :

बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर ॥
कीने राम नाम इक आख्यर ॥
किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥
ता की महिमा गनी न आवै ॥ (पन्ना २६२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वह युक्ति बताई गई है जो प्रभु-मिलन में सहायक है :

प्रभु मिलणै की एह नीसाणी ॥
मनि इको सचा हुकमु पछाणी ॥
सहजि संतोखि सदा त्रिपतासे अनदु खसम कै भाणै जीउ ॥ *(पन्ना १०६)*

गुरु साहिबान के द्वारा आध्यात्मिक समस्या प्रभु-मिलन का समाधान तीन सरल शब्दों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है--सिमरन, सेवा, सतसंग। दृश्य जगत के पीछे परम सत्ता 'नाम' है तथा दृश्य जगत 'रूप' है, जगत 'दात' है और प्रभु 'देने वाला' है।

सांसारिक मनुष्य भ्रम में भूले हैं और अपने जन्म-दाता प्रभु को खो रहे हैं। धृष्ट लोगों को सच्चा धर्म मीठा नहीं लाता, झूठ और द्रोह मीठा लगता है। इस प्रकार 'दात' प्यारी है और 'देने वाला' भूल गए हैं :

--ऐसे भरमि भुले संसारा ॥
जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥रहाउ॥
साचु धरमु नही भावै डीठा ॥
झूठ धोह सिउ रचिओ मीठा ॥
दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥
जाणै नाही मरणु विचारा ॥ (पन्ना ६७६)
--सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥
सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥(पन्ना २९०)

भाई वीर सिंघ के अनुसार नाम-सिमरन से अभिप्राय नामी के गुणों को धारण करना है। जीवन का दूसरा मार्गदर्शक सिद्धांत 'सेवा' है। आध्यात्मिक स्तर पर सेवा का अर्थ शबद-सुरति का विचार है। सेवा की अवधारणा सिक्ख धर्म के सामाजिक जीवन का अंग है। सतसंग को भी प्रभु की आराधना से जोड़ा गया है :

सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥
जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥ (पन्ना ७२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का शबद से प्रभु-खोज का मार्ग सहज और सरल है। गुरबाणी के शबद पुष्प के समान सुगंध से पूर्ण हैं; द्रवीभूत हृदय से उनके भाव तक पहुंचा जा सकता है।



सिक्ख नारी-अध्ययन : एक संक्षिप्त सर्वेक्षण

*-डॉ. गुरमेल सिंघ**

सिक्ख नारी या स्त्री सम्बंधी किए गए कार्य हमें कई रूपों में प्राप्त हैं। ये कार्य उपाधियों (**M.Phil., Ph.D. etc**) के लिए भी हुए हैं तथा उपाधि-निरपेक्ष, निरोल प्रचारात्मक दृष्टि से भी। साहित्यिक दृष्टि से सिक्ख नारी उपन्यासों, कहानियों आदि का कथानक भी बनी है तथा अकादमिक शोधों में अध्ययन वस्तु (**object of study**) भी। भाषा की दृष्टि से प्राप्त कार्य ज्यादा पंजाबी एवं अंग्रेजी में हैं तथा विधा (**form**) के पक्ष से ये स्वतंत्र पुस्तकें, पत्रिकाएं, पैंफलिटस आदि के रूप में प्राप्त हैं। इनके बिना पत्रिकाओं में लेख, पुस्तकों में अध्याय सेमीनार-पेपरों के संग्रह, कोशों में अंदराज़ (**entries**) आदि कई शक्लों में प्राप्त हैं। सामाजिक या संस्थागत दृष्टि से हुए गुरमति सम्बंधी कार्यों में 'स्त्री' एक अध्ययन-अंग के तौर पर शामिल रही है। इसी तरह ही दलित, मुक्ति या समानता आदि कार्यों का भी एक अध्ययन-अंग होना 'नारी' की अध्ययन मज़बूरी रही है। विषय की दृष्टि से सिक्ख नारी अध्ययन ज्यादातर नारी-संकल्प रोल, अहुदा, योगदान आदि पक्षों पर ही केंद्रित रहा है तथा काफी कार्य-इतिहास की प्रमुख स्त्रियों (जैसा कि गुरु-महिल, माताओं तथा बहादुर स्त्रियों) की जीवनी-मूलक सृजना के गिर्द। इक्का-दुक्का कार्य नारीवादी दृष्टि (**feministic perpectiv**) पर भी हुए हैं।

यहां हम सिक्ख नारी अध्ययन की एक संक्षिप्त सूची काल-क्रम के अनुसार पेश कर रहे हैं। जहां शीर्षक से स्पष्टता नहीं होती वहां थोड़ा विवरण भी दे दिया है। समय, स्थान तथा बौधिकता की सीमाओं के सम्मुख सिर्फ उन कार्यों की ही सूची है जो सीधे रूप में 'नारी' को केंद्रित करते हैं, विषय-दृष्टि चाहे कोई भी हो, प्राप्त हुए कार्यों को निम्नलिखित या संकेत किए अनुसार वर्गीकृत किया गया है :

१) पंजाबी

१.१ पुस्तकें/थीसिस

१.२ लेख/अध्ययन

२) हिंदी

२.१ पुस्तकें

२.२ अध्याय

३) अंग्रेजी

३.१ पुस्तकें

३.२ लेख/अध्याय

१. सीधे रूप में प्राप्त सिक्ख नारी को केंद्रित करने वाली रचनाओं-- १. १ में तथा १. २ में पत्रिकाओं के बिना पुस्तकों में दर्ज सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण अध्याय। यही नियम २ तथा ३ वर्गों पर भी लागू है।

४. फुटकल में अन्य विवरण हैं जिनका शीर्षक देना संभव नहीं तथा न ही वे कार्य यहां शामिल हैं। इस वर्ग में कुछ सूचनायें भी शामिल हैं।

१) पंजाबी

१.१ पुस्तकें/थीसिस

१) भाई किरपाल सिंघ, श्रीमती चरन कौर जी

*श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो. ९०४१०-४६३७२

का गुरमति आदरशक जीवन, लुधियाना, १९६३ (सिंघ सभा लहर के समय की एक आदर्शक सिक्ख बीबी का जीवन और योगदान, लगभग ५५ अध्याय/खंडों में)

२) केसर सिंघ मुलतानी, जीवन चरित्र, बीबी नानकी जी, (सोधक) भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुरु नानक मिशन बुक सोसायटी, कालेज रोड, लुधियाना, जनवरी-१९६९ (दूसरी बार, कुल १८ अध्याय)

३) ज्ञानी वरिआम सिंघ, इसत्री भगत माला, राम कौलसर, श्री अमृतसर, सितंबर, १९७१ (प्राचीन ग्रंथों में नारी-गाथाओं का संग्रह, ऐतिहासिक तथा मिथिहासिक, खासकर बाणीकार भक्तों की पत्नियों एवं माताओं के बारे में)

४) किरनजीत कौर, गुरु नानक बाणी में इसतरी दा संकलप, १९७२, एम. ए (पंजाबी के एक लेख की पूर्ति हेतु लिखा अप्रकाशित खोज-निबंध), पंजाबी विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला।

५) डॉ. महिंदर कौर (गिल), माता सुंदरी जी, आरसी पब्लिशर्ज़, चांदनी चौक, दिल्ली, १९७८ (जीवनी, देन आदि के बारे में २० अध्याय तथा २ परिशिष्टों में भी है)

६) डॉ. महिंदर कौर (गिल), गुरू-महिल गाथा, सिक्ख वुमेंस एसोसिएशन, रकाबगंज, नई दिल्ली, १९८१ (५ अध्यायों में बेबे नानकी जी, माता भानी जी, माता गंगा जी, माता गुजरी जी तथा माता साहिब देवां जी का आम जीवन-चरित्र। यही पुस्तक थोड़े बदलाव तथा विस्तार से 'गुरू-महिल' शीर्षक तले नवयुग पब्लिशर्ज़, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई)

७) जसवंत सिंघ (विरदी), माता तूं महान, दीपक पब्लिशर्ज़, माई हीरां गेट, जलंधर, १९८६ (गुरु परिवार की लगभग १८ महिलाओं/सुपत्नियों/माताओं/बहनों के सौंदर्यपरक रेखा-चित्र।)

नोट : इसी लेखक की रचना 'धंनु सु माता', मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली, २००० में उपरोक्त रेखा-चित्र (भाग दूसरा) में दोहराए गए हैं तथा (भाग पहला में) हिंदू इतिहास/मिथिहास की नारियों के रेखा-चित्र दिए हैं।

८) ज्ञानी हरी सिंघ मलार, जीवन कथा खालसे दी माता साहिब कौर, निरंजन सिंघ एण्ड संस, श्री अमृतसर, १९८६ (दूसरी बार)। ३८ अध्यायों की यह महत्वपूर्ण जीवनी-मूल्य रचना, २६ अध्यायों में थोड़े बदलाव से पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला से १९८८ में भी छपी।)

९) सिमरन कौर, प्रसिद्ध सिक्ख बीबीआं, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, १९९१, १७ सिक्ख नारियों (गुरु-महिल, माताएं, सिंघणियां, रानियां आदि के बारे में जीवनी-मूलक आम जानकारी। असल में यह प्रिंसीपल सतिबीर सिंघ के लेखों का संग्रह है।)

१०) डॉ. हरिंदर कौर, सो किउ मंदा आखीऐ, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, २००१ (दूसरी बार), (पंजाबी काव्य धाराएं गुरमति, सूफी, किस्सा, वीर आदि में नारी का स्वरूप तुलनात्मक दृष्टि में। यह कर्ता के **Ph. D.** थीसिस-१९७६ का प्रकाशित रूप है।)

११) रुपिंदरजीत कौर, सिक्ख धरम विच इसतरी दा सथान, २००२, फ़िलासफी विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला में तुलनात्मक (वेदी तथा सामी संदर्भ में) दृष्टि से हुआ **Ph. D.** का थीसिस, अप्रकाशित। (इस संकल्पात्मक कार्य में नारीवादी परिप्रेक्ष्य से अध्ययन/विश्लेषण पेश किया गया है।)

१२) ज्ञानी भजन सिंघ तथा प्रीतम कौर, इतिहासिक सिक्ख नारीआं, नेशनल बुक शॉप, चांदनी चौक, दिल्ली, २००३ (चार भागों में

बंटी इस पुस्तक में पहला भाग गुरु-महिल/ माताओं/ बहनों तथा सपुत्रियों; दूसरा भाग नारियों एवं रानियों, तीसरा भाग आज़ादी संग्राम दीआं तथा चौथा भाग समकालीन (१९४७ के बाद) सिक्ख नारियों के बारे में जीवनियां तथा योगदान, लगभग ३५ नारियों के बारे में।)

१३) डॉ. मेजर सिंघ, पंज पिआरे ते सिक्ख बीबीआं, विरसा संभाल पब्लिकेशन, लुधियाना, फरवरी, २००६ (७ अध्यायों में सिक्ख धर्म/ समाज में नारी का स्थान, भूमिका तथा वर्तमान मसले आदि।)

१४) प्रो. प्रभजोत कौर, बतीह सुलखणी, सुकृत लुधियाना, २००९ (नारीवादी लहर के विशेष संदर्भ में कुछ सिक्ख नारियों के रेखा-चरित्र तथा स्वरूप)

१५) परमजीत सिंघ मानसा (संपादक), सो किउ मंदा आखीऐ, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर, जनवरी, २००९ (वर्तमान सामाजिक स्थिति में मानवीय मूल्यों के ह्रास के संदर्भ में औरतों की स्थिति का सिक्ख संदर्भ : १५-१६ लेखों का संग्रह।)

१६) त्रिपत कौर, आदि ग्रंथ विच इसतरी दा संकलप, भाषा विभाग, पटियाला, पंजाब, २००९ (८ अध्यायों में तुलनात्मक संदर्भ)

१७) करम सिंघ, आदरशक सिंघणीआं, निरंजन सिंघ एण्ड संस, श्री अमृतसर, १९६९ (३० के लगभग गुरु-महिल/माताओं/बहादुर सिंघणियों, नीतिवेत्ता सिक्ख रानियों तथा धैर्यवान नारियों के जीवनी-मूलक विवरण)

१.२) पत्रिकाएं/ अध्याय

१) हरजिंदर कौर, सो किउ मंदा आखीऐ, चंडीगढ़, १९८० (पैंफलिट)

२) डॉ. दीवान सिंघ, सिक्ख धरम विच इसतरी दा संकलप, पन्ने ६४-६७, सिक्ख धरम बारे, श्री अमृतसर, १९८८ (पुस्तक में लेख)

३) डॉ. हरबंस सिंघ (चावला), समाज विच इसतरी दा दरजा, पन्ना २३५-२८१, गुरु ग्रंथ बाणी विच समकाली समाजक चित्तर, पंजाबी राईटर्स कोआ. सोसायटी नई दिल्ली, १९९० (शोध-कार्य का एक अध्याय)

४) जसबीर कौर खालसा, धंन सु जननी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब गुरमति सभा, १९९९ (पैंफलिट)

५) प्रिं: प्रभजोत कौर, मातावां दी विशेष जिम्मेवारी, गुरमति प्रकाश, श्री अमृतसर, दिसंबर २००१ (लेख)

६) भक्त पूरन सिंघ, सिक्ख बीबीआं दा पहिरावा, पिंगलवाड़ा, श्री अमृतसर, दिसंबर २००२ (पैंफलिट)

७) हरजिंदर कौर, सिक्ख धरम विच सिक्ख बीबीआं, गुरुद्वारा गज़ट, जनवरी, २००५ (लेख)

८) पिआरा सिंघ पदम (प्रो.) सिक्खी ते इसत्री जाति, पन्ने २९९-३०७ गुरु-घर, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, १९९७ (पुस्तक में एक लेख)

२) हिंदी

२.१ डॉ. महिंदर कौर (गिल) सिक्ख धर्म और नारी, नई दिल्ली, १९९५, गुरु-महिल और स्मरणीय नारियां।

२.२ डॉ. नवरत्न कपूर, नारी जाति, पृष्ठ १११-१२, खालसा पंथ, पटियाला, २००३ (निबंध)

२.३ डॉ. हरिसिमरन कौर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब में चित्रित स्त्री-पुरुष सम्बंधों का लौकिक महत्त्व, कल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१०

३) अंग्रेजी

३.१ पुस्तकें

1) Bhai Amar Singh, Stirring Stories of the Heroism of Sikh women of martyrdom of a Sikh youth : Anecdotes from Sikh History, The Anglo Sanskrit

Press, Lahor, 1906

2) B. S. Naggar, Maharani Jind Kaur, The Mother Queen of Maharaja Dalip Singh, K.B. Publications, Delhi-1975.

3) Jarnail Singh (Ed.), Sikh Women's Seminar, The Sikh Social and Educational Society, Wilowdale, 1985. Role, Community life, youth problems, participation, load ship etc. . .10 articles on women in Sikh Prespective.

4) M. K. (Gill) Dr., The Roll & Status of women in Sikhism, National Book Shop, New Delhi, 1985.

5) Daris, R. Jakkobsh, Relocation Gender in Sikh History, Oxford University Press, 2003.

6) Sawan Singh, Spirited Sikh Women, Sukrit Trust, Ludhiana, 2009, Life and Contribution some Sikh women.

३.२ पत्रिकाएं/ अध्याय

1) Surinder Singh (Johar), Women more than Equal, pp. 56-60, The massage of Sikhism, Delhi Sikh Gurdwara Parbandhak Committe, New Delhi, 1982 (article)

2) Harbans Singh, Status of women in Sikhism, in The Women of Punjab, (ed.) Yash Kohli, Chic Publications, Bombay, 1983 (article)

3) Gulcharh Singh, Women's Lib in Sikh Scriptures & Sociology, p.p. 38-43, The Sikh Review, Vol. 36, No. 411, 1988

4) J.S. (Grewal), A Gender Perspective of Guru Nanak in Women in Indian History : Social, Economic, Political and Cultural perpectives (Ed.) Kiran Pawar Visllon & Delhi, 1996.

5) O.P. Rashan (Ed.), Social Status of Sikh Women, P.P. 675-94 in Encypaedia of Sikhism : Religion or Culture, Vol. 1, Anmol Publications Pvt. Ltd., New Delhi, 1997.

6) Amrit Kaur (Raina), Education of Girls, P.P. 180-92, The Educational Philosphy of the Sikh Gurus, Language Department Punjab, Patiala, 1987 (Chapter) reprinted on various places and new titles, also in Punjabi.

7) Gurdeep Kaur, Gender Equality in political Ethics of Guru Granth Sahib, Deep and Deep Publication Pvt. Ltd., New Delhi, 2000.

8) R. N. Singh (Ed.) Socio, Economic Status of Sikh women, P.P. 196-240 in Encyclopaedia of Sikh Heritage, Vol. 3, Commonwealth, 2002 (Chapter)

9) Karam Singh Raju, Status of Women, P.P. 188-229 in Ethical Penception of world Religion (Hinduism, Budhism, Christianity, Islam and Sikhism). A comparative Study, Guru Nanak Dev University, Sri Amritsar, 2002 (Chapter)

10) Balwinder Kumari Arora, World Peace and Role of Women in the Context of Sikhism : Sociological Perspective, P.P. 153-157, in interfaith study of Guru Granth Sahib, (Ed.) Balwant Singh (Dhillon), Guru Nanak Dev University, Sri Amritsar, 2005 (Paper)

४) फुटकल : जैसा कि भूमिका में संकेत किया गया था, सिक्ख नारी सम्बंधी और भी कई रूपों

में हमें अध्ययन-कार्य मिलते हैं। साहित्यिक रूपों में उपन्यास ज्यादा प्राप्त हैं, जैसे भाई वीर सिंघ के सुंदरी, सतवंत कौर आदि। इनके अंग्रेजी अनुवाद भी उपलब्द हैं, जैसे :
Sundri (tr.) Gobind Singh Mansukhani, Bhai Vir Singh Sahitya Sadan, New Delhi, 1988 या **Satwant Kaur (tr.) Ujagar Singh Bawa ibid.** उदाहरण के लिए प्रिं निहाल सिंघ का ऐतिहासिक उपन्यास माई भागो, श्री अमृतसर, २००५ (तीसरा ऐडीशन) भी देखा जा सकता है।

ज्यादातर कार्य सिक्ख नारी संकल्प/सिद्धांत के अवचेतन में नैतिक तथा शिक्षादायक दृष्टि से लिखा गया है। इस तथ्य की खूबसूरत मिसाल प्रिं. सुरजीत सिंघ भाटिआ की पुस्तक 'धीआं धिआणीआं', लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, २००५ पेश की जा सकती है, जिसमें उन्होंने लगभग ३४ शीर्षकों तले सिक्ख सभ्याचार/धार्मिक विरसे के अवचेतन में समकालीन बच्चियों/पुत्रियों के साथ संवाद रचाया है।

पंजाबी/अंग्रेजी की अनेकों रोज़ाना (दैनिक), साप्ताहिक या मासिक, छमाही पत्र/पत्रिकाएं, जैसे गुरमति प्रकाश, सिक्ख फुलवाड़ी, आतम रंग, मिशनरी सेधां, **Punjab Past & Present; Punjab History Conference Proceedings, The Sikh Review, Abstract of Sikh Studies** आदि में अनेकों लेख/कविताएं नारी सम्बंधी छपते ही रहते हैं।

अनेक पुस्तक सूचियों में अन्य किताबों/पत्रिकाओं की तालाश भी की जा सकती है, जैसे शमशेर सिंघ अशोक, पंजाबी प्रकाशनों की सूची (२ भाग), पटियाला, १९६३ या **Dr. Ganda Singh, Bibliography of the Punjab, Patiala, 1966.**

इसके अलावा **International Bibliography of Sikh Studies** के **'Sikh Women'** भाग में भी सिक्ख नारी अध्ययन सम्बंधी भारी मात्रा में स्रोत-सूचना प्राप्त हो सकती है।



कविता

वृक्ष लगाओ!

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

वृक्ष लगाओ दुनिया बचाने के लिए।
प्यारी धरा हरी-भरी बनाने के लिए।
हमारे जीवन में हर एक खुशहाली,
लाती है पेड़-पौधों की हरियाली,
जुट जाओ पेड़-पौधे लगाने के लिए।
वृक्ष लगाओ दुनिया बचाने के लिए।
हर सांस के लिए वृक्ष बने सहारा,
धरती का मुख रखें सुंदर व प्यारा,
धरती को धुएं से बचाने के लिए।
वृक्ष लगाओ दुनिया बचाने के लिए।
बादलों को वर्षा के लिए बुलाते हैं,
वृक्ष हमें धूप और गर्मी से बचाते हैं,
यत्न करो इन्हें और बढ़ाने के लिए।
वृक्ष लगाओ दुनिया बचाने के लिए।
पर्यावरण का संतुलन जो बिगड़ गया,
समझो हर गांव और शहर उजड़ गया,
यह बात समझने-समझाने के लिए।
वृक्ष लगाओ दुनिया बचाने के लिए।



**बी-एक्स ९२५, मुहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

गुरबाणी चिंतनधारा : ६३

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*–डॉ मनजीत कौर**

आठवीं असटपदी

सलोकु ॥
मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥
नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥१॥
(पन्ना २७२)

आठवीं असटपदी के सलोक एवं सम्पूर्ण असटपदी में ब्रह्मज्ञानी के लक्षण पंचम पातशाह धन्य-धन्य श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा प्रतिपादित किए गए हैं। प्रभु-रूप पंचम पातशाह ने सहज-सुंदर शब्दावली में ब्रह्मज्ञानी की अवस्था को निरूपित किया है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिसके हृदय एवं मुख में परमेश्वर का सच्चा नाम निवास करता है और जो केवल पारब्रह्म परमेश्वर के अतिरिक्त किसी और को नहीं देखता, हे नानक! यही लक्षण पूर्ण ब्रह्मज्ञानी के हैं।

जिस प्राणी के हृदय में सदैव कायम रहने वाला प्रभु निवास करता है तथा वो मुख से भी सदैव उसी का सिमरन करता है, वह एक अकाल पुरख के अतिरिक्त किसी और की कल्पना ही नहीं करता। इन्हीं गुणों के कारण वह पूर्ण ब्रह्मज्ञानी हो जाता है।

असटपदी ॥
ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥
जैसे जल महि कमल अलेप ॥
ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥
जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥
ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥
ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥
ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१॥

आठवीं असटपदी की पहली पउड़ी में पंचम पातशाह ने कमल, जल, अग्नि, धरती आदि अनेक उदाहरण देकर ब्रह्मज्ञानी के लक्षणों को उजागर किया है। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि ब्रह्मज्ञानी सदैव निर्लेप (बिदाग) बना रहता है। जैसे कमल का फूल कीचड़ में उगा होने के कारण भी उसके प्रभाव से निर्लिप्त रहता है, इसी तरह बह्मज्ञानी संसार रूपी भवसागर में रहते हुए भी विकारों के कीचड़ से निर्लेप रहता है। आगे गुरु पातशाह सूर्य का उदाहरण देकर ब्रह्मज्ञानी के स्वभाव का वर्णन करते हैं कि जैसे सूर्य समस्त स्थानों से जल को सोख लेता है अर्थात् सभी रसों को सुखा देता है वैसे ही ब्रह्मज्ञानी समस्त पापों को सुखाकर समाप्त कर देता है। डॉ जोध सिंघ ने इस पंक्ति का अर्थ इस तरह किया है कि ब्रह्मज्ञानी सूर्य की भांति पक्षपात से सदैव विहीन होता है, क्योंकि सूर्य अच्छे-बुरे सब स्थानों से जल को सोख लेता है। भाई वीर सिंघ ने इस पंक्ति का अर्थ इस प्रकार किया है-- जिस प्रकार सूर्य प्रत्येक गीली वस्तु को सुखा देता है, परंतु स्वयं पानी से प्रभावित नहीं होता, उसी प्रकार ब्रह्मज्ञानी सब मायामय पदार्थों में रहता हुआ भी उनके प्रभाव से निर्लिप्त रहता है। आगे गुरदेव हवा की प्रवृत्ति से ब्रह्मज्ञानी की तुलना करते हुए फरमान करते हैं कि जैसे पवन राजा एवं

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

रंक (अमीर एवं गरीब), सबको बराबर सुख पहुंचाती है ठीक उसी तरह ब्रह्मज्ञानी की समदृष्टि होती है अर्थात् वो बिना किसी भेदभाव के सबको समान दृष्टि से देखता है, सबको समान सुख देता है। ब्रह्मज्ञानी भेदभाव से ऊपर उठकर सबके साथ एक-सा व्यवहार करता है। ब्रह्मज्ञानी सदैव स्थिर बुद्धि रहता है अर्थात् उसके साथ कोई कैसा भी व्यवहार करे, वह सदैव धैर्यवान रहता है, ठीक वैसे ही जैसे अगर कोई धरती को खोदता है या कोई उस पर चंदन का लेप करता है, वह सदा बेपरवाह रहती है और दोनों को समान रूप से सहन करती है। श्री गुरु अरजन देव जी पहली पउड़ी की अंतिम पंक्ति में अग्नि (आग) के गुण के साथ ब्रह्मज्ञानी के स्वभाव की तुलना करते हुए कथन करते हैं कि जैसे अग्नि का सबको निर्मल करने का स्वभाव है, वैसे ही ब्रह्मज्ञानी का हृदय निर्मल गुण से भरपूर होता है। प्रो. साहिब सिंघ ने इस पंक्ति के अर्थ इस प्रकार किए हैं-- जैसे आग का कुदरती स्वभाव है कि प्रत्येक वस्तु की मैल जला देना, ब्रह्मज्ञानी मनुष्य का भी यही गुण है।

ब्रह्मज्ञानी इस मायिक संसार में रहते हुए भी इसके प्रभाव से पूर्णतया निर्लेप है। स्वयं ईश्वर से साक्षात्कार कर, ब्रह्मस्वरूप होकर, द्वैत से ऊपर उठकर, सहज अवस्था में स्थिर होकर वह सबके साथ एक-सा व्यवहार करता है। परमेश्वर की तरह ब्रह्मज्ञानी के गुण भी अनंत हैं। ब्रह्मज्ञानी पर सुख-दुख का प्रभाव नहीं पड़ता। उसके लिए वैरी-मित्र सब समान हैं। वह तो निरंतर प्रकृति के अनुसार एक-सी मर्यादा में चलता है। ब्रह्मज्ञानी की महिमा अपरंपार है।

ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥
जैसे मैलु न लागै जला ॥
ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥
जैसे धर ऊपरि आकासु ॥
ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥
ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥
ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥
मन अपने है सभ ते नीचा ॥
ब्रहम गिआनी से जन भए ॥
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥

दूसरी पउड़ी में पंचम पातशाह ने ब्रह्मज्ञानी की उपमा करते हुए उसे सर्वश्रेष्ठ माना है, क्योंकि ईश्वर जैसे गुणों के मालिक होते हुए भी ब्रह्मज्ञानी स्वयं को विनम्रता के कारण तुच्छ मानता है।

गुरु पंचम पातशाह फरमान करते हैं कि ब्रह्मज्ञानी पवित्र से पवित्र अर्थात् पवित्रतम् स्वरूप होता है। जैसे पानी को मैल नहीं लगती, वह निर्मल ही रहता है, ठीक उसी तरह ब्रह्मज्ञानी को भी विकारों की मैल नहीं छूती, वह महा निर्मल है। जैसे धरती पर आसमान (आकाश) पूर्णतया फैला हुआ है, उसी प्रकार ब्रह्मज्ञानी के हृदय में व्यापकता से ईश्वर का नूर (प्रकाश) समाया हुआ है। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि ब्रह्मज्ञानी के हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है, फलस्वरूप उसे जर्रे-जर्रे में प्रभु की विद्यमानता दृष्टिगत होती है। ब्रह्मज्ञानी को मित्र एवं शत्रु (दोस्त एवं दुश्मन) एक-से प्रतीत होते हैं। उसके लिए अपने एवं बेगाने का भेद तिरोहित हो जाता है अर्थात् पूर्णतया मिट जाता है। ब्रह्मज्ञानी को लेशमात्र भी अहंकार नहीं रह जाता। ब्रह्मज्ञानी की आत्मिक अवस्था सर्वोत्तम हो जाती है। इतनी ऊंची अवस्था के मालिक होने के बावजूद भी वह स्वयं को सबसे नीचा (तुच्छ) समझता है। गुरुदेव अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि वस्तुतः वही ब्रह्मज्ञानी बनते हैं जिन्हें प्रभु खुद बनाता है अथवा जिनकी आत्मिक अवस्था को इस कद्र ऊंचा करके ब्रह्म का ज्ञान करवा देता

है, वही जीव ब्रह्मज्ञानी बनता है।

ब्रह्मज्ञानी कर्मों-संस्कारों से पूर्णतया निर्मल, पवित्र-स्वरूप होकर, समस्त विषय-विकारों की मैल से मुक्त, वैरी-मित्र की द्वैत भावना से ऊपर उठकर शुद्ध स्वरूप खरा सोना हो जाता है।

अत्यंत ऊंची आत्मिक अवस्था का मालिक होने के बावजूद भी वह अंह-भाव से पूर्णतया रहित, नम्रता का पुंज होता है। ऐसे निर्मल हृदय-भक्त, जिन्हें वह परिपूर्ण परमेश्वर स्वयं ब्रह्म-ज्ञान बख्शकर ब्रह्मज्ञानी की पदवी प्रदान करता है, वही ब्रह्मज्ञानी है। प्रस्तुत पउड़ी में वैरी-मित्र के साथ समतापूर्वक व्यवहार बहुत ऊंची साधना है अन्यथा सारा संसार मोहवश **'मैं-मेरी'** में तथा ईर्ष्या-द्वैतवश दूसरों को अपना दुश्मन समझता हुआ सारा जीवन इसी उलझन में उलझकर पाप-कार्य की ओर प्रवृत्त होता रहता है, जबकि बाणी हमें मानवतावादी दृष्टिकोण को मज़बूत करने हेतु यही हिदायत करती है :

ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ *(पन्ना १२९९)*

यही नहीं, यह ऊंची आत्मिक अवस्था जिसे प्रभु स्वयं बख़्शता है वही भक्त ब्रह्मज्ञानी बन जाता है, यथा :

तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥
नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥
जिसु तूं देहि सु त्रिपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥ *(पन्ना ९७)*

वह परमेश्वर स्वयं ही जीव को गुरमुख बनाकर उसे मुक्त कर देता है, अन्यथा मनुष्य जीव तो आवागमन में ही भटकते रहते हैं।

ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥
आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥
ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥
ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥
ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥
ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥
ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥
ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥
ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥
नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥३॥

प्रस्तुत पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ब्रह्मज्ञानी के अति विनम्र स्वभाव एवं समदृष्टि का उल्लेख करते हुए पावन फरमान करते हैं कि ब्रह्मज्ञानी समस्त जीवों की चरण-धूलि बनकर विचरण करता है अर्थात् अत्यंत विनम्रता का धारणी होता है। (इस गुण के कारण) ब्रह्मज्ञानी ने आत्मिक आनंद (रस) को समझ लिया है। ब्रह्मज्ञानी की प्रसन्नता समस्त जीवों पर बनी रहती है। ब्रह्मज्ञानी का किसी के साथ कोई वैमनस्य नहीं होता। ब्रह्मज्ञानी किसी निम्न स्तर का काम नहीं करता अर्थात् ब्रह्मज्ञानी से कभी कुछ भी बुरा नहीं होता। ब्रह्मज्ञानी सदैव समदर्शी अर्थात् सबको एक समान देखने वाला बना रहता है। ब्रह्मज्ञानी की दृष्टि से सदैव अमृत बरसता रहता है। ब्रह्मज्ञानी समस्त बंधनों (विकारों) से मुक्त होता है। ब्रह्मज्ञानी के जीने की कला (जीवन-युक्ति) अत्यंत निर्मल एवं पवित्र होती है। ब्रह्मज्ञानी की खुराक (भोजन) ज्ञान है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि ब्रह्मज्ञानी सदैव ब्रह्म में लीन रहता है अर्थात् उसका ध्यान सदा परमेश्वर के चरणों में लगा रहता है।

ब्रह्मज्ञानी विनम्रता का पुंज होता है। वह कदाचित किसी का बुरा नहीं सोच सकता। उसका व्यवहार निर्मल होता है। वह सबको समान दृष्टि से देखता है। उसकी पावन दृष्टि से मानो अमृत का निर्झर निरंतर बहता रहता है। ब्रह्मज्ञानी की आत्मा की खुराक उस पारब्रह्म परमेश्वर का नाम है जिसके बिना जीवन की कल्पना ही नहीं। ब्रह्मज्ञानी की सुरति (चित्त) सदैव अकाल पुरख से जुड़ी रहती है।

इस संदर्भ में यह तो स्पष्ट है कि जैसे

शरीर को सही रूप से कार्यशील रखने हेतु भोजन की आवश्यकता है ठीक वैसे ही आत्मा को सही अवस्था में रखने हेतु भजन (बंदगी) ही आवश्यकता पड़ती है। आध्यात्मिक दृष्टि से इस खुराक के बिना आत्मा दुर्बल पड़ जाती है और ज्यादा समय तक भजन-बंदगी की खुराक न मिले तो आत्मिक मौत भी हो जाती है। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है :

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥
आखणि अउखा साचा नाउ ॥
साचे नाम की लागै भूख ॥
उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥
सो किउ विसरै मेरी माइ ॥
साचा साहिबु साचै नाउ ॥ *(पन्ना ९)*

गुरु पंचम पातशाह ने इसी चिंतन को स्पष्ट किया है कि ब्रह्मज्ञानी की आत्मिक खुराक परमेश्वर की बंदगी है, जिसकी बदौलत वह निर-अभियानी (अहंकार से रहित) होकर स्वयं को सबकी चरण-धूल समझता है, जैसा कि भक्त कबीर जी का पावन फरमान है :

कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ ॥
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ॥
(पन्ना १३६४)

ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥
ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥
ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥
ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥
ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा ॥
ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा ॥
ब्रहम गिआनी कै होइ सु भला ॥
ब्रहम गिआनी सुफल फला ॥
ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु ॥
नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ब्रह्मज्ञानी के विलक्षण गुणों का वर्णन करते हुए पावन फरमान करते हैं कि ब्रह्मज्ञानी का विश्वास केवल एक अकाल पुरख परमेश्वर पर सदा कायम रहता है अर्थात् किसी भी परिस्थिति में ब्रह्मज्ञानी का विश्वास लड़खड़ाता नहीं (विचलित नहीं होता)। ब्रह्मज्ञानी की ऊंची आत्मिक अवस्था कभी विनिष्ट नहीं होती अर्थात् ब्रह्मज्ञानी अमर हो जाता है। ब्रह्मज्ञानी के हृदय-घर में विनम्रता कूट-कूटकर भरी होती है। ब्रह्मज्ञानी को परोपकार करने का हमेशा चाव चढ़ा रहता है। ब्रह्मज्ञानी का हृदय माया के धंधों में गलतान नहीं होता अर्थात् उसका मन माया के जंजाल में लिप्त नहीं होता, क्योंकि उसने चंचल मन को काबू कर मायिक विकारों की ओर दौड़ने से रोक लिया होता है। ब्रह्मज्ञानी परमेश्वर की रज़ा में हमेशा राज़ी रहता है। जो कुछ ईश्वर करता है उसमें चित्त को प्रसन्न रखना ब्रह्मज्ञानी का स्वभाव बन जाता है। इस कारण ब्रह्मज्ञानी का जीवन-मनोरथ सफल हो जाता है। ब्रह्मज्ञानी का उद्यम श्रेष्ठ फलदायक होता है। ब्रह्मज्ञानी की संगत सबका उद्धार करने वाली होती है, क्योंकि उसके सहारे सबका बेड़ा पार हो जाता है। अंतिम पंक्ति में श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि सारा संसार ब्रह्मज्ञानी की उपमा करता है। कुछ चिंतकों ने इस पंक्ति का अर्थ इस प्रकार भी किया है कि ब्रह्मज्ञानी की बदौलत सारी दुनिया परमेश्वर के नाम का जाप करने लगती है।

सारा संसार दुनियावी पदार्थों एवं सम्बंधों की आशाओं में लिप्त है, जबकि ब्रह्मज्ञानी केवल एक अकाल पुरख पर विश्वास कायम रखता है। जहां सारा संसार स्वार्थ के कारण मोह-माया की दलदल में धंसा जा रहा है वहीं ब्रह्मज्ञानी निःस्वार्थ-भाव से परोपकार हेतु तत्पर रहता है। दया, धर्म, प्रेम, दानशीलता एवं विशुद्ध परोपकार

(शेष पृष्ठ ५० पर)

गुर सिखी बारीक है . . . १८

-डॉ सत्येंद्रपाल सिंघ*

जब गुरसिक्ख अपने 'स्व' को मिटाने, दुविधा को दूर करने में सफल हो जाता है और अपनी सोच, आस्था को समग्र रूप से परमात्मा पर टिका देता है तो उसके मन में उत्पन्न हुआ परमात्मा के प्रति प्रेम दिनो-दिन बढ़ने लगता है, निखरने लगता है। उसका प्रेम दृढ़ और व्यापक होता जाता है। संसार में भिन्न प्रकार के प्रेम देखने को मिलते हैं किंतु गुरसिक्ख का प्रेम इन सबसे श्रेष्ठ होता है :

चंद चकोर परीत है लाइ तार निहाले।
चकवी सूरज हेत है मिलि होनि सुखाले।
नेहु कवल जल जाणीऐ खिड़ि मुह वेखाले।
मोर बबीहे बोलदे वेखि बदल काले।
नारि भतार पिआरु है मां पुत सम्हाले।
पीर मुरीदा पिरहड़ी उहु निबहै नाले।

(वार २७:४)

भाई गुरदास जी कहते हैं कि चकोर पक्षी की चंद्रमा से ऐसी प्रीति है कि वह उसे निरंतर निहारता रहता है, थकता नहीं। इसी तरह चकवी सूर्य के उदय होने पर ही चकवे के साथ मिलकर सुख प्राप्त करती है। कमल का फूल जल में खिलता है और बिना जल के मुरझा जाता है। संसार में पत्नी के पति से और मां के अपने पुत्र से प्रेम के भी आदर्श उदाहरण हैं, किंतु प्रेम का जो भाव परमात्मा के प्रति एक गुरसिक्ख के मन में होता है वह इन सबसे अलग है। चंद्रमा के निकलने पर चकोर उससे अपनी प्रीति प्रकट करता है। सूर्य उदय होने पर चकवी को सुख की कामना होती है। पानी के होने पर कमल खिलता है। काले बादलों के घिर आने पर मोर और बबीहा चहकते हैं। पति और पुत्र हैं तो पत्नी और मां का प्रेम है। इन सबमें दो स्थितियां विद्यमान हैं। एक है, जिससे प्रेम है, उसका प्रत्यक्ष होना और दूसरी स्थिति है, इस प्रेम से सुख प्राप्त करना। परमात्मा के प्रति सच्चे प्रेम में न तो परमात्मा प्रत्यक्ष है और न ही इस प्रेम में कोई कामना है। ऐसा प्रेम चिरजीवी और अंत तक सहायक है।

श्री गुरु अमरदास जी के समय में एक सच्चे सिक्ख भाई प्रेमा जी थे जो तलवंडी में रहते थे। वे श्री गुरु अमरदास जी के अथाह प्रेम में लीन थे और इस प्रेम के वशीभूत होकर वे प्रतिदिन गुरु साहिब के लिए एक घड़े में दूध भरकर ले जाया करते थे। भाई प्रेमा जी का यह संकल्प बिना किसी अवरोध के चल रहा था। उनके लाये दूध से कुछ दूध गुरु साहिब स्वयं ग्रहण करते और शेष दूध संगत में बांट दिया जाता था।

भाई प्रेमा जी पैरों से विकलांग थे और लकड़ी की बैसाखी के सहारे चला करते थे। एक दिन बहुत बरसात हुई और राह में कीचड़ हो गया, जिससे निकलना मुश्किल था। गांव वाले रोज भाई प्रेमा जी को घड़े में दूध लेकर जाते देखा करते थे। गांव के चौधरी और अन्य लोगों ने इतने कीचड़ भरे रास्ते पर उन्हें जाने से रोकने का प्रयास किया किंतु वे नहीं माने। कुछ लोगों ने भाई प्रेमा जी की बैसाखी छीन ली और कहा, "यदि तुम अपने गुरु से इतना प्रेम करते हो और यदि तुम्हारे गुरु इतने समर्थ हैं तो तुम्हारी टांगें पूरी क्यों नहीं कर देते।" भाई प्रेमा जी ने गांव वालों को जो उत्तर दिया उससे गांव वालों के मुंह

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३

तो बंद हुए ही, परमात्मा के प्रेम की राह में एक मिसाल भी बन गया। उन्होंने कहा कि "मैं गुरसिक्ख इसलिए नहीं बना कि मेरी टांगें ठीक हो जायें और न ही मैंने कभी गुरु साहिब से इसके लिए कहा है।" गांव वाले कुछ समय तक भाई प्रेमा जी को परेशान करते रहे किंतु जब भाई प्रेमा जी अपने संकल्प पर दृढ़ रहे तो गांव वालों ने बैसाखी उन्हें वापिस कर दी। भाई प्रेमा जी अविलंब अपने गन्तव्य की ओर चल पड़े।

जब वे श्री गुरु अमरदास जी के पास आये तो गुरु साहिब ने उन्हें एक मुसलिम फकीर हुसैनी शाह के पास जाने को कहा। पीर हुसैनी शाह अकेले रहते थे और किसी को अपने पास नहीं आने देते थे। जब भाई प्रेमा जी ने जाकर कहा कि गुरु जी ने उसे उनके पास आने को कहा है तो हुसैनी शाह ने उन्हें अपने पास बैठा लिया। भाई प्रेमा जी ने हुसैनी शाह को पूरी बात बताई। इसके पश्चात हुसैनी शाह ने जैसे ही भाई प्रेमा जी को मारने के ध्येय से छड़ी उठाई, जैसा कि वे आगंतुक के साथ करते थे, भाई प्रेमा जी उठकर दौड़ पड़े। दौड़ते-दौड़ते उन्हें एकाएक आश्चर्य हुआ कि वे तो (लड़खड़ाते हुए) अपने पैरों पर दौड़ रहे हैं। वे ठहर गये और वापिस हुसैनी शाह के पास लौटकर दंडवत् हो गये और आभार प्रकट करने लगे। हुसैनी शाह ने कहा कि उसकी टांगें तो उसी समय ठीक हो गयी थीं जब गुरु जी ने उसे मेरे पास आने को कहा था। गुरु साहिब ने भाई प्रेमा जी की टांगें ठीक होने का श्रेय हुसैनी शाह को दे दिया। यह है गुरु के प्रति प्रेम। इसी प्रेम में उत्पन्न हुई श्रद्धा व गुरु-कृपा से शारीरिक दुख भी महसूस नहीं होते।

उपरोक्त घटना से परमात्मा-प्रेम की विलक्षणता को समझने में सहायता मिल सकती है। एक गुरसिक्ख जब परमात्मा से प्रेम करता है तो उस प्रेम में कोई शर्त या अनुबंध नहीं होता। यह प्रेम अपेक्षाओं, अभिलाषाओं, प्रत्याशा और किसी भी दशा से मुक्त शुद्ध प्रेम होता है। इस प्रेम के निर्वाह में हर किसी बाधा को पार करने का संकल्प होता है। गुरसिक्ख बस, प्रेम की बात सोचता है, अन्य किसी ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता :

प्रिअ की प्रीति पिआरी ॥
मगन मनै महि चितवउ आसा नैनहु तार तुहारी ॥रहाउ॥
ओइ दिन पहर मूरत पल कैसे ओइ पल घरी किहारी ॥
खूले कपट धपट बुझि त्रिसना जीवउ पेखि दरसारी ॥
(पन्ना ११२०)

एक गुरसिक्ख भाई प्रेमा जी की तरह प्रेम में ही मग्न रहता है कि उसे अपने सुख-दुख, अपनी जरूरतें याद ही नहीं रहती। वह तो उस दिन, उस पहर और उस घड़ी की प्रतीक्षा में रहता है, जब कपाट खुलें और झटपट परमात्मा के दर्शन हो जायें तथा सारी तृष्णाएं शांत हो जायें। भाई प्रेमा जी, क्योंकि गुरु की ओर उन्मुख हो गये, इसलिये उन्हें अपनी व्यथाएं भूल गयीं। उन्होंने अपने स्व का त्याग कर दिया था, इसलिये अपने लिये कोई मांग रही ही नहीं। वे जब दूध का घड़ा श्री गुरु अमरदास जी तक पहुंचा देते तो प्राप्त होने वाला आनंद सारी पीड़ा को हर लेता :

अपुने ठाकुर की हउ चेरी ॥
चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ॥१॥रहाउ॥
पूरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥
मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे ॥१॥
मनमुख हीन होछी मति झूठी मनि तनि पीर सरीरे ॥
जब की राम रंगीलै राती राम जपत मन धीरे ॥२॥ *(पन्ना ११९७)*

गुरमुख जब परमात्मा के मार्ग पर चल पड़ता है तो उसका अहम् मिटने लगता है और परमेश्वर उसके जीवन का आधार बनने लगता है। परमात्मा की महानता उसके सामने स्पष्ट होने लगती है। वह परमात्मा के प्रेम में ऐसा रम

जाता है कि उसके मन को धैर्य तभी आता है जह वह परमात्मा का नाम जपता है अर्थात् माया के सुख उसे छलावा लगने लगते हैं। वह समझने लगता है कि सच्चा सुख किस में है। माया के सुख तो आज हैं कल नहीं, किंतु परमात्मा-प्रेम का सुख कभी भी जाने वाला नहीं है :

हरि रसु पीवत सद ही राता ॥
आन रसा खिन महि लहि जाता ॥
हरि रस के माते मनि सदा अनंद ॥
आन रसा महि विआपै चिंद ॥१॥
हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा ॥
आन रसा सभि होछे रे ॥ *(पन्ना ३७७)*

गुरसिक्ख परमात्मा-प्रेम में अलमस्त हो जाता है जिसके आगे उसे कुछ भी नहीं सूझता। भाई प्रेमा जी को जो रस श्री गुरु अमरदास जी के चरणों में दूध भरा घड़ा अर्पित करके मिलता था उसके आगे वे पानी और कीचड़ से भरे रास्ते की सारी कठिनाइयों और अपनी शारीरिक विकलांगता को भूल गये थे। अपने शरीर के ठीक होने में उनकी रुचि नहीं थी। उनको रस था गुरु साहिब व संगत को दूध छकाने में, गुरु साहिब और संगत की सेवा करने में।

जिसने परमात्मा में मन को लगा लिया उसे शेष सारी चीजें व्यर्थ लगने लगती हैं। गुरमुख को सुहाता है तो वह पल, जिसमें वह परमात्मा का ध्यान कर रहा होता है :

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए ॥
कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए ॥१॥रहाउ॥
अनदु गरीबी साधसंगि जितु प्रभ चिति आए ॥
जलि जाउ एहु बडपना माइआ लपटाए ॥१॥
पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु संतोखाए ॥
ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह त्रिपताए ॥
(पन्ना ७४५)

वह साधारण-सा स्थान भला है जहां परमात्मा के गुण गाये जा रहे हैं। एक ऐसा उच्च सुशोभित स्थान गुरसिक्ख के लिये कोई अर्थ नहीं रखता, जहां जाकर परमात्मा विस्मृत हो जाये। समाज में ऐसी ऊंची पदवी और स्थान से वह दूर रहता है जो उसे माया-मोह से जोड़ते हैं। इसके स्थान पर वह ऐसे स्थान को प्राथमिकता देता है जिसमें उसका चित्त परमात्मा से जुड़ा रहे। परमात्मा का प्रेम गुरसिक्ख के शरीर के नष्ट होने के बाद भी साथ जाता है जो यत्न से संजोया गया है, जबकि माया में उलझे हुए मनुष्य की सारी माया यहीं रह जाती है और वह एक सुई भी साथ नहीं ले जा पाता।

'श्री गुरू नानक प्रकाश' में भाई संतोख सिंघ जी ने एक साखी का उल्लेख किया है कि जब श्री गुरु नानक साहिब लाहौर पहुंचे तो वहां उनके दर्शन करने के लिए एक धनवान दुनीचंद आया। पितरों के श्राद्ध आदि के बारे में उसके भ्रम दूर करते हुए गुरु साहिब ने उसे एक सुई देते हुए कहा कि इसे संभालकर रख लो और जब परलोक में मिलोगे तो वापिस कर देना। सुई लेकर घर आने के बाद जब उसकी समझ में आया कि वह सुई लेकर परलोक कैसे जा सकता है तो वह गुरु साहिब की शरण में गया और बोला कि महाराज आपका यह आदेश मैं नहीं मान सकता। मैं सुई कैसे परलोक ले जा सकता हूं। गुरु साहिब ने कृपा करके दुनीचंद की शंकाओं का निवारण करते हुए बहुत ही महत्त्वपूर्ण उपदेश दिया जो सामान्य बुद्धि भी समझ सके। उन्होंने कहा कि "धन, परिवार और कर्म इन तीनों को जीव अपना मित्र मानता है। जब तक शरीर में श्वास रहते हैं धन उसका मित्र रहता है। श्वास जाते हैं उस धन को कोई और संभाल लेता है, जिसे कई प्रकार के भले-बुरे कर्म करके जीव ने एकत्र किया होता है। शरीर के चिता पर जल जाने तक परिवार के लोग उसके साथ रहते हैं। तन स्वाह हो जाने पर वे सारे लोग उसे छोड़कर घर आ जाते हैं जिनसे उसने जीवन भर प्रेम किया होता है। कर्म ही ऐसे मित्र हैं जो मरने के बाद भी आगे तक साथ जाते हैं और उन्हीं अच्छे-बुरे कर्मों के

अनुसार फल प्राप्त होते हैं।"

गुरसिक्ख जानता है कि उसका सच्चा और आगे तक सहायक होने वाला मित्र परमात्मा के प्रेम का भाव ही है जिसे उसने अपने मन में धारण करके रखा है और जिसके वश में उसे भले कर्म करके अपने जीवन का उद्धार करना है। वह अपने जीवन के पल-पल का उपयोग धन संचित करने में नहीं परमात्मा के प्रति अनुराग को बढ़ाने में करता है :

सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह ॥
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ॥
बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरि तनु खेह ॥१॥
मेरे मन लै लाहा घरि जाहि ॥
गुरमुखि नामु सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि ॥
(पन्ना २०)

यह जीवन माया-मोह में फंसकर व्यर्थ गंवाने के लिए नहीं, परमात्मा से मिलन के लिए मिला है। इस शरीर और शरीर से जुड़ी चीजों की चिंता करना व्यर्थ है, क्योंकि यह शरीर एक दिन स्वाह हो जाने वाला है और सब कुछ नष्ट हो जाने वाला है, छूट जाने वाला है, सिवाय उन कर्मों के जो हमने किये हैं। सच्चा गुरमुख परमात्मा के प्रेम में रमकर सद्गुणों और सद्कर्मों को संजोता है और अपनी मति को त्याग कर गुरु की मति को अपनाता है। वह इस जीवन को व्यर्थ नहीं जाने देता और इसका भरपूर सदुपयोग प्रेम से परमात्मा को पाने और आवागमन के फेर से मुक्त हो जाने के लिये करता है, ताकि वह चिर आनंद में लीन हो जाये।

सूहटु पिंजरि प्रेम कै बोलै बोलणहारु ॥
सचु चुगै अंम्रितु पीऐ उडै त एका वार ॥
गुरि मिलिऐ खसमु पछाणीऐ कहु नानक मोख दुआरु ॥
(पन्ना १०१०)

गुरसिक्ख इस शरीर को पिंजरे की तरह जानता है और सदा प्रेम की भाषा ही बोलता है तोते की रटंत की तरह अर्थात् सदा परमात्मा-प्रेम में लीन रहता है। जब वह इस पिंजरे से आज़ाद होता है तो फिर कभी भी वापिस न आने के लिए अर्थात् मुक्त हो जाने के लिये यत्न करता है। परमात्मा-प्रेम ही मोक्ष दिलाता है।



सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

(पृष्ठ ४६ का शेष)

की भावना के कारण ब्रह्मज्ञानी द्वारा दर्शाए मार्ग पर चलने वाले जीव भी इस भवसागर से सहजता से पार उतर जाते हैं, जैसा कि अन्यत्र भी बाणी में संदेश है :

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥ *(पन्ना ७४९)*

इसके विपरीत जहां साधारण संसारी जीव व्यर्थ के कर्मों में पड़कर अपने लिए आवागमन के फंदे तैयार कर लेता है वहीं ब्रह्मज्ञानी परोपकारी जीवन व त्याग-प्रेम के कारण ईश्वर का ही होकर रहता है, समस्त स्वार्थों से ऊपर उठकर *"मनि जीतै जगु जीतु"* के पावन सिद्धांत को अमली जामा पहना देता है।

गुरबाणी आशयानुसार पंचम पातशाह की पावन बाणी से दिशा-निर्देश लेकर आओ, हम कलयुगी जीव भी श्रद्धा-भावना से अकाल पुरख के चरणों में तहे दिल से पुकार करें :

दीन दइआल क्रिपाल प्रभ सुआमी तेरी सरणि दइआला ॥
करि किरपा अपना नामु दीजै नानक साध रवाला ॥ *(पन्ना ७५०)*



शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : १

स. सुंदर सिंघ मजीठीआ

*-स. रूप सिंघ**

स. सुंदर सिंघ मजीठीआ का जन्म १७ फरवरी, १८७२ ई को कसबा मजीठा, जिला श्री अमृतसर में खालसा राज्य के सम्मानित फौजी कमांडर राजा सूरत सिंघ के घर हुआ। महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य-काल के समय इनके दादा स. अतर सिंघ को जागीर प्राप्त हुई। स. अतर सिंघ की शहादत रणक्षेत्र में होने के बाद उनके सपुत्र राजा सूरत सिंघ को पेशावर का कमांडर नियुक्त किया गया।

स. सुंदर सिंघ दो भाई थे। इनके बड़े भाई का नाम स. उमराओ सिंघ था, जो विश्व-प्रसिद्ध चित्रकार अंम्रिता शेरगिल के पिता थे। १८७५ ई. में इनकी माता का देहांत हो गया और ६ वर्ष बाद इनके पिता भी परलोक गमन कर गए। माता-पिता के सदा के विछोड़े का इनके बचपन पर गहरा प्रभाव पड़ा। हाई स्कूल लाहौर से उत्तीर्ण करने के बाद आप उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिए सरकारी कालेज, लाहौर में दाखिल हुए, मगर स्नातक पूरी करने से पूर्व ही इन्हें कालेज छोड़ना पड़ा। कालेज की पढ़ाई के दौरान ही इनको फोटोग्राफी में गहरी दिलचस्पी पैदा हो गई और यह दिलचस्पी जीवन भर इनका शौक बनी रही।

१८८९ ई में १७ वर्ष की भरी जवानी में स. सुंदर सिंघ अमृत छककर गुरु-परिवार के सदस्य बन गए, जिससे गुरबाणी-सम्मान एवं पंथक प्यार की लगन इन्हें लग गई। इनका अनंद कारज स. बिकरम सिंघ फरीदकोट की सपुत्री के साथ हुआ, मगर १८८८ ई में ही उसका देहावसान हो गया। १८८९ ई में इनका दूसरा विवाह सरदारनी प्रसिंन कौर सपुत्री स. अतर सिंघ पटियाला के साथ हुआ। इनके पांच सपुत्र थे-- स. किरपाल सिंघ, स. नरैण सिंघ, स. सुरिंदर सिंघ, स. भगवान सिंघ तथा स. सुरजीत सिंघ।

स. सुंदर सिंघ मजीठीआ के जीवन-संग्राम तथा उनके धार्मिक-सामाजिक-राजनैतिक क्षेत्र में दिए गए योगदान को संक्षेप में देखा जा सकता है।

१८९२ ई. में स. सुंदर सिंघ मजीठीआ समाज-सेवा में कूद पड़े। खालसा कालेज, श्री अमृतसर की स्थापना में इनका विलक्षण योगदान था। ये १८९४ ई. में श्री गुरु सिंघ सभा, श्री अमृतसर के सचिव निर्वाचित हुए। २० अक्तूबर, १९०२ ई. में चीफ़ खालसा दीवान, श्री अमृतसर अस्तित्व में आया तो आप जी इसके भी (पहले) सचिव बने और निरंतर १९३० ई. तक यह जिम्मेदारी निभाते रहे। १९०२ ई. में ही खालसा कालेज प्रबंधक कमेटी के सचिव बने और १९१२ ई. तक यह सेवा करते रहे। १९०४ ई. में आपके उद्यम से चीफ खालसा दीवान द्वारा सेंट्रल खालसा यतीमखाना स्थापित किया गया, जिसने समाज-भलाई में ऐतिहासिक योगदान डाला। १९०८ ई. में पंजाब एण्ड सिंध बैंक के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्ज के चेयरमैन बने। २२ अक्तूबर, १९०८ ई. को इनके प्रयत्नों का सदका 'अनंद मैरिज एक्ट' पास हुआ।

१९०९ ई से १९१४ ई और फिर १९१८ ई तक ये सदस्य गवर्नर जनरल कौंसिल रहे।

**निर्देशक, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ९८१४६-३७९७९*

१९११ ई को इनको अंग्रेजों ने 'सरदार बहादर' का खिताब दिया। १९२०-१९४१ ई तक ये खालसा कॉलेज गवर्निंग कौंसिल के चेयरमैन रहे। १९२०-१९२२ ई तक गुरुद्वारा करतापुर साहिब की सेवा-संभाल करवाई। १९२१-१९२६ ई. तक ये पंजाब सरकार के राजस्व मंत्री रहे।

स. सुंदर सिंघ मजीठीआ १५ नवंबर, १९२० ई. को सिक्खों की शिरोमणि संस्था-- शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के सर्वसम्मति से पहले अध्यक्ष निर्वाचित हुए, मगर १४ अगस्त, १९२१ ई को इन्होंने अध्यक्ष पद से त्याग-पत्र दे दिया। १९३६ ई में खालसा सेंट्रल पार्टी बनी। १९३७-१९४१ ई तक सरदार साहिब फिर पंजाब के राजस्व मंत्री रहे। २ अप्रैल, १९४१ ई. को स. सुंदर सिंघ मजीठीआ परलोक गमन कर गए।

सिक्ख राज्य का सूर्य अस्त हो जाने के बाद १५ नवंबर, १९२० ई को श्री अकाल तख़्त साहिब पर सिक्खों का प्रथम प्रतिनिधि सम्मेलन हुआ। प्रतिनिधि सम्मेलन में प्रतिनिधता देने के लिए देश भर में से गुरुद्वारा साहिबान, तख़्त साहिबान, सिंघ सभाओं, स्कूलों-कालेजों, चीफ खालसा दीवान, धार्मिक संस्थाओं, टकसालों, निहंग जत्थेबंदियों आदि को बुलाया गया। अंग्रेज सरकार की इच्छा थी कि सिक्ख-शक्ति किसी भी तरह जत्थेबंदक रूप धारण न कर सके, इसलिए उन्होंने प्रतिनिधि सम्मेलन से पूर्व ही ३६ सदस्यीय कमेटी गुरुद्वारा साहिबान के मसले को हल करने के लिए बना दी, जिसमें स. सुंदर सिंघ मजीठीआ का नाम भी शामिल था। दूरदर्शी-सूझवान सिक्खों की सोच का सदका प्रतिनिधि सम्मेलन निश्चित समय पर हुआ और १७५-सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया, जिसका नाम 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर' रखा गया। सिक्ख शक्ति की एकता तथा जत्थेबंदक स्वरूप को बनाए रखने के लिए सरकार द्वारा नामज़द ३६-सदस्यीय कमेटी को भी इसमें शामिल कर लिया गया। कुछ सिक्खों ने विरोध किया कि सरकार द्वारा नामज़द कमेटी के सदस्य अंग्रेजों के भक्त हैं, मगर पंथक-शक्ति की एकता व अहम हितों को सम्मुख रखते हुए सब ने फैसले को स्वीकार कर लिया।

अप्रैल, १९१९ ई. में सिक्खों में अशांति फैलाने के लिए अफवाह फैला दी गई कि किसी शरारती धोखेबाज ने श्री हरिमंदर साहिब में बंब रख दिया है। यह अफवाह उड़ती-उड़ती सिक्ख बैरकों में भी पहुंच गई। स. सुंदर सिंघ मजीठीआ ने इसके खंडन के लिए तारें दीं और चीफ खालसा दीवान के माध्यम से खालसा बरादरी (बिरादरी) के अधिकारियों से मिलकर इसके अधिकारिक खंडन के लिए कहा।

खालसा बरादरी, श्री अमृतसर द्वारा १२ अक्तूबर, १९२० ई को जलियांवाला बाग में वार्षिक एकत्रता बुलाई गई जिसमें स. सुंदर सिंघ मजीठीआ भी शामिल थे। खालसा कालेज के प्रोफेसर तथा विद्यार्थी भी इसमें भारी संख्या में उपस्थित थे। खालसा बरादरी ने एकत्र संगत के लिए लंगर तैयार किया और पंगत में बैठकर स. सुंदर सिंघ मजीठीआ तथा समूह संगत ने छका। सरदार साहिब खालसा बरादरी वालों के साथ श्री दरबार साहिब तथा श्री अकाल तख़्त साहिब पर उपस्थित हुए। स. तेजा सिंघ चूहड़काणा तथा स. करतार सिंघ झब्बर भी परिक्रमा में ही थे। थोड़ी नोकझोक के बाद पुजारी श्री दरबार साहिब में खालसा बरादरी द्वारा तैयार किया कड़ाह प्रसादि भेंट करने के लिए तैयार हो गए। कड़ाह प्रसादि की स्वीकृति की अरदास स. सुंदर सिंघ मजीठीआ ने की।

भरे दीवान में पांच प्यारों के सम्मुख स. सुंदर सिंघ मजीठीआ ने खुद खड़े होकर कहा,

"मैंने अब तक जो कुछ किया है गुरु को हाज़िर-नाज़िर जान कर किया है। पंथ के भले के लिए अपनी योग्यता के अनुसार किया है। मैंने कोई निजी स्वार्थ के लिए नहीं किया। यदि मैंने कोई भूल की है तो गुरु-पंथ बखशिंद (बख़्शने योग्य) है।"

पांच प्यारों की आज्ञा का पालन करते हुए स. सुंदर सिंघ मजीठीआ ने *"हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही . . ."* शबद पढ़ते हुए, नम्रता सहित संगत को निश्चय करवाया कि "उन्होंने जानबूझ कर गुरु-पंथ की अवज्ञा कभी नहीं की और न ही भविष्य में करेंगे।" संगत ने गुरु-पंथ का सदा बख़्श देने वाला कर्त्तव्य-पालन करते हुए उनको क्षमा ही नहीं किया बल्कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर का प्रथम अध्यक्ष होने का मान-सम्मान भी बख़्शिश कर दिया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अस्तित्व में आने पर पहला चुनाव होने से सिक्ख जत्थेबंदक शक्ति स्थापित हो गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के निर्णय पंथक निर्णय माने जाने लगे चाहे कि यह बात न उस समय सरकार-भक्तों को भाती थी और न ही आज।

१६ नवंबर, १९२० ई को स. सुंदर सिंघ मजीठीआ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष चुने गए और १४ अगस्त, १९२१ ई. को इन्होंने इस प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय पद से त्याग-पत्र दे दिया। स. सुंदर सिंघ मजीठीआ ज्यादा समय तक गुरु-पंथ की इस नामवर संस्था के अध्यक्ष नहीं रहे, मगर उनके कार्यकाल के दौरान कई ऐतिहासिक निर्णय हुए और कुछ ऐतिहासिक साके भी घटित हुए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अस्तित्व में आने से गुरुद्वारा प्रबंध में हर पक्ष से सुधार लाने के लिए प्रयत्न शुरू हुए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सूझवान निष्काम नेताओं ने देखा कि महंतों-पुजारियों तथा सरकार-भक्तों के साथ लंबी लड़ाई लड़ने के लिए समूह सिक्ख समाज को जागृत तथा जत्थेबंद करना पड़ेगा। इस आवश्यकता को सम्मुख रखते हुए सामाजिक, राजनैतिक शक्ति को केंद्रित करने तथा गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर को धार्मिक लहर बनाने के लिए निष्काम सिक्खों की दूसरी प्रतिनिधि जत्थेबंदी शिरोमणि अकाली दल की स्थापना १४ दिसंबर, १९२० ई को की गई। संस्थाओं की सृजना में अगुआ व्यक्तियों को सिर-धड़ की बाजी लगानी पड़ती है। हर संस्था का अपना इतिहास तथा विचारधारा होती है। यह उचित है कि किसी भी संस्था में गलत व्यक्ति शामिल हो जाएं तो वे संस्थाएं बदनाम हो जाती हैं, मगर हर संस्था के पास उसकी मीरास होती है। संस्थाएं संगती प्रबंध को रूपमान करती हैं। यदि व्यक्ति-विशेष प्रमुख हो जाए तो संस्थाओं में भी संगती युक्ति फेल हो जाती है।

स. मजीठीआ का समूह जीवन पढ़ते हुए एक बात स्पष्ट है कि उनका जीवन सिक्ख-सिद्धांतों तथा सिक्ख-विचारधारा को समर्पित था। सिक्खी जज़्बे तथा भावनाओं का सदका ही सिक्ख पंथ की प्रमुख संस्थाएं उनके समय में अस्तित्व में आईं, जैसे चीफ़ खालसा दीवान, खालसा कालेज, श्री अमृतसर, सेंट्रल खालसा यतीमखाना, पंजाब एण्ड सिंध बैंक, वृद्धाश्रम तथा शिरोमणि अकाली दल आदि। इन संस्थाओं का प्रभाव सिक्ख समाज, धर्म, राजनीति तथा पिछली सदी से निरंतर देखा जा सकता है।

स. मजीठीआ के अध्यक्ष-काल में २० फरवरी, १९२१ ई. को ननकाणा साहिब का दुखदायक साका घटित हो गया। २१ फरवरी, १९२१ ई. को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने गुरुद्वारा ननकाणा साहिब का प्रबंध संभाल लिया। अंग्रेज हाकिम भी महंतों एवं पुजारियों की समाज-विरोधी तथा धर्म-विरोधी कार्यवाहियों से सुचेत

हो गए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा महंतों के झगड़े को निपटाने के लिए इस समय १४ मार्च, १९२१ ई को पंजाब सरकार ने विधान सभा में कमिशन गठित किया। इस निर्णय सम्बंधी नामजद सदस्य मनपत राय ने सलाह दी कि पांच ग़ैर-सरकारी सदस्य शामिल किए जाएं। उसने सिक्खों के चार संप्रदायों के बारे में बात की। उसने यहां तक सुझाव दे दिया कि हिंदू तथा मुसलमान को भी कमिशन में शामिल करना चाहिए।

इसके उत्तर में स. सुंदर सिंघ मजीठीआ ने स्पष्ट किया कि गुरुद्वारा गुरु से सम्बंधित स्थान है। गुरुद्वारे में सबको आने का अधिकार है, मगर इसके प्रबंधक सिक्ख ही हो सकते हैं। गुरुद्वारों की मिलकियत संगती है न कि किसी महंत-पुजारी की, मगर महंतों ने गुरुद्वारों की जायदादों को अपने निजी स्वार्थों के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है और अनैतिक कार्य भी किए जाते हैं। स. मजीठीआ ने सिक्खों की किसी तरह की बांट को मूलत: अस्वीकार करते हुए सरकार द्वारा गठित किए जा रहे कमिशन का समर्थन किया। यह प्रस्ताव पंजाब विधान सभा में उसी दिन पारित हो गया। इसको पारित करवाने में स. सुंदर सिंघ मजीठीआ, सदस्य पंजाब कौंसिल का विशेष हाथ था जो उस समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष भी थे।

२० मार्च, १९२१ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की एकत्रता में सिक्ख कैदियों की रिहाई की मांग की गई और यदि सरकार १० अप्रैल, १९२१ ई. तक इनकी रिहाई और कमिशन का गठन नहीं करती तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्ख गुरुद्वारों का प्रबंध करने के लिए खुद नियम तैयार करेगी। सिक्ख गुरुद्वारा बिल हाऊस में ५ अप्रैल, १९२१ ई. को दाखिल कर दिया गया। फिर बिल अधिक विचार के लिए निर्वाचित कमेटी में भेजा गया, जिसमें स. सुंदर सिंघ मजीठीआ सदस्य थे।

जैतो का मोर्चा को हल करवाने में भी स. मजीठीआ ने अग्रिम भूमिका अदा की। स. मजीठीआ गुरुद्वारों की सेवा-संभाल सिक्खों के माध्यम से करनी/करवानी चाहते थे। उनकी सोच थी कि गुरुद्वारे हर तरह की दखलंदाजी से मुक्त हों।

३ अक्तूबर, १९२२ ई को गवर्नर पंजाब ने मीटिंग बुलाई जिसमें उच्च अधिकारी शामिल थे, जिनमें स. मजीठीआ ने गुरुद्वारा कानून बनाने में अपने सुझाव दिए। यह बिल प्रारंभिक रूप में चीफ खालसा दीवान ने ड्राफ्ट किया था, जिस पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा पंजाब कौंसिल ने विचार किया। इस बिल का नाम 'सिक्ख गुरुद्वारा एण्ड शराईन बिल-१९२५' था, जो २५ अप्रैल, १९२५ ई को प्रकाशित किया गया। फिर यह बिल सलेक्ट कमेटी के पास भेजा गया, जिसके सदस्य मजीठीआ साहिब थे। सुझाव तथा राय के अनुसार यह बिल दोबारा प्रकाशित किया गया।

सेंट्रल असेंबली की मीटिंग शिमला में हुई। १५ सितंबर, १९२५ ई. की मीटिंग में बिल को पूरा किया गया। भारत के गवर्नर जनरल की स्वीकृति से 'सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट-१९२५' पास हो गया।

स. मजीठीआ ने सुझाव दिया कि सिक्ख ट्रिब्यूनल की कार्यवाही पंजाबी में हो।

चाहे स. सुंदर सिंघ मजीठीआ को सरकार का वफादार माना जाता था, पर उन्होंने गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर तथा गुरुद्वारा कानून बनाने में प्रशंसनीय ऐतिहासिक योगदान दिया। उनकी सिक्खी के प्रति समर्पण-भावना एक मिसाल थी।



ख़बरनामा

गुजरात सरकार सिक्खों को मान-सत्कार दे : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १ सितंबर : गुजरात के जामनगर स्थित ई एस. एस. ए. आर. तेल-शोधक कारखाने में काम करते लगभग ३०० अमृतधारी सिक्खों को कृपाण धारण कर कारखाने में आने पर लगाई पाबंदी का जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सख्त नोटिस लेते हुए इसको अल्पसंख्यकों के साथ धक्का तथा गुजरात सरकार का नादिरशाही फरमान बताया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि प्रत्येक अमृतधारी सिक्ख के लिए कृपाण धारण करना आवश्यक है और इसे शरीर से किसी भी कीमत पर अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि गुजरात सरकार को चाहिए कि वो अपने उस नादिरशाही फरमान को शीघ्र वापिस ले जिसमें उसने कारखाने में काम करने वाले अमृतधारी सिक्खों को कृपाण न पहन कर आने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि यदि गुजरात सरकार ऐसा नहीं करती तो उसे देश-विदेश में बैठे सिक्ख भाईचारे की भारी विरोधता का सामना करना पड़ सकता है। उन्होंने कहा कि भारत बहु-धर्मी देश है और देश के संविधान के अनुसार प्रत्येक वर्ग अपने-अपने धर्म एवं रीति-रिवाजों के अनुसार जीने का अधिकार रखता है। उन्होंने बताया कि देश की आजादी में सबसे ज्यादा कुर्बानियां सिक्खों ने की हैं, मगर अब कुछ सरकारें या संस्थाएं अपने ही देश में कोई न कोई बहाना बनाकर बिना वजह सिक्ख भाईचारे को तंग-परेशान कर रही हैं, जो कि घोर अन्याय है।

पंजाब सरकार द्वारा गुटखा, पान-मसाला पर पाबंदी लगाना प्रशंसनीय

श्री अमृतसर : २८ अगस्त : पंजाब सरकार ने राज्य के लोगों के स्वास्थ्य के प्रति संजीदा होते हुए पंजाब भर में गुटखा, पान-मसाला रखने व बेचने पर जो पाबंदी लगाई है वो वाकई प्रशंसनीय कार्य है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पंजाब सरकार के इस निर्णय का स्वागत करती है।

जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने पंजाब के मुख्यमंत्री स. प्रकाश सिंघ बादल का विशेष रूप से धन्यवाद करते हुए कहा कि गुटखा, पान-मसाला जैसे मादक पदार्थों के सेवन से छाती रोग, कैंसर जैसी भयानक बीमारियों में दिनोदिन बढ़ोत्तरी हो रही है। गुटखा, पान-मसाला

रखने व बेचने पर पाबंदी लगाने से इन नामुराद बीमारियों के फैलने में काफी हद तक अवश्य रोकथाम हो सकेगी। उन्होंने पंजाब के मेहनती लोगों से अपील की कि वे पंजाब सरकार द्वारा लोक-कल्याण हेतु लिए इस निर्णय का अधिक से अधिक समर्थन करें और इस आदेश को लागू करने-करवाने में सरकार का साथ दें।

स्कूल प्रबंधकों द्वारा सिक्ख बच्चों के केश काटना शर्मनाक कार्यवाही

श्री अमृतसर : ३१ अगस्त : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कर्नाटक की राजधानी बंगलौर में एक स्कूल के प्रबंधकों द्वारा कक्षा ११ में पढ़ते चार सिक्ख बच्चों के नाटकीय ढंग से केश काटे जाने का गंभीर नोटिस लेते हुए इसको शर्मनाक तथा असहनीय कार्यवाही बताया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि स्कूल प्रशासन की यह कार्यवाही सीधे रूप में सिक्खी पर हमला है। उन्होंने कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री जगदीश शेतरा से कहा है कि ऐसी घिनौनी हरकत करने वाले प्राईवेट स्कूल के प्रबंधकों के खिलाफ कार्यवाही करते हुए स्कूल की मान्यता रद्द करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अध्यापकों का काम बच्चों को आदर्श शिक्षा देकर अपना तथा स्कूल का नाम रोशन करना होता है, मगर कुछ संस्थाएं नस्ली रंगभेद के तहत सिक्ख विरोधी ताकतों की कठपुतली बनकर अपने असल कर्त्तव्यों से भटक रही हैं। यह भी ऐसी ही एक शर्मनाक घटना है जिसमें स्कूल प्रबंधकों द्वारा चार सिक्ख बच्चों के केश नाटकीय ढंग से काट दिए हैं। ऐसी घटनाओं से देश के सद्भावना भरे माहौल को खतरा पैदा हो सकता है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि स्कूल प्रबंधन की इस सांप्रदायिक कार्यवाही से देश-विदेश में बसते सिक्ख भाईचारे के हृदय को भारी ठेस पहुंची है। उन्होंने कर्नाटक के मुख्यमंत्री से रोष प्रकट करते हुए कहा कि स्कूल प्रशासन द्वारा चार सिक्ख बच्चों को कक्षा के शेष बच्चों से अलग बैठाना, उनके रोटी वाले डिब्बों की तलाशी लेना, इन बच्चों को होमवर्क न देना आदि बातें बहु-धर्मी देश के लिए अयमानजनक है। उन्होंने कहा कि यह सब कुछ सिक्ख संप्रदाय को अपमानित करने की सोची-समझी साजिश है। उन्होंने स्कूल प्रशासन के खिलाफ तुरंत कार्यवाही किए जाने की मांग की है।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१०-२०१२